विक्रम संवत् 2080 ■ आषाढ़/श्रावण/अधिमास ■ 01 जुलाई 2023 ■ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

मेरा बूथ सबसे मजबूत

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वाशिंगटन डीसी में अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने रानी कमलापति रेलवे स्टेशन (भोपाल) में वंदे भारत एक्सप्रेस में छात्र-छात्राओं के साथ बातचीत की।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने टिफिन मीटिंग में भाग लिया।

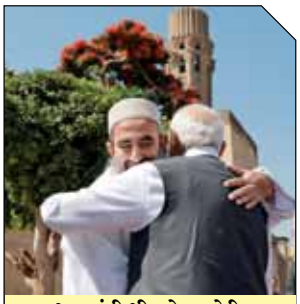

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी मिस्र के काहिरा में अल-हकीम मस्जिद गये।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने श्री वेंकटश्वर स्वामी मंदिर में पूजा-अर्चना की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिल्ली मेट्रो में लोगों से बातचीत की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में 9वें वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2023 समारोह से पहले पीस कीपिंग मेमोरियल में श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मिस्र के काहिरा में हेलियोपोलिस युद्ध स्मारक पर वीर भारतीय सैनिकों को पुष्पांजलि अर्पित की।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- सार्थक परिणाम आयेंगे

मेरा बूथ, सबसे मजबूत 05

- देश ने भाजपा सरकार की वापसी का मन बना लिया है- मोदी

- **आलेख :** 09

मोदी-बाईडेन का ऐतिहासिक मिलन एवं योग का अद्भुत संयोग -श्री विष्णु दत्त शर्मा...

- **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस :** 11

पूरी दुनिया को योग भारत की ही देन - मोदी...

- **9 साल: सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण :** 12

मोदी जी ने विकास को जमीन पर उतारा - डॉ. सहस्त्रबुद्धे...

9 वर्षों का काम 55 साल के कामकाज पर भारी है...

देश विकास के पथ पर लगातार अग्रसर

- **आपातकाल: भारत के इतिहास का काला अध्याय :** 22

संविधान का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए- दत्तात्रेय होसबाले (सरकार्यवाह)...

- **लाड़ली बहना :** 26

बहनें मजबूत होंगी - मुख्यमंत्री...

- **समृद्ध भारत का उदय :** 27

नए भारत का निर्माण हो रहा है : शिवराजसिंह चौहान...

- **सरकार की नई पहचान :** 29

रोजगार अभियान पारदर्शिता और सुशासन का प्रमाण - प्रधानमंत्री

- **तेजी से बढ़ता भारत :** 32

424 विदेशी उपग्रहों में से 389 पिछले नौ वर्षों में लॉन्च किए गए...

- **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 33

परिचय

- **मन की बात :** 34

भारत ने आपदा प्रबंधन की ताकत विकसित की...

- **जन्म दिवस :** 38

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक आदर्श नेता...

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद...

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता तिलकजी...

- **विचार प्रवाह :** 41

क्या है सेक्यूलरिज्म...?

मुख्य व्रत-त्यौहार

1. प्रदोष व्रत, मंगला तेरस,विजया पार्वती व्रत 3. स्नानदान व्रत, गुरू पूर्णिमा, अष्टान्हिका व्रत समाप्त 4. वीर शासन जयंती 6. गणेश चतुर्थी व्रत 7. मौना पंचमी,नाग मरूस्थले 9. शीतला सप्तमी 13. कामिका एकादशी व्रत 14. रोहिणी व्रत 15. प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत 17. हरेली, सोमवती, हरियाली, स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 18. पुरूषोत्तम मास प्रारम्भ 19. चन्द्रदर्शन 21. विनायकी चतुर्थी व्रत 29. कमला एकादशी 30. प्रदोष व्रत

मुख्य जयंती-दिवस

1. डॉक्टर्स एवं सी.ए. दिवस 6. पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयंती 7. प्राणनाथ परमधाम वास दिवस 11. विश्व जनसंख्या दिवस 17. हरेली, स्वामी अखण्डानंद जयंती 19. डॉ. खूबचंद बघेल ज. 23. चन्द्रशेखर आजाद जयंती 27. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पु.ति. 31. मुंशी प्रेमचंद जयंती, उधमसिंह शहीदी दिवस

वर्ष-55, अंक : 05, भोपाल, जुलाई 2023

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमने धर्म के आधार पर लोक पालन और राज्य की व्यवस्था का विधान किया। केवल सत्ता भोग के लिए राज स्थापना अपने जीवन का लक्ष्य नहीं।
धर्म के लिए राज्य की आवश्यकता हुई इसलिए धर्म से प्रेरणा जरूरी है। राजा धर्म रक्षण के लिए उत्तरदायी है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

सार्थक परिणाम आयेंगे

सफलतम विदेश यात्रा को पूरा करके भारत के ऊर्जावान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपना पहला प्रवास मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में किया। आगामी विधानसभा चुनाव को दृष्टि में रखते हुए प्रधानमंत्री जी की यह यात्रा महत्वपूर्ण रही। इस यात्रा का उद्देश्य जमीनी स्तर पर पार्टी की उपस्थिति को और ज्यादा सशक्त करना रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भोपाल में हुए इस कार्यक्रम के द्वारा पूरे भारत वर्ष के सारे लोकसभा क्षेत्रों के लगभग दस लाख बूथों पर कार्यकर्ताओं के साथ डिजिटल रूप से जुड़े।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अत्यंत सफल अमेरिका की यात्रा ने एक बार फिर हर भारत वासी का मस्तक गर्व से ऊँचा कर दिया कि आज भारत के पास प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के रूप में विश्व को नेतृत्व देने वाला नेता है। अपनी सफलतम विदेश यात्रा को पूरा करके भारत के ऊर्जावान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपना पहला प्रवास मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में किया। आगामी विधानसभा चुनाव को दृष्टि में रखते हुए प्रधानमंत्री जी की यह यात्रा महत्वपूर्ण रही। इस यात्रा का उद्देश्य जमीनी स्तर पर पार्टी की उपस्थिति को और ज्यादा सशक्त करना रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी भोपाल में हुए इस कार्यक्रम के द्वारा पूरे भारत वर्ष के सारे लोकसभा क्षेत्रों के लगभग दस लाख बूथों पर कार्यकर्ताओं के साथ डिजिटल रूप से जुड़े। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी बूथ पर कार्य करते हुए सतत् प्रक्रिया के तहत आज अपने विशाल अनुभव के साथ भारत के प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हैं। भोपाल में हुए ''मेरा बूथ सबसे मजबूत'' कार्यक्रम में इस बात के जीवंत दर्शन हुए। प्रधानमंत्री जी ने बड़ी सहजता से देश के कोने-कोने से संवाद करने वाले प्रत्येक कार्यकर्ता की जिज्ञासा को सार्थक जबाब देकर संतुष्ट किया।

भारतीय जनता पार्टी इसी लिए देश की दूसरी पार्टियों से पूरी तरह से अलग है। यहां पर छोटे से छोटा कार्यकर्ता भी अपनी मेहनत और लगन से सत्ता और संगठन में शीर्ष स्थान पा सकता है। यही कारण है आज भारतीय जनता पार्टी को विश्व का सबसे बड़ा दल होने का गौरव प्राप्त है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूरे देश के सारे बूथ के कार्यकर्ताओं को आत्मीय भाव के साथ सम्बोधित किया। भारतीय जनता पार्टी में यही परिवार भाव है। जबकी दूसरे दल परिवारवाद से ग्रसित हैं। इसीलिए परिवारवादी पार्टियों में उनके बेटे-बेटियां फलते-फूलते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्पष्ट रूप से रेखांकित किया कि भारतीय जनता पार्टी के शासन में देश की जनता के बेटे-बेटियां आगे बढ़ेंगे ना कि परिवारवादी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार अपने घोषणा पत्र के सारे काम पूरे करती जा रही है। अयोध्या में भगवान श्री रामलला का मंदिर तेजी से बन रहा है। कश्मीर से धारा 370 हट चुकी है। तीन तलाक पर बैन हो चुका है। अब देश समान नागरिक संहिता के लिए तैयार है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में चहुँमुखी विकास के कार्य समय सीमा के अन्दर हो रहे हैं। अब टालने और लटकाने का दौर खत्म हो गया है। पी.एम. किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से लगभग 11 करोड़ से ज्यादा किसानों को दो लाख करोड़ रूपये से अधिक की सहायता राशि सीधे उनके खातों में पहुँचा दी गयी है। ऐसी एक नहीं अनेकों योजनाऐं हैं जिनमें लाभार्थियों को सीधे पैसा उनके खाते में पहुँच जाता है। यहाँ कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार बिल्कुल नहीं होता है। यह सब हुआ भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सफल प्रयासों और कुशल नेतृत्व से। वरना एक समय ऐसा था जब भारत के एक पूर्व प्रधानमंत्री ने सार्वजनिक रूप से स्वीकारा था कि केन्द्र के द्वारा दी जाने वाली राशि में 85 प्रतिशत भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी की भेंट में चढ़ जाता है। आज का भारत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में ऐसे अवरोधों को पार कर रहा है। इसीलिए आज भारत विश्व में पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरे विश्व में उत्साह से मनाया गया। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में अतंर्राष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव रखा था। जिसे स्वीकार कर लिया गया। आज पूरा विश्व भारत के पुरातन ज्ञान योग से अभीभूत है। यह सब हुआ है भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के अभिनव प्रयासों से। इसी के कारण आज योग और आयुर्वेद के साथ-साथ कई अन्य भारतीय प्राचीन विज्ञान के नवीनीकरण की सम्भावनाऐं जागी हैं। जिससे पूरे विश्व में रोजगार के कई अवसर बने हैं। निश्चित ही इससे भारत का प्रभाव बढ़ा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार में अब जबाबदेही का वातावरण बन गया है। जबकी पहली की सरकारें अपने काम और नीतियों को लेकर जबाबदेही से बचती थीं। बड़े-बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर के काम को लेकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी स्वयं समीक्षा और चर्चा करते हैं। विकास की परियोजनाऐं समय सीमा में पूरी हों उसकी चिंता प्रधानमंत्री जी स्वयं करते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सौभाग्य योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत योजना, नल-जल योजना जैसी अनेकों योजनाओं का कार्यान्वयन नीचे तक हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अंत्योदय का कार्य तेजी से चल रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में रोजगार के क्षेत्र में भी विशेष कार्य हुए हैं। मोदी सरकार के नौ वर्षों के दौरान रोजगार सृजन में बहुत ज्यादा वृद्धि हुई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शुरू किये गये रोजगार मेले के दौरान बड़े पैमाने पर भरती शुरू की गयीं हैं। युवाओं को केवल सरकारी नौकरियों पर निर्भर नहीं रहने के अतिरिक्त रोजगार पैदा करने के लिए भी जागृत किया गया है। मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में लाड़ली बहना योजना का लाभ लेकर बहनें और ज्यादा मजबूत होंगी। लाड़ली बहना योजना को एक हजार रूपये से शुरू कर तीन हजार रूपये तक बढ़ाया जायेगा। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में मध्य प्रदेश सरकार ने अनेक महिला कल्याण योजनाओं से बहनों और बेटियों का सशक्तिकरण किया है। आने वाले समय में इसके सार्थक परिणाम निश्चित ही सामने दिखाई देंगे।

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

देश ने भाजपा सरकार की वापसी का मन बना लिया है- मोदी

भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी शक्ति पार्टी के कार्यकर्ता हैं। वे केवल पार्टी के कार्यकर्ता ही नहीं हैं बल्कि राष्ट्र की महत्वकांक्षाओं के सिपाही हैं।

प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता के लिए राष्ट्र का कल्याण सर्वोपरि है और राष्ट्र पार्टी से अधिक महत्वपूर्ण है। जब राष्ट्र समृद्ध होगा, सभी समृद्ध होंगे, और जब सबकी समृद्धि होगी तो राष्ट्र की प्रगति होगी।

27 जून, 2023 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भोपाल में भाजपा के कार्यक्रम 'मेरा बूथ, सबसे मजबूत' की शुरुआत की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य जमीनी स्तर पर पार्टी की उपस्थिति को मजबूत करना है। कार्यक्रम के दौरान, प्रधानमंत्री श्री मोदी जी भारत के 543 लोकसभा क्षेत्रों के लगभग 10 लाख बूथों के पार्टी बूथ कार्यकर्ताओं के साथ डिजिटल रूप से जुड़े। श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी का स्वागत किया। इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री वी. डी. शर्मा जी सहित भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेता गण भी शामिल हुए। कार्यक्रम से पहले प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने रानी कमलापति रेलवे स्टेशन से देश की पांच नई वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई।

- बीजेपी की प्राथमिकता दल से पहले देश।
- जो भी तीन तलाक के पक्ष में है, वह मुस्लिम महिलाओं के साथ बहुत बड़ा अन्याय कर रहा है।
- दूसरी पार्टियां चाहती हैं कि उनके बेटे-बेटियां फलें-फूलें, बीजेपी चाहती है कि आपके बेटे-बेटियां फलें-फूलें।
- विपक्षी दल घोटालों की गारंटी हैं। मैं इस बात की भी गारंटी देता हूं कि गरीबों और देश को लूटने वाले हर व्यक्ति पर कार्रवाई होगी।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी शक्ति पार्टी के कार्यकर्ता हैं। वे केवल पार्टी के कार्यकर्ता ही नहीं हैं बल्कि राष्ट्र की महत्वकांक्षाओं के सिपाही हैं। प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता के लिए राष्ट्र का कल्याण सर्वोपरि है और राष्ट्र पार्टी से अधिक महत्वपूर्ण है। जब राष्ट्र समृद्ध होगा, सभी समृद्ध होंगे, और जब सबकी समृद्धि होगी तो राष्ट्र की प्रगति होगी।
- सीट और उम्मीदवार पर ध्यान न देते हुए, कमल (भारतीय जनता पार्टी का चुनाव चिन्ह) को उम्मीदवार के रूप में देखा जाना चाहिए। कमल सभी समस्याओं के समाधान का प्रतीक है, और पार्टी के भीतर, पार्टी प्रतीक सभी लोगों से ऊपर है।
- बूथ कमिटी में सेवा की भावना को समाहित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। पार्टी कार्यकर्ताओं से बूथ स्तर पर लोगों को सरकार की योजनाओं के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यकर्ताओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि सरकार की लाभकारी योजनाओं और विकास परियोजनाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जाये।
- राष्ट्र की भलाई सुनिश्चित करने का तरीका तुष्टिकरण के माध्यम से नहीं है, बल्कि संतोष और संतुष्टि (संतुष्टिकरण) के माध्यम से है। जिन व्यक्तियों को पहले ही आवास मिल चुका है, वे मुद्रा योजना के लिए पात्र हैं या उनके पास आयुष्मान भारत कार्ड है। अगर बूथ कार्यकर्ता अपनी जिम्मेदारी समझें और उसके अनुसार काम करें तो सरकारी कार्यक्रमों का लाभ सही समय पर सही लोगों तक पहुंच सकता है। उन्होंने वंचितों के संकट को कम करने में कर्तव्य के महत्व पर जोर दिया।
- वोट बैंक की राजनीति के परिणामस्वरूप

पसमांदा मुसलमानों के साथ होने वाले भेदभाव के बारे में बात की। उनकी चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों पर चिंता व्यक्त की और इस बात पर जोर दिया कि उनकी उपेक्षा की जाती है और उनकी आवाज नहीं सुनी जाती है।

- उन्होंने समान नागरिक संहिता (UCC) के नाम पर लोगों को भड़काने की कोशिशों पर भी चिंता जताई है। देश में मौजूदा व्यक्तिगत कानूनों की तुलना एक घर के कानूनों से की, जिसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य पर अलग-अलग नियम लागू होते हैं। दोहरी व्यवस्था वाले देश को चलाने की चुनौतियों पर जोर दिया और कहा कि हम सभी को एक राष्ट्र के रूप में मिलकर काम करने की आवश्यकता है। भाजपा कार्यकर्ताओं से गलत धारणाओं को दूर करने और तथ्यों और तर्कों के साथ मुसलमानों के बीच समझ को बढ़ावा देने का आग्रह किया।
- विपक्षी दलों में जितनी तीव्र अस्थिरता देखी गयी, वह पहले कभी नहीं देखी गयी। विपक्षी दलों की घबराहट साफ संकेत दे रही है कि देश की जनता ने 2024 के चुनाव में भाजपा को दोबारा सत्ता में लाने का मन बना लिया है। वही व्यक्ति और दल जो एक-दूसरे के साथ गाली-गलौज करते थे, अब एक-दूसरे के पैरों पर गिर रहे हैं, जिसे उन्होंने विपक्षी दलों की हताशा और असहायता का प्रतिबिंब बताया।
- विपक्षी दल भ्रष्टाचार और घोटालों में लिप्त हैं। वे कम से कम 20 लाख करोड़ रुपये के घोटालों के लिए जिम्मेदार हैं। अकेले कांग्रेस पार्टी करोड़ों रुपये के घोटालों में शामिल रही है और इन पार्टियों का भ्रष्टाचार मीटर कभी भी नीचे नहीं जाता है, अर्थात भ्रष्ट आचरण में उनकी संलिप्तता एक निरंतर विषय है।
- उन्होंने प्रत्येक भ्रष्ट व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई की गारंटी दी और उन्हें जवाबदेह ठहराने का वादा किया। विपक्ष केवल भ्रष्टाचार और देश को लूटने की गारंटी दे सकता है। उन्होंने गारंटी दी कि जिन लोगों ने गरीबों को लूटा है उन सबको इन दुष्कृत्यों के परिणाम भुगतना होंगे।
- जिन लोगों ने वंशवाद की राजनीति के नाम पर वोट मांगा था, वे केवल अपने परिवार के सदस्यों की सेवा में ही संलिप्त हैं। उन्होंने जनता से आग्रह करते हुए कहा कि अगर वे राजनीतिक परिवारों के बच्चों का विकास चाहते हैं तो उन्हें विपक्षी पार्टियों को वोट देना चाहिए और अगर वे अपने बच्चों के कल्याण के लिए काम करना चाहते हैं तो उन्हें भारतीय जनता पार्टी को वोट देना चाहिए।
- कांग्रेस पार्टी की लोगों को धोखा देने की एक सतत रणनीति है - पहले किसानों को संकट में रहने दो, और फिर अपने वोट सुरक्षित करने के लिए ऋण माफी जैसे झूठे वादों से उन्हें गुमराह करो। कांग्रेस सरकारों ने लगातार बाढ़ या सूखे के दौरान किसानों की सहायता नहीं की, बल्कि उनकी सहायता के लिए आवंटित धन का दुरुपयोग किया। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार द्वारा पीएम-किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से लगभग 11 करोड़ किसानों को 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की सहायता राशि सीधे उनके खातों में हस्तांतरित की गयी हैं। किसानों के लिए सस्ती खाद सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक की सहायता प्रदान की हैं।
- भारत पिछले नौ वर्षों में दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के अपने पिछले स्थान को पार करते हुए विश्व में पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। इसका तात्पर्य यह है कि भारत और उसके नागरिकों की आय में वृद्धि हुई है और विकास में भी वृद्धि हुई है। देश का निर्यात अभूतपूर्व स्तर पर पहुँच गया है, जिसके परिणामस्वरूप किसानों और नौकरी के बाजार दोनों को लाभ हुआ है। उन्होंने उद्योगों के उल्लेखनीय उत्पादन स्तरों पर प्रकाश डाला, जिसने पर्याप्त विदेशी निवेश को आकर्षित किया है, जिसके परिणामस्वरूप युवाओं को नौकरियाँ मिली हैं।

21वीं सदी भारत की युवा पीढ़ी की सदी है। नौ वर्षों में राष्ट्र के स्वाभिमान को पुर्नस्थापित करने के लिए प्रयास किए गए हैं। भारतीय जनता पार्टी के शासन की नीति भारत की आर्थिक कमाई को बढ़ाने और समृद्धि को हर नागरिक तक पहुँचाने का लक्ष्य रखती है। आबादी का एक महत्वपूर्ण वर्ग, जो पहले विकास से वंचित था, उन्हें अब प्राथमिकता दी जा रही है। यह श्री राम मनोहर लोहिया जी, डॉ. श्री बी.आर. अम्बेडकर जी, और श्री महात्मा गांधी जी द्वारा परिकल्पित सामाजिक न्याय की सच्ची भावना का प्रतीक है। मध्य प्रदेश की धरती, भाजपा को दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बनाने में इस धरती की बहुत बड़ी भूमिका है और इसलिए, ऐसी ऊर्जावान मध्य प्रदेश की धरती पर मेरा बूथ सबसे मजबूत इस कार्यक्रम का हिस्सा बनते हुए मुझे हृदय से आनंद आ रहा है, अच्छा लग रहा है, गौरव हो रहा है। मैं जानता हूं कि आप सभी अपने-अपने बूथ में वर्ष भर बहुत व्यस्त रहते हैं। केंद्र सरकार के 9 वर्ष पूरे होने पर, देशभर में जो कार्यक्रम हो रहे हैं और उसमें आप लोग जो मेहनत करते हैं, दिन-रात जुटे रहते हैं, उसकी जानकारियां लगातार मुझ तक पहुंच रही है। मैं जब अमेरिका और मिस्र में था, तब भी आपके प्रयासों के बारे में मुझे लगातार जानकारी मिलती रहती थी। इसलिए वहां से आने के बाद सबसे पहले आप सभी से मिलना, मेरे लिए ज्यादा सुखद है, ज्यादा आनंददायक है।

भाजपा की सबसे बड़ी ताकत, भाजपा की सबसे बड़ी ताकत, ये सबसे बड़ी ताकत आप सभी कार्यकर्ता हैं और मैं नड्डा जी का केंद्रीय भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व का, राज्यों के भाजपा के नेतृत्व का, मध्य प्रदेश भाजपा नेतृत्व का हृदय से अभिनंदन करता हूं, इस कार्यक्रम की रचना के लिए, क्योंकि आज मैं एक साथ बूथ में काम करने वाले करीब 10 लाख कार्यकर्ताओं को वर्चुअली संबोधित कर रहा हूं। आप तो इतने लोग यहां है लेकिन देश का हर पोलिंग बूथ आज यहां आपसे जुड़ा हुआ है। शायद किसी भी राजनीतिक दल के इतिहास में ग्रासरूट लेवल पर ऑर्गनाइज वे में इतना बड़ा कार्यक्रम कभी नहीं हुआ होगा। इतना बड़ा कार्यक्रम आज हो रहा है। एक और बात मै गर्व से कहना चाहता हूं। मुख्यमंत्रियों की मीटिंग होना। पार्टी के अध्यक्षों की मीटिंग होना। महासचिवों की मीटिंग होना। प्रदेश कार्यसमितियों की मीटिंग होना। जिला कार्यसमिति, मंडल कार्यसमिति का होना, ये तो शायद लंबे अरसे से चल रहा है। होता भी है, लेकिन सिर्फ और सिर्फ बूथ का नेतृत्व करने वाले लोगों का सम्मेलन इतिहास में पहली बार होता होगा। आप सिर्फ बीजेपी ही नहीं आप सब सिर्फ दल ही नहीं, देश के संकल्पों की सिद्धि के भी मजबूत सिपाही हैं। भाजपा के हर कार्यकर्ता के लिए देशहित सर्वोपरि है, दल से बड़ा देश है। जहां दल से बड़ा देश हो ऐसे कर्मठ कार्यकर्ताओं से बात करने का मेरे लिए भी एक मंगल अवसर है मैं भी बहुत उत्सुक हूं। मुझे नड्डा जी ने बताया कि मोदी जी आज भाषण वाषण तो बाद में आज कुछ सवाल-जवाब हो जाए। मैंने भी बात को मान लिया। आइए, बातचीत का सिलसिला शुरू करते हैं। हमारी बहन जी वहां से जैसे ही आगे आज्ञा करेंगी। मैं अपनी गाड़ी आगे चलाऊंगा। श्री राम पटेल, दमोह, मध्य प्रदेश किस तरफ हैं, हां बताइए मैं स्क्रीन पर देख रहा हूं बताइए... आदरणीय

मोदी जी प्रणाम, बूथ 171 दमोह से आपको प्रणाम करता हूं। आपसे मैं प्रश्न करना चाहता हूं आपने भी खुद मंडल स्तर तक कार्यकर्ता बन करके काम किया है। ऐसे में आप राजनीति के अतिरिक्त भी हमारे सामाजिक जुड़ाव को कैसे देखते हैं? आपसे पूछना चाहता हूं। **आदरणीय प्रधानमंत्री जी**- एक तो मुझे अच्छा लगा कि आप रोज की आपाधापी की बजाए, किसी और दिशा में सवाल को लाए हैं। मेरा जवाब थोड़ा लंबा हो जाएगा। देखिए जो एक बूथ होता है वो अपने आप में एक बहुत बड़ी इकाई है हमें कभी भी बूथ की इस इकाई को छोटा नहीं समझना चाहिए। हमें अपने बूथ में राजनीतिक कार्यकर्ता से भी ऊपर उठकर, समाज के लिए सुख-दुख के साथी के रूप में अपनी पहचान बनानी चाहिए। बहुत सी ऐसी चीजें होती हैं जिसमें जमीन का फीडबैक बहुत जरूरी होता है। जो बूथ के हमारे साथी हैं वे इसमें बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं।

प्रधानमंत्री भी या मुख्यमंत्री भी, अगर कोई सफल नीति बनाता है मान लेना किसी न किसी बूथ के कार्यकर्ता की दी हुई जानकारी की ताकत बहुत बड़ी होती है। हम भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता, उनमें से नहीं हैं जो एयरकंडीशन्ड कमरों में बैठकर पार्टी चलाते और फतवे निकालते रहते हैं। हम तो वो लोग हैं जो गांव-गांव जाकर, गर्मी हो, बारिश हो, कडकड़ाती ठंड हो, हर मौसम, हर परिस्थिति में जनता के बीच जाकर के खुद को खपाने वाले यहां लोग हैं। इस वजह से बूथ का बहुत मजबूत होना स्वाभाविक है। मुझे याद है कि अगर ये बूथ कमेटी नहीं होती तो शायद ही कभी उज्ज्वला योजना का विचार ही नहीं आता। ये आपकी, आपकी निरंतर कोशिश होनी चाहिए क्योंकि गांव से कार्यकर्ताओं ने मुझे उज्ज्वला गैस योजना के विषय में समझाया, बाद में वो नीति बन गई और गरीब के घर तक गैस का चूल्हा पहुंच गया। भाजपा की बूथ कमेटी की पहचान सेवा से होनी चाहिए। बूथ के अंदर रोज आंदोलन संभव नहीं है, तू-तू मैं-मैं संभव नहीं है और इसके लिए भाजपा की पहचान सेवाधारी की होनी चाहिए, सेवाभाव की होनी चाहिए और इसके लिए छोटे-छोटे समझे जाने वाले काम जो लोगों को बहुत छोटे लगते हैं लेकिन बहुत उपयोगी होते हैं। अब जैसे गांव में कहीं न कहीं तो आपको बैठने की कोई जगह होगी। किसी पेड़ के नीचे बैठते होंगे। किसी चाय के ठेले के पास जाकर बैठते होंगे।

क्या कभी आपने सोचा है कि सुबह अखबार पढ़ लिए दोपहर के बाद वहां जाएंगे, एक खटिया में सारे अखबार लगा देंगे और गांव वाले जिसको भी अखबार पढ़ना होगा वहां आएगा, बैठेगा, अखबार पढ़ेगा, देश और दुनिया की बात करेगा। आपने तो अखबार पढ़ लिया था लेकिन वो अखबार अब पूरे बूथ के लोगों के काम आ रहा है। देखिए कोई खर्चा नहीं, वो आपको नेता मानने लग जाएगा कि नहीं लग जाएगा। कभी-कभी हम अखबार में एडवरटाइजमेंट देखते हैं। भारत सरकार की एडवरटाइजमेंट आती है, राज्य सरकार की एडवरटाइजमेंट आती है, अपने पार्टी के नेताओं की तस्वीर उसमें होती है। क्या हम एक नियम बना सकते हैं कि अपने बूथ के अंदर एक जगह फिक्स करें और अखबार में जो एडवरटाइजमेंट आई है उसको उस दिन काटकर के उसको एक बड़ा बोर्ड बना करके वहां लटका दें। आपके बूथ के लोगों को पता चल जाएगा कि भई आज की खबर कहां है, उस पेड़ के नीचे जो लटक रहा है, चलो वहां चले जाते हैं। बहुत बड़ी ताकत बन जाती है।

एक छोटा सा ब्लैकबोर्ड बना सकते हैं बूथ के अंदर आप। हर दिन एक कार्यकर्ता को जिम्मेदारी दो, आज भाजपा की जो अच्छी खबरें हैं, देश की अच्छी खबरें हैं, ब्लैकबोर्ड पर देख लीजिए, बूथ के लोग आएंगे, जाएंगे, जरूर पढ़ेंगे। मैंने एक कार्यकर्ता देखा है, वो फर्स्ट एड बॉक्स अपने यहां रखता था। वो फर्स्ट एड बॉक्स के कारण उस इलाके से सारे लोग उसके घर आते-जाते रहते थे। इससे गांव के लोगों में विश्वास बढ़ेगा कि अगर कोई समस्या हुई, कोई उपचार करवाना है तो वो भाजपा के अपने भाई हैं न उसके घर में फर्स्ट एड बॉक्स है चलो भाई पहुंच जाते हैं। किसी को बीमारी है, थर्मामीटर चाहिए, चलो उसके यहां से ले आते हैं। घर में कोई तकलीफ है, गरम पानी की थैली चाहिए, चलिए उनके यहां मिल जाएगी मांग करके ले आते हैं। आप एक सामाजिक नेता बन जाएंगे। देखिए बूथ के अंदर संघर्ष की जरूरत नहीं होती है, सेवा ही एक मात्र माध्यम होता है। आप अपने, अखबार जैसा मैंने कहा, पढ़ने की व्यवस्था पर जोर दें। कुछ अपने मैगजीन होते हैं। कमल संदेश है, और भी हमारी पार्टी के कई अखबार निकलते हैं। जब मैं गुजरात में था तो वहां मनोगत नाम का अखबार निकलता था। ये मैगजीन जो आता है हमने तय करना चाहिए कि चलिए भई मंडे को ये मैगजीन इस घर में देंगे, फिर दूसरे दिन सुबह जाके मांगेंगे कि कल आपने पढ़ लिया होगा, ले लेंगे। दूसरे दिन दूसरे के घर देंगे। फिर 24 घंटे के बाद जाएंगे, फिर वहां से ले लेंगे। हमारा एक कमल संदेश होगा, हमारा एक मैगजीन होगा, तय करेंगे अगला आने तक घर-घर वो घूमता रहेगा। 30-40 घरों में जाएगा फिर वापिस आएगा। आप खुद तो अपने लिए खर्चा करते हैं, पढ़ते हैं, लेकिन वही अगर आप मुहल्ले में पहुंचा देंगे, तो फायदा होगा। अब देखिए गांव में खेती। खेती के समय यूरिया खरीदने के लिए गांव वाले निकलते हैं। हर कोई अलग-अलग जाता है, हर कोई न कोई वेहिकल करके उठा करके ले आता है। मान लीजिए आपने गांव वालों को इकट्ठा कर दिया। उनका एक वाट्सएप ग्रुप बना दिया और आपने उनको कहा अच्छा भाई देखिए, बताओ किसको कितना यूरिया चाहिए। चलिए दो-चार लोग मेरे साथ। और हम सब मिल करके पूरा गांव का यूरिया एक ही वेहिकल में ले आए। तो किराया कम हो जाएगा। गांव के लोगों का पैसा बच जाएगा। वो आपको तारीफ करेंगे कि नहीं करेंगे। आपका गौरवगान करेंगे कि नहीं करेंगे। आपका कोई खर्चा हुआ क्या। नहीं हुआ। ऐसे ही छोटे-छोटे काम।

हमने देखा है कि गांव हो या शहर, अगर कुछ करने की भावना सबमें ही होती है, पर अक्सर माध्यम नहीं होता है। लेकिन जैसे ही कोई व्यक्ति माध्यम बन जाता है, नेतृत्व करने लग जाता है तो सेवाभाव वाले लोग उसके साथ जुड़ ही जाते हैं। अगर कोई व्यक्ति घर-घर जाकर कहता है कि कोई पुरानी किताब हैं तो मुझे दे दीजिए, आप देखेंगे कि हर घर से बच्चे आकर खुद अपनी किताबें पुरानी दे देंगे। आप जरा किताबों को ठीक कर लें घर में बूथ के कार्यकर्ता और जो गरीब बच्चे हैं उनमें वो किताब बांट दें अपने बूथ में। हर गरीब परिवार के पास किताब पहुंच जाएगी। उनको लगेगा अरे, मेरे बच्चे पढ़ाई करें, इसकी वो चिंता कर रहा है। जब मैं गुजरात में मुख्यमंत्री था। मणिनगर मेरा विधानसभा क्षेत्र था। तो मैंने आंगनवाड़ी की चिंता करने काम अपने जिम्मे लिया। अपने कार्यकर्ताओं को तैयार किया। मैंने कहा- आपको आंगनवाड़ी में चक्कर काटना है। बोले-क्या करना है। किसी न किसी नए साथी को ले जाओ। अगर खजूर का सीजन है, आंगनवाड़ी में जाकर हरेक बच्चे को दो-दो खजूर खिला दो। अगर बेर का सीजन है, आंगनवाड़ी में जाकर हरेक बच्चे को दो-दो बेर खिला दो। अगर कोई अच्छी टॉफी आ गई है तो दो-दो टॉफी जाके... न्यूट्रीशन का प्रॉब्लम भी सॉल्व होगा। उन गरीब परिवारों से भी दोस्ती बन जाएगी और इस इलाके में कोई जाने या न

जाने, आप निकलेंगे हर बच्चा आपको जानता होगा। एक बहुत बड़ी ताकत बन जाती है।

इस ताकत पर हमने जोर देना चाहिए और ये जितना करेंगे। हमें गांव गांव में, शहर में,कस्बे में जाकर इस तरह से काम करते रहना चाहिए। तब जाकर हमारे बूथ की ताकत बनती है। जब आप जनता से जुड़े ऐसे छोटे छोटे काम करोगे तो मुझे पक्का विश्वास है पूरे बूथ में कोई परिवार ऐसा नहीं होगा जो आपसे दूरी करेगा, वो आपसे नहीं जुड़ेगा। आपकी पहचान एक भाजपा के कार्यकर्ता से आगे बढ़कर एक समाज सेवक की तरह बने, इसके लिए बूथ के अंदर लगातार काम करना चाहिए और यहां से आप बूथों में जाने वाले हो, अलग-अलग बूथों में रहने वाले हो। वहां जरूर जा करके इन चीजों का प्रयोग कीजिए। आप देखना, आपकी तरफ देखने का, आपके बूथ के कार्यकर्ताओं की तरफ देखने का पूरा दृष्टिकोण बदल जाएगा।

आइए कुछ और साथी भी पूछना चाहते हैं। अगले सवाल पर चलते हैं।

Sh. Salla Ramakrishna, Andhra Pradesh

कहां से बोल रहे हैं भाई, हां दिखाई दिया हां बोलिए मैं आपको स्क्रिन पर देख रहा हूं, हां आराम से फिर से बताइए, जरा आराम से सवाल बताइए..

प्रधानमंत्री जी, हमारी सरकार गांव के विकास के लिए इतना कुछ कर रही है। भाजपा कार्यकर्ता के रूप में हम इसमें अधिक योगदान कैसे दे सकते हैं?

आप काम तो कर ही रहे हैं लेकिन ज्यादा काम करने के लिए कह रहे हैं। देखिए कार्यकर्ता के दिल में और ज्यादा काम करने की भूख होना ये भी बहुत बड़ी ताकत है। देखिए 2047 में जब हमारे देश की आजादी के सौ साल होंगे और हम देश को विकसित भारत बनाना चाहते हैं लेकिन भारत विकसित तभी होगा, जब गांव विकसित होगा। इसलिए हर गांव का संकल्प बनना चाहिए कि 2047 के पहले हमें अपना कार्यक्षेत्र गांव होगा, पंचायत होगी, नगर होगा, महानगर होगा। हमें उसे भी डेवलप बनाना है, समस्याओं से मुक्त करना है और इसके लिए छोटे-छोटे प्रयास ही बड़े असर दिखा सकते हैं। जैसे कि हमारा गांव कैसे हरा भरा हो, कैसे गांव में स्वच्छता को लेकर हम अलग अलग कार्यक्रम शुरू कर सकते हैं। हम गांव में सोलर को कैसे बढ़ाएँ? सोलर इनर्जी की कैसे आदत डालें आज भारत सरकार सोलर इनर्जी पर इतना जोर दे रही है। हमारे भाजपा बूथ कार्यकर्ता ये ठान लें कि अगर किसी गांव में 100 घर हैं, तो अगले दो साल में वहां सौर ऊर्जा का ज्यादा से ज्यादा उपयोग हो। हमारे किसान हो उनको समझाएं, सोलर पंप का उपयोग करिए आपका पैसा भी बच जाएगा। ज्यादा से ज्यादा लोग कैसे सोलर लगवाएं, हम उनको प्रेरित करें। काम सरकार का नहीं है, जनता जनार्दन में ले जाने का एक सकारात्मक तरीका है। उसमें बैंकों से कैसे मदद मिलती है, उनको बैंकों से मदद कैसे दिलवाएं, आर्थिक सहयोग बैंकों से मिलता है वो उन तक कैसे पहुंचे। उनको हम ये जानकारियां कैसे दें। आप जानते हैं, केंद्र सरकार के प्रयासों से स्कूलों में ड्रॉप आउट रेट बहुत तेजी से कम होता जा रहा है। लेकिन फिर भी भाजपा कार्यकर्ता ये सोचें कि मैं जिस बूथ में काम करता हूं वहां कोई ड्रॉप आउट नहीं होगा। बेटा हो या बेटी शत-प्रतिशत पढ़ेंगे इसके लिए मैं काम करूंगा। मुझे बताइए, भाजपा कार्यकर्ताओं को ये काम करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए? आपका बूथ मजबूत होगा कि नहीं होगा? आपके गांव में से अशिक्षा जाएगी कि नहीं जाएगी? कोई बच्चा अगर बीच सेशन में स्कूल छोड़ रहा है, हम उसको पहचान लें, हम उसको मिलने जाएं, उसके मां-बाप को मिलने जाएं, उसको स्कूल ले जाएं। सेवा भी होगी भाजपा का काम भी हो जाएगा। अगर उसको कोई आर्थिक परेशानी है, किताब नहीं है लिखने के लिए नोटबुक नहीं है, आप गांव के दो लोगों से कहेंगे आओ भाई, इन बच्चों के लिए दो नोटबुक ले आइए, उनको यूनिफॉर्म नहीं है आओ भाई इनके लिए भी यूनिफॉर्म ले आओ। आप देखिए धीरे-धीरे आप परिवर्तन ले आएंगे। अब कुछ बच्चे कुपोषित होते हैं। हम गांव के अंदर कुपोषण कैसे मिटा सकते हैं। मैंने अभी बताया मेरा मणिनगर का अनुभव। हम गांव के लोगों को ले जा सकते है। इतना ही नहीं किसी को कहेंगे भाई जन्मदिन आंगनबाड़ी में मनाओ। आपके पिताजी की मृत्यु की तिथि है.. आंगनबाड़ी में मनाओ। आपकी शादी की सालगिरह है आंगनबाड़ी में मनाओ, घर से कुछ बनाकर ले आओ, चलो ये तीस-चालीस बच्चे होते हैं इन्हें खिलाओ। कुपोषण भी जाएगा और उन्हें अपना जन्मदिन मनाने का आनंद भी आएगा।

मैं मानता हूं कि ऐसे तरीके ढूंढने चाहिए और जैसे, जहां पर डेयरी का काम है वो दूध इकट्ठा कर के पिला सकते हैं। मैं समझता हूं कि यही तरीके होते हैं जिन तरीकों से हम बहुत तेजी से आगे बढ़ सकते हैं और मैं मानता हूं कि इसकी आदत लोगों को भी लगेगी ऐसा नहीं है कि नहीं लगेगी और इसलिए मेरा आग्रह है कि हम इस बातों को ज्यादा महत्व दें। अपने गांव के अंदर इसी प्रकार के काम को अब जैसे अंकुरित मूंग होता है, अंकुरित चना होता है, अपने घर में करें, सौ ग्राम, कितना अंकुरित हो जाएगा... आपने वहां बांट दिया आंगनबाड़ी में। आंगनबाड़ी के बच्चों का कुपोषण से लड़ाई लड़ने की ताकत आएगी, पोषण बढ़ेगा। देखिए सरकार की योजनाओं से समाज की शक्ति जुड़ जाती है तो निश्चित परिणाम अवश्य मिलते हैं और हम चाहते हैं कि 2047 में भारत को विकसित बनाना है तो ऐसे हर छोटी चीजों को हर समस्या से हमें मुक्ति लेना भी है। वो मुक्ति हम लाएंगे तो वो परिणाम लाएंगे।

आप जानते हैं कि देश में नई नेशनल एजुकेशन पॉलिसी बनी है। उसमें एक बात कही गई है कि बच्चों को प्रैक्टिकल नॉलेज पढ़ाना कम सीखना ज्यादा। टीचिंग नहीं लर्निंग ये जब आया है। क्या कभी हम जाएं स्कूल में और मास्टर जी से बात करें कि चलो आज बच्चों को जरा पहाड़ ले जाते हैं, मैं भी साथ में आता हूं और बच्चों को बताएंगे कि बरगद का पेड़ कौन सा है।

चलो देखो नीम का पेड़ कहां है देखो। चलो ढूंढ के लाओं कौन-कौन सा कौन सा पेड़ है। फूल है तो कौन सा फूल है। बच्चों की पढ़ाई भी हो जाएगी। कोई कुम्हार होगा गांव में, चलो भाई आज कुम्हार के घर जाएंगे। वो मिट्टी का काम कैसे करता है? वो मिट्टी से घड़ा कैसे बनाता है? यानि स्कूल जो करता होगा, लेकिन मेरे बूथ का कार्यकर्ता जुड़ जाता है तो उन बच्चों के जीवन में भी बदलाव आता है और नई एजुकेशन पॉलिसी, हमारी नेशनल एजुकेशन पॉलिसी अपने आप लागू हो जाती है। कई हस्तशिल्पी होते हैं, चीजें कैसे बनाते हैं। बच्चे जब बारीक से देखते हैं कि सूई-धागे से ऐसे-ऐसे काम होता है तो बच्चे का विश्वास बनता है।

हम एक सामाजिक कार्यकर्ता बन जाते हैं और इसलिए मैं बूथ के भाजपा कार्यकर्ताओं से यही कहूंगा कि आप वहां के जन-जीवन से जुड़िए, उनकी रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़िए। उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में राजनीति नहीं होती है। उनकी रोजमर्रा की जिंदगी में आगे बढ़ने का इरादा होता है, उस आगे बढ़ने के इरादे को पहचानिए और अपने आप को उसके साथ जोड़िए, वो आपके साथ जुड़ जाएगा। आपका बूथ मजबूत बनने से कोई रोक नहीं सकता है और इसके लिए हमें आगे बढ़ना चाहिए। ▪

मोदी -बाईडेन का ऐतिहासिक मिलन एवं योग का अदभुत संयोग - श्री विष्णु दत्त शर्मा

विष्णु दत्त शर्मा

प्रधानमंत्री जी की अमेरिकी यात्रा के दौरान विश्व की दो महत्वपूर्ण शक्तियों का मिलन, दोनों देशों के अतिरिक्त अनेक समस्याओं से ग्रस्त विश्व के लिए भी उम्मीद की किरण जैसा है।

रूस-यूक्रेन युद्ध के कालखण्ड में पूरे विश्व को भारत से अनेक आशाएं हैं। भारत इन सभी समस्याओं के समाधान करने हेतु सक्षम और समर्थ भी है।

यूं तो अनादिकाल से ही योग भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। किसी भी धार्मिक अथवा आध्यात्मिक साधना की सिद्धि से पूर्व योगाभ्यास द्वारा शरीर को साधने का कार्य योग द्वारा किया जाता है। महर्षि पतंजलि सहित अनेक योगशास्त्रियों ने योग के सरलीकरण का महनीय कार्य किया, ताकि आम जन मानस के लिए योग सुलभ हो सके। वर्तमान कालखण्ड में भारत के गौरव की यश-पताका को निरन्तर विश्व में लहराने वाले यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस भारतीय ज्ञान-मनीषा को समूची दुनिया में लोकप्रिय एवं नवीन पहचान दिलाने का कार्य किया है। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आज पूरा विश्व योग के साथ ही भारत के वैभव और निरन्तर प्रगति की मुक्तकंठ से प्रशंसा कर रहा है। कोरोना रूपी विभीषिका में प्रधानमंत्री जी एवं भारत की निर्णायक भूमिका ने तो पूरे विश्व को सम्मोहित कर दिया। निराशा और अवसाद से भरे विश्व के लिए योग एवं आयुर्वेद रामबाण औषधि बनकर उभरे। यह सिद्ध हो गया कि अथाह ज्ञान एवं विज्ञान के गूढ़तम रहस्यों से भरा हिन्दू धर्म दर्शन दुनिया की सबसे सम्पन्न एवं समृद्ध परम्परा का वाहक है। यही कारण है कि लगभग 5000 वर्ष पुराने योग की प्रासंगिकता मोदी जी के सद्प्रयासों के परिणाम स्वरुप रोजमर्रा के करणीय कार्यों की भांति ही बढ़ गई है। सोचिए दूरदृष्टा प्रधानमंत्री जी के अभिनव प्रयासों के द्वारा योग एवं आयुर्वेद के साथ-साथ भारतीय प्राचीन विज्ञान के नवीनीकरण की असंख्य संभावनाएं जागी हैं। कितने रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं। भारत का प्रभाव कितना बढ़ा है। ये सभी तथ्य प्रासंगिक एवं चर्चा का केन्द्र हो सकते हैं।

पतंजलि दर्शन के अनुसार, 'योगः चित्त वृत्ति निरोधः' अर्थात्- चित्त की वृत्तियों का निग्रह ही योग कहलाता है। प्रायः विद्वान इसके अर्थ एवं भूमिका को 'जाकी रही भावना जैसी' के अनुरूप देखते रहे हैं। अगर योग के शाब्दिक

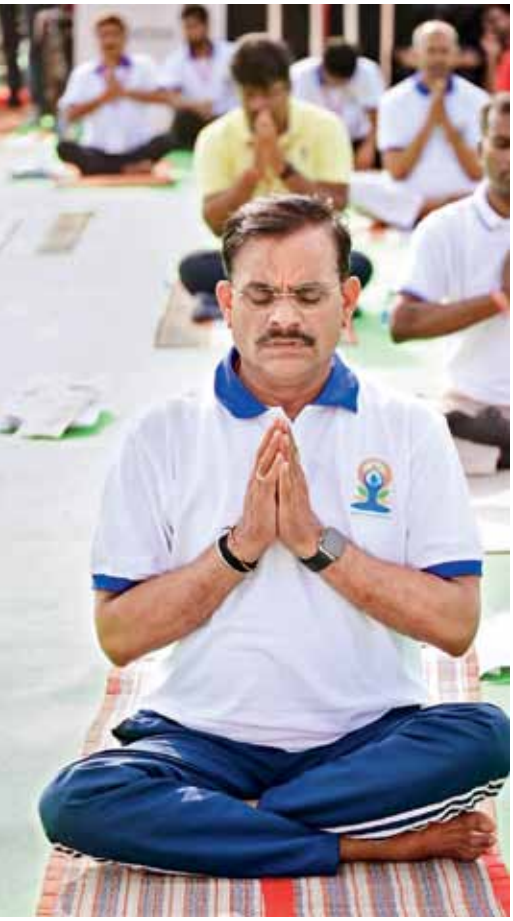

कला और विज्ञान के अद्वितीय समावेश, योग की लोकप्रियता का यह उत्कर्ष कालखण्ड है। यही कारण है कि 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव रखा गया। 21 जून उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लम्बा दिन बताया जाता है जिसका दुनिया के विभिन्न हिस्सों में विशेष महत्व है।

अर्थ कि बात करें तो योग संस्कृत भाषा के 'युज' धातु से बना है जिसका अर्थ है जोड़ना। इसके आध्यात्मिक दर्शन के पक्ष पर जाने से पता चलता है कि आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का माध्यम ही योग है।

प्रायः वैदिक परम्परा के अनेक विद्वान हमारे द्वारा किए जा रहे योग की क्रियाओं को सम्पूर्ण योग न मानते हुए इसे अंश मात्र मानते हैं। अनुलोम-विलोम एवं किये जाने वाले कुछ शारीरिक अभ्यास से परे भी योग का एक व्यापक क्षेत्र है। उनके अनुसार योग के माध्यम से तमाम शारीरिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं द्वारा मन और मस्तिष्क को नियंत्रित करके व्यक्ति ईश्वरीय तत्व को प्राप्त कर सकता है। साथ ही ऐसा करने वाले के लिए कुछ भी असाध्य नहीं बचता। वह जितेन्द्रिय एवं समाधि की उच्च अवस्था को भी प्राप्त कर लेता है।

कला और विज्ञान के अद्वितीय समावेश, योग की लोकप्रियता का यह उत्कर्ष कालखण्ड है। यही कारण है कि 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव रखा गया। 21 जून उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लम्बा दिन बताया जाता है जिसका दुनिया के विभिन्न हिस्सों में विशेष महत्व है। इसीलिए दूरदर्शी प्रधानमंत्री जी ने योग दिवस के लिए 21 जून की तिथि का चयन किया। केवल 75 दिनों के छोटे से कालखण्ड में ही 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने प्रस्ताव 69/131 के माध्यम से 21 जून को ''अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस'' के रूप में मनाने की घोषणा की।

इस पूरे घटनाचक्र के बीच 193 सदस्य देशों में से 177 देशों ने ना केवल इस प्रस्ताव का समर्थन किया, अपितु इसे सह-प्रायोजित भी किया। 2015 से शुरू हुआ योग दिवस रूपी उत्सव अपने 9 वें सोपान तक पहुंचते-पहुंचते भव्य महोत्सव के रुप में आकार ले चुका है। जहाँ 180 से अधिक देश मोदी जी की अगुवाई में एक साथ योग कर रहे हैं। समूचे देश के लिए गौरव की अनुभूति इसलिए भी विशेष है क्योंकि भारतीय वैदिक परम्परा के अद्वितीय सामर्थ्य, योग को प्रधानमंत्री जी के भगीरथ प्रयासों द्वारा भारत ही नहीं विश्व के अनेक देशों में घर-घर तक पहुंचाया जा चुका है। ये कहना भी अनुचित नहीं होगा कि योग नियमित दिनचर्या का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुका है।

आज भारत समूचे विश्व में एक महान लोकतंत्र एवं आधुनिक शक्ति के रूप में तेजी से उभर कर सामने आया है, जो न्याय, विश्वशान्ति, सद्भाव, परस्पर सहयोग, पर्यावरण सन्तुलन एवं समग्र विकास हेतु अपने उत्तरदायित्वों के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ सतत् रूप से कार्य कर रहा है।

लोकप्रिय प्रधानमंत्री मोदी जी की नीतियों एवं राजनैतिक सूझ-बूझ का ही नतीजा है कि स्वयं को सुपर पॉवर मानने वाला अमेरिका आज भारतीय प्रधानमंत्री के स्वागत में पलक-पांवड़े बिछाकर स्वागत करने हेतु लालायित है। वैश्विक स्तर पर तेजी से बदले समीकरणों के कारण स्वयं अमेरिका अपने हितों की रक्षा हेतु भारत के सन्मुख आशान्वित नजरों से देख रहा है।

भारत-अमेरिका सहयोग की दिशा में इस यात्रा का महत्व वर्तमान समय में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जिसका अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि 1997 के बाद किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री का अमेरिका का यह पहला आधिकारिक द्विपक्षीय दौरा है। देश को इस यात्रा से अनेकों उम्मीदें हैं। इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन एवं उपराष्ट्रपति कमला हैरिस के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण नेताओं एवं विभिन्न औद्योगिक कम्पनियों के सीईओ से मुलाकात कर द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा हुई। इस वैचारिक मेल-मिलाप के माध्यम से विभिन्न व्यापारिक सौदों एवं सामरिक हित के आवश्यक विषयों पर भी विचार-विमर्श किया है। यह हम सभी देशवासियों के लिए ऐतिहासिक क्षण है। क्योंकि पहली बार कोई भारतीय प्रधानमंत्री ने दूसरी बार अमेरिकी संसद को संबोधित किया।

प्रधानमंत्री जी की अमेरिकी यात्रा के दौरान विश्व की दो महत्वपूर्ण शक्तियों का मिलन, दोनों देशों के अतिरिक्त अनेक समस्याओं से ग्रस्त विश्व के लिए भी उम्मीद की किरण जैसा है। रूस-यूक्रेन युद्ध के कालखण्ड में पूरे विश्व को भारत से अनेक आशाएं हैं। भारत इन सभी समस्याओं के समाधान करने हेतु सक्षम और समर्थ भी है।

इस योग दिवस के सुअवसर पर यह कामना करते हैं कि विभिन्न आपदाओं से घिरे हुए विश्व की विभिन्न समस्याओं का समाधान इस योग दिवस के दुर्लभ संयोग में प्राप्त हो और योग के माध्यम से हम सभी आरोग्य एवं सम्पन्नता को प्राप्त करें।

वर्तमान समय अनेक चुनौतियों से निपटने का है। ऐसे अवसर पर हम सभी राष्ट्र निर्माण के पुनीत कार्य में सतत् संलग्न माँ भारती के सच्चे उपासक मोदी जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर साथ दें, ताकि विश्वगुरु भारत का यश व सम्मान सदैव अक्षुण्ण बना रहे। ▪

(लेखक- भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष एवं खजुराहो सांसद है।)

पूरी दुनिया को योग भारत की ही देन - मोदी

योग सही अर्थ में सार्वभौमिक है। जब हम योग करते हैं तो हम शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से शांत और भावनात्मक रूप से संतुष्ट महसूस करते हैं।

लेकिन यह सिर्फ आसन पर बैठकर ही व्यायाम करने तक सीमित नहीं है, योग जीवन का एक तरीका है। स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है।

योग का अर्थ है- एकजुट होना। तो, आपका एक साथ आना योग के दूसरे रूप की अभिव्यक्ति है। लगभग नौ वर्ष पहले, यहीं संयुक्त राष्ट्र में, मुझे 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव देने का सम्मान मिला था। उस समय पूरी दुनिया का इस विचार के समर्थन में एक साथ खड़े होना अविस्मरणीय था। मैंने वीर संयुक्त राष्ट्र सैनिकों को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं।

2015 में, मैंने उनकी याद में संयुक्त राष्ट्र में एक नवीन स्मारक के निर्माण का आव्हान किया था और पिछले हफ्ते, पूरी दुनिया ने इसे शीघ्र ही साकार करने के लिए भारत के साथ अपनी प्रतिबद्धता जताई। सबसे बड़ी सैन्य टुकड़ी का योगदान करने वाले देश के रूप में, हम इस नेक कार्य में समर्थन की अभिव्यक्ति के लिए सभी देशों के आभारी हैं।

पिछले वर्ष, 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष के रूप में मनाने के भारत के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए पूरी दुनिया ने एक साथ समर्थन जताया था। मिलेट एक सुपरफूड है। वे समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं और पर्यावरण की दृष्टि से भी उत्तम हैं और आज, पूरी दुनिया को फिर से योग के लिए एक साथ आते देखना अद्भुत है! योग भारत से आता है और यह बहुत पुरानी परंपरा है। लेकिन सभी प्राचीन भारतीय परंपराओं की तरह यह भी जीवंत और गतिशील है। योग निःशुल्क है - कॉपीराइट से मुक्त, पेटेंट से मुक्त, और रॉयल्टी भुगतान से भी मुक्त है।

आपकी आयु, लिंग और फिटनेस स्तर के अनुसार योग स्वीकरण करने योग्य है। योग सरल है- आप इसे घर पर, या काम पर, अथवा यात्रा में भी कर सकते हैं। योग में अपने को स्थिति के अनुरूप ढाला जा सकता है- आप इसे अकेले या समूह में अभ्यास कर सकते हैं, शिक्षक से सीख सकते हैं, या स्व-शिक्षण कर सकते हैं। योग सभी को जोड़ने वाला है- यह सभी के लिए है, सभी जातियों के लिए है, सभी धर्मों के लिए है और सभी संस्कृतियों के लिए है।

योग सही अर्थ में सार्वभौमिक है। जब हम योग करते हैं तो हम शारीरिक रूप से स्वस्थ, मानसिक रूप से शांत और भावनात्मक रूप से संतुष्ट महसूस करते हैं। लेकिन यह सिर्फ आसन पर बैठकर ही व्यायाम करने तक सीमित नहीं है, योग जीवन का एक तरीका है। स्वास्थ्य और भलाई के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है। विचारों और कार्यों में सावधानी बरतने का एक तरीका है। सद्भाव में जीने का तरीका- स्वयं के साथ, दूसरों के साथ और प्रकृति के साथ।

आप में से बहुत से लोग योग के विभिन्न पहलुओं को वैज्ञानिक रूप से मान्यता दिलाने पर कार्य कर रहे हैं। सही अर्थों में, यही मार्ग है। हम योग की शक्ति का उपयोग न केवल स्वस्थ और प्रसन्न रहने के लिए करें, बल्कि अपने और एक-दूसरे के प्रति दयाशील बने रहने के लिए भी करें।

हम योग की शक्ति का उपयोग मित्रता के सेतु, एक शांतिपूर्ण दुनिया और एक स्वच्छ, हरित और दीर्घकालिक स्थायी भविष्य के निर्माण के लिए करें। आइए हम सब मिलकर ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' के लक्ष्य को साकार करें।

सर्वे भवन्तु सुखिन:
सर्वे सन्तु निरामया:
सभी प्रसन्न रहें, सभी स्वस्थ रहें। ▪

मोदी जी ने विकास को जमीन पर उतारा - सहस्त्रबुद्धे

श्री नरेंद्र मोदी जी 2014 में जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने सुशासन और विकास के साथ ''सबका साथ-सबका विकास'' के मंत्र को आगे बढ़ाया। 2019 में पुनः जनता का विश्वास अर्जित कर श्री नरेंद्र मोदी जी प्रधानमंत्री बने तो ''सबका साथ- सबका विकास के साथ सबका विश्वास'' के मंत्र को साकार किया। 15 अगस्त को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इस मंत्र में सबका प्रयास को जोड़ा। क्योंकि भारतीय जनता पार्टी की यह सोच है कि विकास सिर्फ सरकारी प्रयास से संभव नहीं है, इसमें जनता की भागीदारी जरूरी है। जनता की भागीदारी के कारण विकास धरातल पर उतर सकता है। बीते 9 वर्षों में मोदी सरकार ने विकास और सुशासन को जमीन पर उतारा है। आज जनता इसे अनुभव कर रही है। केंद्र सरकार ने देशहित और जनहित में क्रांतिकारी निर्णय लिए पिछले 9 वर्षों में केंद्र सरकार ने देशहित और जनहित में क्रांतिकारी निर्णय लिए है। पूर्ववर्ती सरकारों ने जो गलतियां की उनका सुधार किया है।

मोदी सरकार ने कश्मीर से धारा 370 हटाने का दमदार निर्णय लिया, वही तीन तलाक का कानून बनाकर मुस्लिम बहनों को राहत दी है। एयर स्ट्राइक और सर्जिकल स्ट्राइक से आतंकवाद पर अंकुश लगा है वही मोदी जी के नेतृत्व में सांस्कृतिक अभ्युदय की शुरुआत हुई है। अयोध्या में श्री राम मंदिर बन रहा है। जहां तक वंचितों के विकास की बात है तो हमारे देश में वंचितों के विकास पर राजनीति हुई लेकिन किसी भी सरकार ने ठोस कदम नहीं उठाये। मोदी सरकार में मुद्रा योजना के माध्यम से छोटे और गरीब तबके के व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने का काम हो रहा है।

अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के बच्चे मुख्यधारा से जुड़े इसके लिए एकलव्य विद्यालय खोले जा रहे हैं। मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने बाबा साहब अंबेडकर जी की स्मृतियों को पंच तीर्थ के रूप में विकसित किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जवाबदेही का वातावरण निर्मित किया पहले की सरकारें अपने काम और नीतियों को लेकर जवाबदेही से बचती थी, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने अब देश में जवाबदेही का वातावरण निर्मित किया है। बड़े-बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर के काम को लेकर केंद्र सरकार के प्रगति कार्यक्रम में प्रधानमंत्री जी स्वयं विकास कार्यों-परियोजनों की समीक्षा तो करते ही हैं साथ ही जिस प्रदेश में परियोजना चल रही है वहां की सरकार और अधिकारियों से चर्चा करते हैं। राज्यों में चल रहीं केंद्र की विकास परियोजनाएं तय समय-सीमा में पूरी हो इस बात की भी चिंता प्रधानमंत्री जी करते है। उपेक्षित वर्ग तक विकास पहुंचाकर उनका आत्मविश्वास बढ़ाया। सरकार की योजनायें पहले भी बनती थी लेकिन पात्र व्यक्तियों तक पहुंच नहीं पाती थी। पहले की सरकारों में इंदिरा आवास जैसी अनेक योजनाएं थी, लेकिन गरीब को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिलता था। आज मोदी सरकार में प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ हर गरीब तक पहुंचा है।

सौभाग्य योजना, उज्जवला योजना, नल जल योजना, आयुष्मान भारत योजना, सुकन्या समृद्धि योजना जैसी सारी योजनाओं का क्रियान्वयन नीचे तक हो रहा है। आज डीबीटी के माध्यम से सुपात्र लोगों को योजनाओं का शत प्रतिशत लाभ पहुंच रहा है। उपेक्षित वर्ग तक की चिंता मोदी सरकार ने की है। 9 वर्षों में पीड़ित, शोषित और उपेक्षित वर्ग तक सरकार की योजनाएं और विकास पहुंचा है जिससे इस

मोदी सरकार ने कश्मीर से धारा 370 हटाने का दमदार निर्णय लिया, वही तीन तलाक का कानून बनाकर मुस्लिम बहनों को राहत दी है।

एयर स्ट्राइक और सर्जिकल स्ट्राइक से आतंकवाद पर अंकुश लगा है वही मोदी जी के नेतृत्व में सांस्कृतिक अभ्युदय की शुरुआत हुई है। अयोध्या में श्री राम मंदिर बन रहा है।

वर्ग का आत्मविश्वास बढ़ा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का समाज कल्याण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण

- ई-श्रम पोर्टल पर 28 करोड़ से अधिक असंगठित श्रमिकों ने पंजीकरण करवाया है, इसमें पुरुषों की तुलना में महिला पंजीकृत सदस्यों का प्रतिशत अधिक है, इस पोर्टल पर अब तक पंजीकृत सदस्यों में 52.75 प्रतिशत महिलाएं और 47.25 प्रतिशत पुरुष है।
- प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत देश के ग्रामीण क्षेत्रों में 2.25 करोड़ से अधिक घरों का निर्माण किया जा चुका है।
- स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत देश भर में 11 करोड़ से अधिक घरेलू शौचालय बनाए गए है।
- 12 करोड़ से अधिक घरों को नल के कनेक्शन दिए जा चुके हैं, जिसके बाद ग्रामीण भारत में अब 61.71 प्रतिशत घरों के पास नल कनेक्शन है।
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के तहत 3.32 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को पंजीकृत किया जा चुका है, और 3.05 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को मातृत्व लाभ के रूप में 13,766 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया जा चुका है।
- ई-ग्राम स्वराज एप्लीकेशन के तहत पंचायती राज संस्थाओं पर फोकस करते हुए 2,46,762 ग्राम पंचायतों की जियोटैगिंग कर, 1,90,311 ग्राम पंचायतों की प्रोफाइल तैयार की गई है।
- अगस्त 2022 में, आयुष्मान भारत-पीएमजेएवाई के एक भाग के रूप में ट्रांसजेंडर समुदाय से संबंधित लोगों के लिए एक समावेशी और समग्र स्वास्थ्य देखभाल पैकेज की घोषणा की गई।
- अनुसूचित जनजातियों के लिए विकास कार्य योजना (डीएपीएसटी) के तहत, जनजातीय मामलों के मंत्रालय के अलावा 41 मंत्रालयों/विभागों आदिवासी विकास परियोजनाओं के लिए हर साल अपने कुल योजना आवंटन से 4.3 से 17.5 प्रतिशत धन आवंटित कर रहे है।
- प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना के तहत मार्च 2023 तक कुल 1247.38 करोड़ रुपये ट्रांसफर किये जा चुके है।
- आकांक्षी जिला कार्यक्रम के एक भाग के रूप में 49 प्रमुख प्रदर्शन संकेतकों के आधार पर 112 जिलों को विकसित किया जा रहा है।
- ई-श्रम पोर्टल की स्थापना के बाद अब असंगठित श्रमिकों को मौजूदा सामाजिक कल्याण योजनाओं का लाभ मिल रहा है। इसके अलावा, ट्रांसजेंडर समुदाय से संबंधित लोगों के लिए देश भर में 12 'गरिमा गृह' स्थापित किये गये हैं जो उन्हें आश्रय प्रदान कर रहे हैं।
- इसी तरह, देश की 2.7 लाख से अधिक दिव्यांग आबादी को लाभावन्वित करने वाली 3954 परियोजनाओं को दीन दयाल विकलांग पुनर्वास योजना के तहत 508.34 करोड़ रुपये की सहायता अनुदान जारी की गयी है। इसके अलावा 1.84 लाख दिव्यांग छात्रों को 2022 तक 556.37 करोड़ रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की गई है।
- देश में पहली बार पोषण ट्रेकर के तहत गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए राज्य के भीतर और बाहर एक आंगनवाड़ी केंद्र से दूसरे में प्रवास की सुविधा प्रदान की गई है।
- प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना के तहत 2,900 से अधिक गांवों का चयन किया गया है, जिसमें 53 लाख से अधिक परिवारों के जीवन में बदलाव लाया गया है, जिसमें अनुसूचित जाति के 2.6 करोड़ से अधिक लोग शामिल हैं। वर्तमान सामाजिक कल्याण मॉडल स्वभाविक रूप से समावेशी हैं और समग्र सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करते हुए सभी समुदायों को इसका लाभ प्रदान कर रहा है।

मोदी सरकार ने दीनदयाल जी की धारणा को साकार किया प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने पंडित दीनदयाल जी की धारणा 'अंतिम व्यक्ति तक पहुंच' के सिद्धांत को पूरा करने की दिशा में अथक प्रयास किया है। ऐसे ही अधिक जवाबदेही और पारदर्शिता के साथ सार्वजनिक वितरण प्रणाली और सुदृढ़ हुई है। प्रत्येक योजना के लिए समर्पित पोर्टल के साथ-साथ 'आधार' प्रणाली में लाए गए सुधार, समाज कल्याण योजनाओं के लाभ लक्षित लाभार्थियों तक सफलतापूर्वक पहुंचा रहे हैं। पीएम उज्जवला योजना, वन नेशन-वन राशन कार्ड, जल जीवन मिशन, पीएम आवास योजना, पीएम ग्राम सड़क योजना और स्वच्छ भारत मिशन जैसी योजनाओं और पहलों के साथ इस क्षेत्र में परिवर्तन की शुरुआत सभी को प्रभावित कर रही है और भारत की लोक कल्याणकारी राज्य की छवि को मजबूती दे रही है। 11.66 करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों के लिए स्वच्छ पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की 2014 में सत्ता में आने के बाद भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार ने देश में सामाजिक कल्याण के परिदृश्य को बदल दिया है। 2014 से पहले, ग्रामीण स्वच्छता कवरेज केवल 38.7 प्रतिशत था। हालांकि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने 2019 में खुले में शौच मुक्त स्थिति को हासिल कर एक नयी कामयाबी को लिखा। इसी तरह 2014 से पहले 19.43 करोड़ ग्रामीण परिवारों में से 3.23 करोड़ घरों में ही नल कनेक्शन उपलब्ध थे। इसके विपरीत 4 अप्रैल, 2023 तक 11.66 करोड़ से अधिक (60 प्रतिशत) ग्रामीण परिवारों को नल कनेक्शन के दायरे में लाया गया और उनके लिए स्वच्छ पेयजल आपूर्ति को सुनिश्चित किया गया। आवासीय योजनाओं का मामला भी कुछ अलग नहीं था। 2014 से पहले, ग्रामीण परिवेश के लिए चलने वाली आवासीय योजना चिंता जनक रूप से धीमी गति से बढ़ रही थी। लेकिन, प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के अंतर्गत प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत 2.25 करोड़ से अधिक घरों का निर्माण किया हैं, जिनमें से 60 प्रतिशत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों को दिये गये हैं। जनजातीय मंत्रालय के आवंटन में 190 प्रतिशत की वृद्धि हुई एनडीए शासन के तहत सामाजिक कल्याण से संबंधित मंत्रालयों के लिए बजटीय आवंटन में भी जबरदस्त वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए जनजातीय मामलों के मंत्रालय के लिए आवंटन में लगभग 190 प्रतिशत की वृद्धि हुई। मंत्रालय के लिए आवंटन 2013-14 में 4295.94 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023-24 में 12461.88 करोड़ रुपये हो गया, जो 2.9 गुना वृद्धि को दर्शाता है। इसी तरह, सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग के बजट में 1.9 गुना की वृद्धि हुई, जो 91 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि को दर्शाता है, यह 2013-14 के 6725.32 करोड़ रुपये से बढ़कर नवीनतम बजट में 12,847.02 करोड़ रुपये हो गया है। 2014 के बाद जनजातीय क्षेत्रों में 523 एकलव्य आवासीय विद्यालय स्वीकृत किए भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के तहत कार्यात्मक सामाजिक कल्याण की हर योजना को भी शामिल किया गया है। स्वच्छ भारत मिशन-ग्रामीण के दूसरे चरण में 1,685,545 गांवों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की व्यवस्था है और 2,45,064 गावों में तरल अपशिष्ट प्रबंधन की सुविधाएं हैं, जो ओडीएफ स्थिति को प्राप्त करने की दिशा में काम कर रहे हैं। मिशन पोषण 2.0 के तहत देश भर में 4 लाख से अधिक पोषण वाटिकाओं का विकास किया गया है और 1.10 लाख औषधीय पौधे

लगाए गए है। इस तरह बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना के सफल क्रियान्वयन के बाद भारत का लिंग अनुपात 918 (2014-15) से बढ़कर 937 (2020-21) हो गया है और इसमें 19 अंकों का सुधार हुआ है। 2021-22 में राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के अंतिम चरण में 695 पंचायत भवन का निर्माण करवाया गया और 6 लाख से अधिक हितधारकों को प्रशिक्षित किया गया था। इसके अलावा, योजना के तहत 1619 पंचायत शिक्षण केंद्र बनाए गए। ऐसे ही मैला ढोने वालों के पुर्नवास एवं स्व-रोजगार योजना (एसआरएमएस) के एक भाग के रूप में, सभी 58,098 चिन्हित लोगों को 40,000 रुपये की एक मुश्त नकद सहायता का भुगतान किया गया है। जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा के लिए 690 एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों में से 523 को 2014-15 के बाद स्वीकृत किया गया है। सरकार के कार्यों को सोशल मीडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाए कार्यकर्ता आज सोशल मीडिया समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

सोशल मीडिया ही हमारा मुख्य हथियार और आधार है, जिससे हम सरकार और संगठन की आवाज को आम जन तक पहुंचा सकते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार ने सभी वर्गो के लिए योजनाएं बनायी है। सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं को सभी प्लेटफार्म पर सक्रिय होकर सरकार की उपलब्धियों, योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के 9 वर्षों में हर क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल की है। यह उपलब्धियां हर बूथ और हर व्यक्ति तक पहुंचे। इसमें हमारे सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। विपक्षी दलों के पास न नेतृत्व है ओर न नीतियां है। उनका एक मात्र कार्य सिर्फ सरकार के बारे में जनता में भ्रांतियां फैलाना है। सोशल मीडिया कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है कि वे सरकार की योजनाओं के तथ्य और तर्कों के साथ जनता को हकीकत बताएं। देश में हर क्षेत्र में हुआ विकास, स्थापित हो रहे नए-नए कीर्तिमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में हर क्षेत्र में विकास हुआ है। पूर्व में जिस सूखाग्रस्त बंजर जिले में कभी खेती की कल्पना नहीं की जा सकती थी वहां पर सरकार की योजना एवं नहरों के माध्यम से हर खेत तक पानी पहुंचाने का काम भाजपा सरकार ने किया है, जिसका नतीजा यह देखने को मिल रहा है कि उपज का क्षेत्र नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। ▪

यूपीए के 6 लाख सरकारी नौकरियों की तुलना में मोदी शासन में 9 लाख सरकारी नौकरियां

मोदी सरकार ने 2014 से 2023 तक के अपने शासन के 9 वर्षों में क्रमशः यूपीए सरकार के शासन की 2004 से 2013 तक की इसी अवधि की 6 लाख सरकारी नौकरियों की तुलना में 9 लाख सरकारी नौकरियां प्रदान कीं हैं। मोदी सरकार के नौ वर्षों के दौरान रोजगार सृजन में काफी वृद्धि हुई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किए गए छह रोजगार मेलों के दौरान, बड़े पैमाने पर भर्ती शुरू की गई है और प्रत्येक अभियान में 70,000 से अधिक नियुक्ति पत्र जारी किए गए हैं। इनमे तीन प्रमुख सरकारी एजेंसियों - संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा 2004-13 के दौरान 45,431 की तुलना में 2014-23 के दौरान 50,906 उम्मीदवारों की भर्ती की गई, जबकि कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) ने यूपीए द्वारा की गई 2,07,563 भर्तियों के मुकाबले 4,00,691 उम्मीदवारों का चयन किया और क्षेत्रीय भर्ती बोर्ड (आरआरबी) ने 2004 से 2013 की अवधि की 3,47,251 भर्तियों की तुलना में 2014 - 2023 के दौरान 4,30,592 युवाओं को सरकारी नौकरी दी है ।

प्रधानमन्त्री मोदी ने युवाओं को केवल सरकारी नौकरियों पर निर्भर नहीं रहने के अतिरिक्त बल्कि रोजगार पैदा करने के लिए भी जागृत किया है। कभी मात्र 350 स्टार्ट-अप्स थे जो अब बढ़कर 1 लाख हो गए हैं; जैसे कि जब अरोमा मिशन शुरू किया गया, तब तक दक्षिण पूर्व एशिया से अगरबत्ती का आयात किया जा रहा था, लेकिन उसके बाद स्वदेशी बांस की खेती को संशोधन द्वारा भारतीय वन अधिनियम 1927 के दायरे से बाहर कर दिया गया, और फिर बांस उद्योग को वैश्विक पहचान हेतु अवसर प्रदान करने के लिए आयात शुल्क बढ़ाकर 25 प्रतिशत कर दिया गया, ऐसे ही खादी आज एक लाख करोड़ रुपये के कारोबार के साथ एक डिजाइनर आइटम बन गई है। ''अन्यथा आप वैश्विक चुनौतियों, वैश्विक बेंचमार्क और वैश्विक मापदंडों से बाहर रहेंगे, इसलिए भी एक तरह से प्रधानमंत्री हमें विजन 2047 के लिए तैयार कर रहे हैं ताकि हम शेष विश्व का नेतृत्व कर सकें ।'' ▪

9 वर्षों का काम 55 साल के कामकाज पर भारी है

मोदी जी के 9 वर्ष भारत गौरव, गरीब कल्याण और भारत को सुरक्षित करने के 9 वर्ष हैं

नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा विगत नौ वर्षों में लिए गए कई महत्वपूर्ण निर्णयों की वजह से भारत वैश्विक फलक पर एक सशक्त राष्ट्र के रुप में उभरा है।

जहाँ मोदी सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों से देश का लोकतंत्र मजबूत हुआ है साथ ही, गरीब, वंचित, महिलाएं, युवा और किसान सशक्त हुए हैं तथा देश की आर्थिक शक्ति बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर, कांग्रेस के नेता विदेशी धरती पर देश विरोधी बयान देकर भारत की छवि धूमिल करने की कोशिश में लगे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पिछले नौ वर्षों में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं, जिसकी विश्वभर में चर्चा हो रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने किसानों, मछुआरों और पशुपालकों के जीवन में बड़े बदलाव के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए और उसे कार्यान्वित भी किए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी को स्वतंत्र मंत्रालय का दर्जा दिया है, जो भारतीय ग्रामीण अर्थतंत्र की रीढ़ की हड्डी है।

श्री नरेन्द्र मोदी जी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने 108 नम्बर के एम्बुलेंस का शुभारंभ किया था, जिससे गुजरात के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों को बहुत सुविधा मिली थी। उस समय गुजरात में अबोल पशुओं के लिए ऐसी व्यवस्था होने की खुब चर्चाएं हुई थीं। इसी तर्ज पर प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्होंने मोबाइल वेटनरी यूनिट की शुरुआत की। भारत सरकार के खर्च पर सभी राज्यों को मोबाइल वेटनरी यूनिट दी गयी, जबकि पशुपालन राज्य सूची में आता है। इसके अलावा, केन्द्र सरकार द्वारा हर महीने मोबाइल वेटनरी यूनिट पर होने वाले खर्च का 60 प्रतिशत राशि वहन किया जाता है, ताकि यह प्रोजेक्ट निरंतर चलता रहे।

वैश्विक महामारी कोरोना आने से एक साल पहले ही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत सरकार के व्यय पर देश के सभी पशुओं का वैक्सीनेशन कराया। मुंह पका, खुर पका आदि

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पिछले नौ वर्षों में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए हैं, जिसकी विश्वभर में चर्चा हो रही है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने किसानों, मछुआरों और पशुपालकों के जीवन में बड़े बदलाव के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए और उसे कार्यान्वित भी किए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी को स्वतंत्र मंत्रालय का दर्जा दिया है, जो भारतीय ग्रामीण अर्थतंत्र की रीढ़ की हड्डी है।

बीमारियों के संक्रमण से पशुओं को बचाने के लिए पशुधन के वैक्सीनेशन पर 13 हजार करोड़ रुपये व्यय किये गए। देश में पशुओं के वैक्सीनेशन की चर्चा कम होती है जबकि कोरोना वैक्सीनेशन की खूब चर्चाएं होती है क्योंकि देश में पहली बार नौ महीने के अन्दर दो-दो स्वदेशी वैक्सीन बने और 220 करोड़ डोज मुफ्त लगवाकर देशवासियों को सुरक्षित किया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मत्स्यपालन मंत्रालय बनाने के बाद एक योजना शुरु की जिसका नाम प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना है। इस योजना पर 20 हजार करोड़ रुपये व्यय किए गए, जबकि वर्ष 1947 से 2014 तक भारत सरकार द्वारा मत्स्य पालन विभाग का व्यय महज 3,680 करोड़ रुपये रहे।

देश में 8 हजार किलोमीटर का समुद्र तटीय क्षेत्र है और मछुआरे बंधु समुद्र में 200 किलोमीटर अंदर तक अपना कार्यकलाप करते हैं। ईईजेड (अनन्य आर्थिक क्षेत्र) के माध्यम से फिश लैंडिंग सेंटर, हार्बर आदि विकसित करने के लिए 8 हजार करोड़ रुपये के अतिरिक्त फंड दिए गए। राज्य सरकारों के माध्यम से इस कार्य को आगे बढ़ाया जा रहा है। इससे मत्स्य उत्पादन एवं निर्यात बढ़े और मछुआरों की आय में भी बढ़ोत्तरी हुई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मत्स्य पालकों और पशुपालकों को भी किसान क्रेडिट कार्ड -केसीसी- की सुविधा उपलब्ध करायी, जबकि इससे पहले सिर्फ किसान को ही केसीसी मिलती थी।

लोकतंत्र का पहला लोकतांत्रिक घटक ग्राम पंचायत होता है, जिसे ध्यान में रखते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पिछले नौ वर्षों में ग्राम पंचायतों को मजबूत करने की दिशा में अभूतपूर्व कदम उठाए हैं। प्रधानमंत्री जी ने देश में पहली बार ग्राम पंचायत को भारत सरकार से सीधा जोड़कर उसे आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है। भारत सरकार द्वारा आज हरेक ग्राम पंचायतों को डीबीटी के माध्यम से हर महीने राशि पहुंचाई जा रही है। इसके लिए उन्हें राज्य सरकार के अधिकारियों के पास चक्कर नहीं लगाने पड़ते हैं।

पिछले नौ सालों में ग्राम पंचायतों को डीबीटी के माध्यम से लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपये ट्रांसफर हुए हैं। ग्राम पंचायतों का सशक्तिकरण जी-20 की बैठक में देखा गया, जब कच्छ के एक ग्राम पंचायत के पंचायत भवन में एक ऐसा कांफ्रेंस हॉल दिखा, जो सभी आधुनिक तकनीकी सुविधाओं से लैस है।

ग्रामीण क्षेत्र में अंतिम छोर तक विकास पहुंचाने के नारे को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सबका साथ-सबका विकास के नारे के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया और उसे आगे बढ़ा भी रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपने दूरदर्शी नजरिए से शासकीय एवं प्रशासकीय कार्यों में हस्तक्षेप करते हैं ताकि देश के हर भूभाग में रहने वाले लोगों को सुविधाएं मिल सके और वहां का विकास हो। इसका बेहतरीन उदाहरण है- आकांक्षी जिले की अवधारणा। जिसके माध्यम से पिछड़े जिलों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना है।

देश में ऐसे कई जिले पाए गए,जो राष्ट्रीय एवं राजकीय विकास के पैरामीटर में पीछे छूट गए थे। इन जिलों को विकास की मुख्यधारा में लाने के लिए मंत्रियों को आकांक्षी जिले में जाना होता है और वहां की समस्या को दूर करते हुए उनको विकास की मुख्यधारा से जोड़ना होता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आकांक्षी जिले के साथ बार्डर विलेज की अवधारणा लाकर देश के दूर-दराज एवं दुर्गम गांवों में विकास पहुँचाने का काम किया है ताकि, वहां से लोगों का पलायन न हो और लोगों को सभी सुविधाएं मिल सकें। लद्दाख के एक सीमावर्ती गांव में सिर्फ एक घर है, बार्डर विलेज की अवधारणा के तहत उस घर में नल से जल पहुंचाने के लिए बोरवेल लगाया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने पिछले नौ सालों में 29.7 लाख करोड़ रुपए डीबीटी के माध्यम से विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को दिए। जबकि देश के एक पूर्व प्रधानमंत्री की व्यथा थी कि जब वे दिल्ली से एक रुपये भेजते हैं,तो लाभार्थी तक वह पहुँचते पहुँचते 15 पैसा रह जाते हैं। आज योजनाओं की राशि केन्द्र सरकार जब भेजती है, तो शत प्रतिशत लाभार्थियों को मिलता है।

नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के माध्यम से 10 करोड़ से अधिक पात्र किसानों को हर साल 6,000 रुपये उनके खाते में डीबीटी के माध्यम से पहुंचाए जा रहे हैं।

2014 तक देश में अच्छा मोबाइल होने का अर्थ था कि वह इम्पोर्टेड ही होगा, लेकिन पिछले साल 9 बिलियन डॉलर का मोबाइल फोन देश से निर्यात किया गया। आज देश में 200 कंपनियां मोबाईल हैंडसेट बना रही है। भारत में सिर्फ एप्पल कंपनी में एक लाख से ज्यादा लोग काम कर रहे हैं। देश में 106 यूनिकार्न हैं और 90 हजार से अधिक स्टार्टअप।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार के प्रति आम जनता का विश्वास बढ़ा है और आम जन में आत्मविश्वास बढ़ा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ऐसे कई निर्णय लिए जिससे दुनिया में भारत की साख बढ़ी, भारत सशक्त हुआ और दुनिया के विकसित देशों का भारत के प्रति देखने का नजरिया बदल गया। यूक्रेन युद्ध में जब वहां फंसे भारतीय बच्चों को निकाला गया, तो वहां से बच्चे तिरंगा लेते हुए निकले। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की वजह से भारतीय तिरंगे की आनबान शान सिर्फ देश में हीं नहीं है, बल्कि विश्व के फलक पर भी बढ़ी है।

2004-2014 की अवधि में, यूपीए सरकार के कार्यकाल में, एक के बाद घोटाले हुए। इस दौरान, सामरिक, आर्थिक मोर्चे पर देश कमजोर हुआ। देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था से जनता का विश्वास धीरे धीरे कम होते चला गया। यूपीए कार्यकाल में, देश की जनता को अनुभव होने लगा कि बाड़ ही खेत को खा रही है।

देश की जनता ने 30 साल बाद, एक पार्टी को पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने का अवसर दिया। 2014 में केंद्र की सत्ता की बागडोर सँभालने के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सामान्य नागरिक के जीवन को ऊपर उठाने का संकल्प लेते हुए काम करने शुरु किए। नीति बनी ''राष्ट्र प्रथम'' और इसी को ध्यान में रखते हुए भारत के हित मे नीति और योजनाएं बनाई गईं और उसे कार्यान्वित भी किया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की उपलब्धियों को यदि एक पंक्ति में विश्लेषित किया जाए तो यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि देश की संवैधानिक संस्थाओं से जनता का जो विश्वास खत्म-सा हो गया था, मोदी सरकार ने पिछले नौ सालों में उस विश्वास को पुर्नस्थापित करने में सफलता प्राप्त की है।

यूपीए कार्यकाल में लगभग 69 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों के पास शौचालय की सुविधा नहीं थी। देश में 18 हजार गांव बिना बिजली के थे। देश में लगभग 4 करोड़ परिवारों के घरों में बिजली नहीं थी। देश के 4 करोड़ परिवार चिन्हित किए गए, जिनके पास घर नहीं थे। देश में करोड़ों परिवार के पास बैंक खाते नहीं थे, उन्हें बिचौलिए पर निर्भर होना पड़ता था। सामान्य लोगों के लिए जो योजनाएं चलायी जाती थी उसका आकार इतना छोटा होता था कि उसका समाज पर व्यापक असर दिखायी नहीं पड़ता था।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इन व्यवस्थाओं को बदला, जो आज सामान्य जन के जीवन में दृष्टिगोचर हो रहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने 2019 में हरेक घर में स्वच्छ पेयजल

पहुंचाने की बात कही थी। उस वक्त तक देश के मात्र 16 प्रतिशत घरों में ही नल से शुद्ध पेयजल पहुंचने की व्यवस्था थी। देश के 84 प्रतिशत घरों की माताओं एवं बहनों को बाहर जाकर पेयजल लाना पड़ता था। वे सिर पर मटका रखकर जल लाने के लिए अभिशप्त थीं।

प्रधानमंत्री जी ने हरेक घर तक पेयजल पहुंचाने की व्यवस्था का संकल्प लेकर काम शुरु किया। 2019 से अब तक 9 करोड़ घरों में नल से पेयजल पहुंचाया जा चुका है, जबकि इससे पहले 3.23 करोड़ घरों तक ही नल से पेय जल पहुंचता था।

2004 से 2014 के कालखंड में जलशक्ति एक अलग मंत्रालय नहीं था, अलग अलग मंत्रालयों में इस विषय पर चर्चा होती थी। इस कारण यह विषय इतना जटिल बन जाता था कि उसकी व्यापक उत्पादकता नहीं मिल पाती थी। 2004 से 2014 तक पेयजल, स्वच्छता, सिंचाई और उसके आधुनिकीकरण को लेकर वाटर सेक्टर के बजट पर 26,278 करोड़ रुपये व्यय हुए थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बीते नौ साल में इस मद में 2.80 लाख करोड़ रुपये खर्च हुए, जो 10-11 गुना अधिक है।

2019 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इंटीग्रेटेड मिनिस्ट्री फॉर वाटर सब्जेक्ट बनाकर जल शक्ति मंत्रालय नाम दिया। विगत पांच सालों में सबसे ज्यादा बजट आवंटित होने वाले देश के पांच मंत्रालयों में से एक जल शक्ति मंत्रालय भी है। सिर्फ इस साल वर्ष 2023-24 में 97,277 करोड़ रुपये जलशक्ति के लिए आवंटित किये गए हैं। यूपीए सरकार के दस सालों में जितनी राशि इस मद में खर्च हुई थी उससे चार गुनी राशि सिर्फ एक साल में आंवटित की गयी है।

प्रत्येक व्यक्ति के घर तक योजना का लाभ पहुंचे, इस लक्ष्य को लेकर 2024 तक हरेक घर में नल से शुद्ध पेयजल पहुँचाने का लक्ष्य रखा गया है। पिछले साढ़े तीन से चार साल के प्रयासों से गुजरात, पंजाब, बिहार, तेलंगाना में शत-प्रतिशत घरों में नल से जल पहुंच रहा है। केन्द्र शासित प्रदेश, पुदुचेरी, अंडमान निकोबार, दादरा नगर हवेली, दमन और दीव में भी शत-प्रतिशत घरों में नल से जल पहुंच रहा है। 2023 तक कई राज्यों में यह आंकड़ा छूने का लक्ष्य लेकर काम हो रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने निर्देश दिया है कि सिर्फ पीने का पानी पहुंचाना ही नहीं, बल्कि उसकी गुणवत्ता भी सुनिश्चित की जाए और इस दिशा में भी काम किया जा रहा हैं। प्रत्येक जिला और अनेक प्रखंडों में एनएबीएल से मान्यता प्राप्त लेबोरेट्री बनायी गयी है, जो पेजयल की गुणवत्ता टेस्ट करती है। कोई भी आम आदमी एक नॉमिनल शुल्क पर यहाँ पेयजल की गुणवत्ता टेस्ट करा सकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि गांव की माताओं एवं बहनों से यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वे कस्बे में जाकर पीने का पानी टेस्ट करा पाएंगी। इस कारण 20 लाख से ज्यादा महिलाओं को प्रशिक्षित किया। उनको स्टार्टअप से निर्मित हैंडी डिवाईस फिल्ड टेस्टिंग किट दी गयी, जिसके माध्यम से पानी की गुणवत्ता टेस्ट की जा सके।

आज देश में डेढ़ करोड़ से ज्यादा पानी के सैंपल टेस्ट हुए हैं। उस टेस्ट के आधार पर तुरंत कार्रवाई की जाती है। इसके लिए एक एसओपी भी बनायी गयी है।

इसी दिशा में ग्राम पंचायत और महिला सशक्तिकरण को ध्यान में रखकर पेयजल स्वच्छता की जिम्मेदारी ग्राम समिति को दी गयी है। 5.24 लाख गांवों में विलेज वाटर एडं सैनिटेशन कमेटी का निर्माण किया गया है, जिसमें 10 से लेकर 21 सदस्य होते हैं और इसमें 50 प्रतिशत महिलाएं ही होती हैं। इससे भी ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण हुआ है। सेंसर बेस्ड वाटर टेस्टिंग बनाने के लिए स्टार्टअप हेकेथान से क्षमता हासिल की गयी है, पिछले डेढ़ साल में 200 स्थानों पर इसका पायलट टेस्ट किया गया है और अब इसे अन्य स्थानों पर भी आगे बढ़ाया जा रहा है।

मोदी सरकार में 11 करोड़ शौचालय बने हैं। यूनाईटेड नेशन के सस्टेनेबल डेव्लपमेंट गोल की अपेक्षा थी कि 2023 तक हर व्यक्ति तक शौचालय पहुंचे। यह लक्ष्य भारत ने 2019 में ही प्राप्त कर लिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि सिर्फ यही हमारे लिए लक्ष्य नहीं था, बल्कि यह एक पायदान था। इससे ऊपर, खुले में शौच से मुक्त परिकल्पना के साथ संपूर्ण स्वच्छता पूरा करना है। इसके तहत, सॉलिड वेस्ट, प्लास्टिक वेस्ट, फेकल वेस्ट आदि प्रबंधन की क्षमता बनाने की दिशा में काम किये जा रहे हैं।

इस योजना को प्रधानमंत्री आवास योजना के साथ जोड़ा गया। देश के 53 प्रतिशत गांव खुले में शौच से मुक्त हो गए हैं। देश में 853 प्लास्टिक वेस्ट प्रबंधन की यूनिट बनायी गयी है। 1.20 लाख वेस्ट कलेक्शन सेंटर और सेग्रीगेशन शेड बनाए गए हैं। 684 बायोगैस प्लांट 207 जिलों में बनाए गए हैं, जहाँ से उत्पादित गैस पेट्रोलियम कंपनियां एक निश्चित दर पर खरीद लेती हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आजादी के अमृतकाल में हर जिले में 75 अमृतसरोवर निर्माण करने की योजना बनायी। देश के 700 जिलों में अमृतसरोवर बनाने की पहल की गयी। लगभग 50 हजार अमृतसरोवर बनाने की परिकल्पना की गयी थी, किन्तु अब तक देश में लगभग 56 हजार अमृतसरोवर बन चुके हैं। इसके अलावा लगभग 56 हजार अमृतसरोवर निमार्णाधीन है।

भूगर्भ जल की खोज के लिए देश के 25 लाख स्क्वायर किलोमीटर की मैपिंग की गयी। हेलीबांड तकनीक का इस्तेमाल भी किया गया। इसके तहत भूगर्भ कहां मिल सकता है और उसे किस तरह से रिचार्ज किया जा सकता है, इसकी जानकारी पंचायत स्तर पर देने के लिए काम हो रहे हैं।

देश में सिंचाई के अनेक प्रोजेक्ट रुके हुए थे, जिन पर वर्षों से काम नहीं हो रहे थे। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना लाकर उसे गति प्रदान की गयी। इसके लिए 106 परियोजनाओं को चिन्हित किया गया। आज उन परियोजनाओं में से 53 परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं। परियोजना पूर्ण होने से 24.80 लाख हेक्टेयर भूमि को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो रही है। इसके अतिरिक्त, लगभग 60 लाख एकड़ की सिंचाई क्षमता सृजित की है, जिससे देश के लाखों किसानों के जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है।

छोटे एवं लघु सिंचाई से जुड़ी 6,213 योजनाओं को कार्यान्वित किया गया है। पिछले नौ सालों में इस मद में 13 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा व्यय किया गया है। तालाबों के संरक्षण और उसे पुनर्जीवित करने के लिए 2 हजार करोड़ की लागत से 228 परियोजनाओं पर काम किया गया है। अमेरिका और चीन के बाद भारत दुनिया के तीसरा सबसे बड़ा बांधों वाला देश है। देश के 25 प्रतिशत बांध 75 साल की उम्र प्राप्त कर चुके हैं। देश के बांधों के रख रखाव एवं उसके संरक्षण को लेकर कोई आपरेटीव कानून नहीं था। संसद में डैम सेफ्टी का कानून बनाया गया। आज देश के सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों में इस कानून के अनुरुप एसडीएसओ और एसडीएसई कमेटी की स्थापना की गयी है, जिससे बांध निरीक्षण की प्रक्रिया सुगम और सहज हुई है।

नमामि गंगे परियोजना के लिए समन्वित प्रयासों से काम हो रहे हैं। 436 प्रोजेक्ट में से 248 प्रोजेक्ट पूरे हो चुके हैं। आज गंगा नदी का जल अधिकांश क्षेत्रों में जैसे होना चाहिए वैसा हो गया है। यूनाईटेड नेशन ने पिछले दशक में रिस्टोरेशन की प्रविष्टियाँ मांगी थी, उसमें नमामि

गंगे की भी प्रविष्टि भेजी गयी थी, जिसमें दुनिया के टॉप टेन इनिशिएटिव में इसे पांचवें स्थान पर लिस्ट किया गया। अब गंगा से बढ़कर गंगा की सहायक नदियों पर भी काम शुरु किया गया है, जिसका परिणाम तीन-चार साल में दिखने लगेगा। गंगा के अलावा 6 अन्य बड़ी नदी बेसिन पर काम करने के लिए प्रोजेक्ट तैयार किये जा रहे हैं। साथ ही, 1,500 करोड़ रुपये की लागत से अन्य नदियों की सफाई पर भी काम हो रहे हैं।

जल जीवन मिशन को लेकर नोबेल पदक विजेता माइकल क्रेमर ने अपने एक अध्ययन में पाया कि जल जीवन मिशन से प्रतिवर्ष 1.36 लाख लोगों का जीवन बचाया जा सकेगा। आज 3.60 लाख करोड़ रुपये से दुनिया का सबसे बड़ा पेयजल कार्यक्रम देश में चल रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 9 वर्ष भारत गौरव के 9 वर्ष हैं, गरीब कल्याण के 9 वर्ष हैं, भारत उत्कर्ष के 9 वर्ष हैं और भारत को सुरक्षित करने के 9 वर्ष हैं।

कांग्रेस की सोनिया-मनमोहन सरकार के 10 वर्षों में लगभग 12 लाख करोड़ रुपये के घपले-घोटाले हुए लेकिन मोदी जी की सरकार पर भ्रष्टाचार का एक भी आरोप नहीं लगा। देश में सभी क्षेत्रों में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। चाहे अर्थव्यवस्था हो, गरीब कल्याण हो, सामाजिक कल्याण हो, इंफ्रास्ट्रक्चर डेव्लपमेंट हो, विदेश नीति हो, देश को सुरक्षित बनाना हो या देश की संस्कृति को सहेजना हो - हर क्षेत्र में श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने आगे बढ़ कर काम किया है।

चार-चार पीढ़ियों ने देश पर शासन किया लेकिन इसके बावजूद न तो गरीबों के बैंक एकाउंट खुलवा पाए, न गरीबों के घर बनवा पाए और न ही उस घर में गैस, बिजली, पानी और शौचालय का प्रबंध ही कर पाए। ये सारे काम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किये। पीएम किसान सम्मान निधि के तहत प्रधानमंत्री जी देश के किसानों को हर साल छः-छः हजार रुपये की आर्थिक सहायता दे रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने धारा 370 को खत्म किया। अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर रामलला का भव्य मंदिर बन रहा है। काशी में श्री काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का निर्माण हुआ। सोमनाथ मंदिर का विकास हुआ जबकि कांग्रेस की सरकार में हमारी आस्था के केंद्रों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश की संस्कृति और गौरव को सम्मान दिलाया है। आज प्रधानमंत्री जी दुनिया में जहाँ भी जाते हैं, वहां मोदी-मोदी के नारे लगते हैं, उनका स्वागत करने के लिए लोग लालायित रहते हैं। यह केवल मोदी जी का सम्मान नहीं है बल्कि समग्र राष्ट्र के लोगों का सम्मान है।

तीन तलाक की कुप्रथा खत्म की, भाजपा की कई राज्य सरकारें कॉमन सिविल कोड लाने की बात कर रही है।

जनता के उत्साह और भाजपा को मिल रहे समर्थन से यह स्पष्ट है कि देश की जनता ने 2024 में भी श्री नरेन्द्र मोदी जी को लगातार तीसरी बार देश का प्रधानमंत्री बनाने का निर्णय ले लिया है। बीते 9 वर्षों में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार के 9 वर्षों में 7 नए आईआईटी, 7 नए आईआईएम, 15 नए एम्स, 390 विश्वविद्यालय और लगभग 700 मेडिकल कॉलेज खुले। एक ओर कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों का आजादी के बाद के 55 सालों का काम और दूसरी ओर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार के 9 वर्षों का काम है। मोदी सरकार के काम 55 साल के कामकाज पर भारी हैं। विगत 9 वर्षों में नेशनल हाइवे में लगभग 54 हजार किलोमीटर जोड़ा गया है। बीते 9 साल में देश में लगभग 74 नए हवाई अड्डे बने हैं। कांग्रेस की मनमोहन सिंह की सरकार में केवल 5 शहरों में ही मेट्रो थी, आज मेट्रो रेल का विस्तार 20 शहरों तक हुआ है। 17 वंदे भारत ट्रेन चल रही है।

स्टार्टअप की बात हो, नई ड्रोन नीति हो, अंतरिक्ष के लिए नई नीति बनानी हो, रोजगार बढ़ाना हो, उद्योग बढ़ाना या इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देना हो - जो कांग्रेस के एक परिवार की चार पीढ़ियों की सरकारों में नहीं हुआ, वह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 9 वर्षों में संभव हुआ है। इससे भी बढ़ कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूरी दुनिया में भारत का सम्मान बढ़ाया है। कोई कहता है - मोदी इज द बॉस, कोई सम्मान से उनके पैर छूता है तो कोई उनसे उनका ऑटोग्राफ माँगता है। कोई मोदी जी से मिलने के लिए समय मांगता है। यह सम्मान भारत को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिलाया है। आज भारत का परचम पूरी दुनिया में लहरा रहा है। बीते 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को बाह्य एवं आंतरिक रूप से सुरक्षित किया है। पहले की सरकारों में पाक प्रेरित आतंकियों को भारत में हमला करने की आदत पड़ गई थी। कांग्रेस की सरकारों के दौरान जब आतंकी हमले होते थे तो सरकार के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती थी। मनमोहन सरकार में हिम्मत नहीं थी कि कुछ कर सके। पाक प्रेरित आतंकवादियों ने उरी और पुलवामा में भी हमला किया लेकिन वे भूल गए कि इस बार भारत में श्री नरेन्द्र मोदी जी प्रधानमंत्री हैं। प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से हमारे जवानों ने सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक करके दुश्मनों का सफाया किया। आज दुनिया मानती है कि भारत अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए किसी भी कदम तक जा सकता है। धारा 370 को हटाने की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने निर्णायक कदम उठाते हुए धारा 370 को खत्म किया और जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पिछले नौ साल में गरीबों के लिए कई काम किए हैं। हर गरीब को पक्का घर दिया है। उज्जवला योजना के तहत 9.5 करोड़ गरीब महिलाओं को गैस सिलिंडर दिया है। प्रधानमंत्री जी ने 10 करोड़ से ज्यादा गरीबों के घर में आजादी के 70 साल बाद पहली बार शौचालय पहुंचाया है। सौभाग्य योजना के माध्यम से हर घर में बिजली पहुंची है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने देश के लगभग 55 करोड़ लोगों को आयुष्मान भारत का कवच दिया है। प्रधानमंत्री जी ने धान की एमएसपी 1,400 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़ा कर 2,060 रुपये तक पहुंचाया है। प्रधानमंत्री जी ने 220 करोड़ मुफ्त कोविड-रोधी डोज से देशवासियों को सुरक्षित किया है।

प्रधानमंत्री जी ने आजादी के अमृतकाल में नया संसद भवन देश को समर्पित किया है और उसमें भारतीय संस्कृति और इतिहास की विरासत के प्रतीक सेंगोल को स्थापित किया है। देश की जनता ने 2024 में लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के हाथों में देश की बागडोर सौंपने का मन बना लिया है।

आजादी के अमृत काल में प्रधानमंत्री जी ने देश के नए संसद भवन का लोकार्पण किया और इसमें हमारी विरासत और संस्कृति के प्रतीक चोल साम्राज्य की परंपरा के सेंगोल को स्थापित किया है।

श्री नरेन्द्र मोदी सरकार देश में दो डिफेंस कॉरिडोर बना रही है। इससे ढेर सारा निवेश आएगा। पूरा भारत कह रहा है कि कश्मीर हमारा है लेकिन कांग्रेस धारा 370 को हटाने के विरोध में थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 5 अगस्त 2019 को कलम के एक झटके से धारा 370 को निरस्त कर दिया और आज जम्मू-कश्मीर भारत के अभिन्न अंग के रूप में प्रतिस्थापित हुआ है।

जब देश में कांग्रेस की सरकार थी तब तत्कालीन रक्षा मंत्री कहते थे कि सीमा पर सड़क निर्माण नहीं करेंगे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नौ साल में 13,525 किलोमीटर बार्डर रोड बनायी है जबकि ग्रामीण सड़कें 3.28 लाख किमी बनायी गयी हैं।

पिछले नौ सालों में प्रधानमंत्री आवास योजना,

देश के 80 करोड़ लोगों को पांच किलो मुफ्त अनाज देना, उज्जवला योजना, उजाला योजना, स्वच्छता अभियान के तहत शौचालय निर्माण, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना सहित अनेक योजनाओं से गांव, गरीब, वंचितों, पीड़ितों, दलित महिलाओं, युवाओं और किसानों का सशक्तिकरण किया जा रहा है।

ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री श्री कैमरुन ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सामने कहा था कि यह भारत का लोकतंत्र ही है जहाँ एक चाय वाले को देश का प्रधानमंत्री बना दिया गया है। वह दिन दूर नहीं, जब भारतीय मूल का व्यक्ति ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बनेगा। आज भारतीय मूल के श्री ऋषि सुनक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री हैं।

ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने कहा कि मोदी यू आर द बॉस। यह कहना कोई छोटी घटना नहीं है। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री अपने देश से ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में आकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मिलते हैं। पापुआ न्यू गिनी के राष्ट्रपति प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को एयरपोर्ट पर पांव छूकर अभिवादन करते हैं, यह कोई छोटी घटना नहीं है।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाईडेन ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से कहा कि आपका ऑटोग्राफ चाहिए। अमेरिका में हमसे ज्यादा लोकप्रियता आपकी है। आपके सम्मान में अमेरिका में राजकीय डिनर का आयोजन किया है, लोग शिकायत कर रहे हैं कि उन्हें भी डिनर में आमंत्रित किया जाए ताकि वे भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से मिल सकें। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारतीय संस्कृति की परम्परा सेंगोल को जब देश के नए संसद भवन में स्थापित कर उसे दंडवत प्रणाम किया, तब राहुल गांधी ने उसका मजाक उड़ाया। राहुल गांधी को मालूम होना चाहिए कि उनके नाना जी पं. नेहरु ने उस सेंगोल को गोल्डेन स्टीक बना दिया था। यह हमारे देश के लिए शर्म की बात है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्रधर्म और सेवा के प्रतीक उसी सेंगोल को चोल डायनेस्टी के मठों द्वारा पूजा कराकर लोकसभा अध्यक्ष के आसन के बगल में स्थापित किया है।

वर्षों तक ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा नहीं दिया गया। ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा देने का कार्य भी श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने किया। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सिख भाइयों के हित में जितने कार्य किये, उतने किसी ने नहीं किये। विपक्ष का काम केवल सिख भाइयों को गुमराह करना रह गया है। श्री श्री हरमंदिर साहिब को फॉरेन कंट्रीब्यूशन लेने का पहले कोई प्रावधान नहीं था लेकिन प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से एफसीआरए रजिस्ट्रेशन ग्रांट हुआ और अब श्री श्री हरमंदिर साहिब को विदेशी योगदान मिलना शुरू हो गया है। पहले लंगर पर भी टैक्स लगता था, इसे टैक्स फ्री करने का काम प्रधानमंत्री जी ने किया है। आजादी से लेकर 70 सालों तक डेरा नानक साहब और करतारपुर साहिब का दर्शन करने का अवसर हमारे सिख भाइयों को नहीं मिल पाया था, लेकिन प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से यह कॉरिडोर बन कर तैयार हुआ और सिख भाइयों को डेरा नानक साहब और करतारपुर साहिब का दर्शन करने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। सिख भाइयों के आंसू बह-बह के सूख गए लेकिन कांग्रेस की सरकारें 1984 के दंगों के दोषियों को सजा नहीं दिलवा पाई। प्रधानमंत्री जी ने एसआईटी बनाई और दोषियों को सलाखों के पीछे डालने का कार्य किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने डीबीटी के माध्यम से अब तक लगभग 25 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि बिना किसी बिचौलिए के सीधे लाभार्थियों के बैंक एकाउंट में ट्रांसफर की है और अब तक लगभग दो लाख करोड़ रुपये के लीकेज को रोका है। देश में गरीबी में लगभग 10 प्रतिशत की कमी आई है और अत्यधिक गरीबी की दर भी एक प्रतिशत से कम पर बनी हुई है।

कांग्रेस महंगाई का रोना रोती है लेकिन उन्हें पता नहीं कि भारत में महंगाई दर दुनिया के बड़े-बड़े देशों से भी कम है। दुनिया भारत को ब्राइट स्पॉट कहती है। भारत का ग्रोथ रेट दुनिया में सबसे अधिक है और महंगाई दर काफी कम। वर्ल्ड बैंक, आईएमएफ और मॉर्गन स्टेनली जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं भी मानती है कि भारत की अर्थव्यवस्था काफी मजबूत है। आज भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में पांचवें स्थान पर है। ▪

खादी ने रचा इतिहास

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' को खादी और ग्रामोद्योग ने नई ऊंचाइयों पर पहुंचाते हुए विश्व के सामने बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर प्रस्तुत की है। स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार खादी और ग्रामोद्योग के उत्पादों का कारोबार 1.34 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया है। तुलनात्मक रूप से देखें तो पिछले 9 वित्त वर्षों में, ग्रामीण क्षेत्र के कारीगरों द्वारा बनाये गए स्वदेशी खादी उत्पादों की बिक्री में 332 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। वित्त वर्ष 2013-14 में जहां खादी और ग्रामोद्योग उत्पादों का कारोबार 31154 करोड़ रुपये था, वहीं वित्त वर्ष 2022-23 में यह बढ़कर 1,34,630 करोड़ रुपये के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया, जो अब तक की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है। इसी तरह से ग्रामीण क्षेत्र में 9,54,899 नये रोजगार का सृजन कर, नया मील का पत्थर स्थापित किया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश और विदेश में हर मंच से खादी का प्रचार-प्रसार किया है, जिससे आज खादी लोकप्रियता के नये शिखर पर पहुंच चुकी है। आज खादी उत्पादों की गिनती विश्व के सबसे विश्वसनीय ब्रांडों में होती है। वित्त वर्ष 2013-14 से 2022-23 में खादी और ग्रामोद्योग के प्रोडक्ट्स के उत्पादन में जहां 268 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वहीं बिक्री ने सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए 332 प्रतिशत के आंकड़े को छू लिया है। यह इस बात का प्रमाण है कि 'मेक इन इंडिया', 'वोकल फॉर लोकल' और 'स्वदेशी उत्पादों' पर देश की जनता का भरोसा बढ़ा है। केंद्र की 'मोदी सरकार' के 9 वर्षों के कार्यकाल में, 'स्वावलंबन से समृद्धि' के ऐसे कीर्तिमान स्थापित हुए हैं जिसने खादी को नई संजीवनी दी है। ▪

देश विकास के पथ पर लगातार अग्रसर

बीते 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार अगर देश में बड़े बदलाव ला सकी है, तो उसका आधार है टारगेटेड डिलीवरी और लॉस्ट माइल डिलीवरी।

यही मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियां भी हैं। मोदी सरकार ने हर काम की समय सीमा तय की और हर योजना का 100 प्रतिशत लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच सके, यह सुनिश्चित किया।

पिछले 60 सालों में, 2014 तक, देश में रेलवे का विद्युतीकरण महज 21 हजार किलोमीटर हुआ था, लेकिन पिछले नौ सालों में ही 37 हजार किलोमीटर का विद्युतीकरण हो चुका है। इससे यात्रियों की सुविधाएं बढ़ीं, ट्रेन की स्पीड बढ़ी और पर्यावरण में भी सुधार हुआ। 2014 तक औसतन 3-4 किलोमीटर प्रतिदिन नए रेल ट्रैक बिछाए जाते थे। आज देश में 14 किलोमीटर प्रतिदिन नए रेल ट्रैक बिछाए जा रहे हैं। पिछले साल 5,200 किलोमीटर नए रेल ट्रैक बिछाए गए। देश में बढ़ती आबादी के अनुसार रेल की स्पीड, ट्रेनों की संख्या और क्षमता को बढ़ाना बहुत जरुरी है, ताकि यात्रियों को सुविधाएं मिल सकें। यात्रियों को वेटिंग लिस्ट वाली टिकट की जगह कन्फर्म टिकट मिल सके, ताकि उनकी यात्रा सुखद हो सके। ट्रेन से माल ढुलाई की सुविधा मिल सके ताकि अधिक से अधिक वस्तुओं की ढुलाई ट्रेन से हो सके। रेल से सामान ढुलाई होने पर लागत कम आता है, इससे महंगाई नियंत्रण भी होता है। चाहे रेलवे स्टेशन हों, प्लेटफार्म हों, टॉयलेट हों, रेल डब्बे या फिर यात्री विश्रामालय हों, सभी जगह साफ सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया है।

यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए रेलकर्मियों के व्यवहार से लेकर तकनीक के प्रयोग में अभूतपूर्व बदलाव आया है। तकनीकी सुविधाएं बढ़ाते हुए एप के माध्यम से टिकट बुक कराने से लेकर अन्य जानकारियां देने की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। विश्वस्तरीय ट्रेन वंदे भारत चलायी जा रही है। दुनिया में सिर्फ आठ देशों की क्षमता है कि 160-180 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से चलने वाली ट्रेन डिजाईन कर उसे बना सके। अब भारत में भी ऐसी ट्रेनें बनने लगी हैं। देश के सभी राज्यों में वंदे भारत ट्रेनें चलायी जाऐंगी। दस साल पहले तक देश में कोई भी नई चीज आती थी, तो वह पूर्वोत्तर के राज्यों में सबसे देर से पहुंचती थी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पूर्वोत्तर राज्यों में नयी चीजें भी अन्य प्रदेशों के समकक्ष उपलब्ध करायी जा रही हैं। देश के अन्य हिस्सों के समकक्ष पूर्वोत्तर में भी रेल का विकास हो रहा है। नार्थ ईस्ट, साउथ, केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, यूपी में वंदे भारत ट्रेनें शुरु हो चुकी हैं। जून 2023 में हर राज्य में वंदे भारत ट्रेनें चलना शुरु हो जाऐंगी। इसके अतिरिक्त, राज्य के अंदर और शहरों को जोड़ने की योजना पर काम किया जा रहा हैं। 2024 के मध्य तक देश के 200 शहरों को वंदे भारत ट्रेनों से जोड़ दिया जायेगा। अब हरेक सप्ताह एक वंदे भारत ट्रेन बनकर बाहर आ रही है। अब नयी फैक्टरी में वंदे भारत ट्रेन का उत्पादन शुरु होगा, उसके बाद हर तीसरे दिन एक वंदे भारत ट्रेन बनकर बाहर आएगी। इसके बाद दो सप्ताह में पांच वंदे भारत ट्रेन के उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।

एक वंदे भारत ट्रेन में लगभग 30 हजार सेमीकंडक्टर चिप्स लगते हैं। वंदे भारत ट्रेन एक तरह से कंप्यूटर ऑन व्हीलस है। यह गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व एवं दिशा निर्देश में हमारे इंजीनियर्स ने ट्रेन की बहुत ही अच्छी डिजाईन विकसित की है।

देश के 270 रेलवे स्टेशन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का बनाने के लिए काम चल रहा है, जिसमें से 18 स्टेशन का काम पूरा होने की स्थिति में है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सेवा भावना के साथ रेल सेवा में बहुत बड़ा परिवर्तन कर उसे एक नया स्वरूप प्रदान किया है। आज 800 करोड़ लोग प्रतिवर्ष रेल यात्रा और 30 करोड़ लोग प्रतिवर्ष हवाई जहाज से यात्रा करते हैं। एक समय में टेलीकॉम एक ऐसा सेक्टर था,जहां घोटाले की ही चर्चा होती थी। आज टेलीकॉम सेक्टर वाईब्रेंट, इनोवेटीव सेक्टर की तरह उभरकर आया है। वर्तमान में देश का टेलीकॉम सेक्टर दुनिया का सबसे सस्ता वायस कॉल और डेटा सेवा दे रहा है। इसका यह प्रभाव

पड़ा कि समाज के गरीबों तक तकनीक सहज तरीके से पहुंची। तकनीक अब सिर्फ अमीरों के हाथों तक सीमित नहीं रही। यह समाज के विकास के लिए बहुत जरूरी थी। इसके लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए, टेलीकॉम को स्वाथ्यवर्धक प्रतियोगिता की स्थिति में लाया गया और कई तरह के इनीसिएटीव लिए गए। यूपीए सरकार ने एक अच्छी कंपनी बीएसएनएल को लगभग बंद होने के कगार पर पहुंचा दिया था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी बीएसएनएल को उस स्थिति से निकालने के लिए चट्टान की तरह खड़े रहे। इसके परिणाम स्वरूप बीएसएनएल ने इस साल लगभग 1500 करोड़ रुपये ऑपरेटिंग मुनाफा कमाया है। बीएसएनएल ने लगभग दो लाख ग्राम पंचायतो तक आप्टिकल फाइबर पहुंचाया है। बीएसएनएल ने आप्टिकल फाइबर के लगभग एक लाख नये कनेक्शन दिये हैं। एक समय टेलीकॉम तकनीक के लिए भारत दुनिया पर निर्भर करता था। मेक इन इंडिया एवं आत्मनिर्भर भारत के कारण दुनिया के विकसित देशों में भारत से अब टेलिकॉम तकनीक का निर्यात हो रहा है।

मोबाइल टावर के ऊपर एक रेडियो उपकरण लगता है, जो सबसे काम्प्लेक्स होता है। अब वह काम्प्लेक्स रेडियो उपकरण भारत में डिजाईन और मैनुफैक्चर हो रहा है और अमेरिका जैसे देश को निर्यात किया जा रहा है। यह भारत की तकनीकी क्षमता का विकास है। एक समय 4G और 5G के एंड टू एंड टेक्नोलॉजी चार पांच देशों के पास ही थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के स्पष्ट विजन के कारण आज देश में 4G और 5G के एंड टू एंड टेक्नोलॉजी को विकसित किया गया है। इसे विकसित करने में कई बाधाएं आईं, लेकिन प्रधानमंत्री जी ने उन बाधाओं को दूर कराया और काम को आगे बढ़ाया। पहले एक साथ एक लाख कॉल को टेस्ट किया गया, उसके बाद 50 लाख कॉल को टेस्ट किया गया। पिछले दिसम्बर में उस पर एक साथ एक करोड़ कॉल करके टेस्ट किया गया। जी-7 मीटिंग में जब इस तकनीक के विकास पर चर्चा हुई तो अब हर देश इसे भारत से खरीदना चाहता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दूरदर्शिता से नई नीतियाँ और योजनाएं बनाकर काम किया जा रहा है। इसकी वजह से अगले एक-डेढ़ साल के अंदर दुनिया के संपन्न एवं विकसित देशों में भारत की टेलीकॉम टेक्नोलॉजी के उपकरण लगेंगे। 2014 में टेलीकॉम टॉवर लगाने में औसतन 300 दिन लगता था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जो रिफार्म किए हैं, उसकी वजह से अब सात दिनों के अन्दर ही एक टावर लगाये जा रहे हैं। कांग्रेस नेता उपहास उड़ाया करते थे कि क्या हाईवे पर भी कोई मोबाइल से पेमेंट कर पायेगा? आज जापान जैसे तकनीकी रुप से विकसित देश ने भारत के डिजिटल पेमेंट की तारीफ की है।

डिजिटल इंडिया आज जन जन तक पहुंचा है। श्री नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा यदि दिल्ली से ग्रामीण माता या ग्रामीण किसान के लिए 100 रुपये भेजे जाते हैं, तो सौ के सौ रुपये सीधे उनके एकाउंट में पहुंच जाते हैं। डिजिटल पेमेंट से अब देश बिचौलियों के भ्रष्टाचार से मुक्त हुआ है। देश आज मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक मैनुफैक्चरिंग में छलांग लगा रहा है। आज से नौ साल पहले देश में इलेक्ट्रॉनिक मैनुफैक्चरिंग लगभग नगण्य थी, लेकिन आज 2.11 बिलियन डॉलर का इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों का निर्यात हो रहा है। 11 बिलियन डॉलर के मोबाइल फोनों का निर्यात हुआ है। आज सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक मैनुफैक्चरिंग मे 25 लाख लोग जॉब कर रहे हैं। एक-एक फैक्ट्री में 20-25 हजार लोग एक साथ काम कर रहे हैं जिनमें 70 प्रतिशत महिलाएं हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हर सेक्टर में सुनियोजित तरीके से काम करके देश की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ किया है।

2004 में भारत की जीडीपी दुनिया के 10वें स्थान पर थी और 2014 में भी यही स्थिति थी। इन 10 सालों में देश का विकास जस का तस बना रहा, जो देश के लिए बहुत नुकसानदायक साबित हुआ। 2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार बनने के बाद, पिछले नौ सालों में देश की अर्थव्यवस्था विश्व में पांचवें स्थान पर पहुँच गई हैं। पूरा विश्वास है कि 2026 तक भारत की अर्थव्यवस्था चौथे स्थान पर और 2027-28 में तीसरे स्थान पर पहुँच जाएगी।

दीर्घकालिक विकास के लिए निरंतर चलने वाली विकास को चुनना पड़ता है, इसके लिए सुनियोजित तरीके से आगे बढ़ना होता है। शार्ट कट लगाने वाले राजनीतिक दल देश को नुकसान पहुंचाते हैं। पूरे देशवासियों में देश को ऊँचाई तक ले जाने की अपूर्व क्षमता है। इसके लिए कड़ी मेहनत, अच्छी नियत और सोच समझकर भविष्य को ध्यान में रखकर निर्णय लेने होंगे। विगत 9 वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भविष्य को ध्यान में रखकर ही निर्णय लिए हैं ताकि देश विकास के पथ पर लगातार अग्रसर रहे। ▪

गीता प्रेस को गांधी शांति पुरस्कार

वर्ष 2021 का गांधी शांति पुरस्कार गीता प्रेस, गोरखपुर को प्रदान किया जा रहा है। गांधी शांति पुरस्कार भारत सरकार द्वारा स्थापित एक वार्षिक पुरस्कार है। वर्ष 1995 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 125वीं जयंती के अवसर पर उनके आदर्शों के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप इस पुरस्कार की स्थापना की गई थी। यह पुरस्कार राष्ट्रीयता, नस्ल, भाषा, जाति, पंथ या लिंग के भेदभाव के बगैर सभी व्यक्तियों के लिए खुला है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में निर्णायक मंडल ने 18 जून, 2023 को विचार-विमर्श के पश्चात सर्वसम्मति से वर्ष 2021 के गांधी शांति पुरस्कार के लिए गीता प्रेस, गोरखपुर का चयन किया है। यह पुरस्कार गीता प्रेस, गोरखपुर को अहिंसक और अन्य गांधीवादी आदर्शों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जा रहा है। वर्ष 1923 में स्थापित गीता प्रेस विश्व में सबसे बड़े प्रकाशकों में से एक है। इसने 14 भाषाओं में 41.7 करोड़ पुस्तकों का प्रकाशन किया है, जिनमें 16.21 करोड़ श्रीमद भगवद गीता पुस्तकें शामिल हैं। इस संस्था ने राजस्व सृजन के लिए कभी भी अपने प्रकाशनों के लिए विज्ञापन नहीं लिए। गीता प्रेस अपने संबद्ध संगठनों के साथ जीवन के उत्तरोत्तर विकास और सर्वजन-कल्याण के लिए प्रयासरत है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने शांति और सामाजिक सद्भाव के गांधीवादी आदर्शों को बढ़ावा देने में गीता प्रेस के योगदान का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि गीता प्रेस को अपनी स्थापना के सौ वर्ष पूरे होने पर गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया जाना संस्थान द्वारा सामुदायिक सेवा में किए गए कार्यों की सराहना करना है। गांधी शांति पुरस्कार 2021, मानवता के सामूहिक उत्थान में योगदान देने के लिए गीता प्रेस के महत्वपूर्ण और अद्वितीय योगदान को मान्यता देता है, जो सच्चे अर्थों में गांधीवादी जीवन शैली का प्रतीक है। ▪

संविधान का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए

दत्तात्रेय होसबाले (सरकार्यवाह)

देश के इतिहास में कई लोगों ने उस समय आपातकालीन संघर्ष को एक दृष्टि से द्वितीय स्वतंत्रता संग्राम कहा है और आज भी कई बार लगता है, ये सही व्याख्या है। विदेशी शासन के खिलाफ एक लंबा संघर्ष हुआ, स्वतंत्रता आन्दोलन हुआ। लेकिन देश के अंदर के ही अपने लोगों ने संविधान के प्रावधान का दुरुपयोग करके, देश के लोगों की आवाज को दमन करने का और जयप्रकाश नारायण जैसे व्यक्ति को भी दमन करने का कार्य किया और सामान्य लोगों का दमन हुआ, इसलिए एक दृष्टि से द्वितीय स्वतंत्रता संग्राम कहना योग्य है। ये आपातकाल क्यों हुआ? देश में आपातकाल तब होता है, जब देश असुरक्षित है। कोई व्यक्ति या पार्टी असुरक्षित है, अस्थिर है, उसके लिए संविधान के प्रावधान का उपयोग या दुरुपयोग करना यह लोकतंत्र में कभी भी नहीं होना चाहिए।

''आपातकाल में संविधान प्रदत्त नागरिकों के मौलिक अधिकारों को रद्द कर दिया था। यही कारण है कि किसी भी प्रकार - भाषण, लेखन, अभिप्राय-के अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य, संगठन स्वातंत्र्य आदि नहीं हो सकते थे।''

48 वर्ष पहले के घटनाक्रमों को याद करना थोड़ा कठिन होता है, लेकिन आपातकाल और उसके विरुद्ध का संघर्ष ऐसा है, उसकी एक-एक घटना याद रखने वाली बात है। मैं उस समय बंगलूरु विश्वविद्यालय में एमए का विद्यार्थी था।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के प्रदेश स्तर के कार्यकर्ता के नाते मैं भी आंदोलन में सहभागी रहा। भ्रष्टाचार के विरोध में, बेरोजगारी समाप्त करने के लिए, शिक्षा पद्धति में परिवर्तन लाने के लिए एक संघर्ष का बिगुल बजा था तो मई के अंतिम सप्ताह तक देश के अंदर विद्यार्थी युवा संघर्ष समिति बनी थी और देश भर में जनता संघर्ष समिति और विद्यार्थी जन संघर्ष समिति, ऐसे दो आन्दोलन के मंच बने थे।

जून के महीने में तीन महत्वपूर्ण घटनाएं हुईं। इन तीनों का परिणाम आपातकाल लागू करने के रूप में हुआ। एक - जून आते-आते जेपी के नेतृत्व में आंदोलन देशव्यापी हो गया था, वह अत्यंत प्रखरता के चरम पर पहुँच गया था।

दूसरा - गुजरात में हुए चुनाव में इंदिरा कांग्रेस की घोर विफलता हुई, वह हार गईं। जून 12 को इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति जगमोहन लाल सिन्हा ने रायबरेली से इंदिरा गाँधी के लोकसभा चुनाव में जीत को निरस्त कर दिया। तीनों मोर्चे पर इंदिरा जी हार गयीं।

जून के महीने में तीन महत्वपूर्ण घटनाएं हुईं। इन तीनों का परिणाम आपातकाल लागू करने के रूप में हुआ। एक - जून आते-आते जेपी के नेतृत्व में आंदोलन देशव्यापी हो गया था, वह अत्यंत प्रखरता के चरम पर पहुँच गया था। दूसरा - गुजरात में हुए चुनाव में इंदिरा कांग्रेस की घोर विफलता हुई, वह हार गईं। जून 12 को इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति जगमोहन लाल सिन्हा ने रायबरेली से इंदिरा गाँधी के लोकसभा चुनाव में जीत को निरस्त कर दिया। तीनों मोर्चे पर इंदिरा जी हार गयीं।

एक है - न्यायायिक, दूसरा है - राजनीतिक क्षेत्र में चुनाव में, तीसरा - जनता के बीच। इस कारण उन्होंने इस एक्स्ट्रीम क्रम का उपयोग किया। 25 जून को रात्रि आपातकाल घोषित कर दिया। उन दिनों न मोबाइल, न टीवी, कुछ नहीं था। आज के जमाने के लोगों को उस समय की परिस्थिति को समझना आसान नहीं है। 50 साल पहले हिन्दुस्तान में टीवी नहीं था और कम्प्यूटर्स नहीं थे। ई-मेल और मोबाइल आज हैं उस समय नहीं था, तो न्यूज कैसे मालूम हुआ? बीबीसी और आकाशवाणी से घोषणा होते ही पता चला। हम लोगों को सुबह 06:00 बजे के न्यूज से समाचार मिला। संघ की शाखा में गांधी नगर, बंगलूर में मैं और

बाकी मित्र शाखा में थे, हमें शाखा जाते-जाते समाचार मिल गया। पार्लियामेंट कमेटी के काम के लिए अटल जी, आडवाणी जी, मधु दंडवते जी और एसएन मिश्रा जी बंगलूर आकर रुके थे। शाखा समाप्त होते ही हम लोग वहां गए और अटल जी, आडवाणी जी स्नान करके नीचे जलपान के लिए आ रहे थे। तो हमने कहा इमरजेंसी लागू हो गई। शायद उनको तब तक जानकारी भी नहीं थी या जानकारी होगी भी। उन्होंने पूछा, तो हमने कहा रेडियो में सुना। आडवाणी जी ने कहा, यूएनआई, पीटीआई को फोन लगाओ, फोन पर ही स्टेटमेंट देना है, इसका खंडन करने का। अटल जी ने कहा - क्या कर रहे हैं, वे बोले मैं स्टेटमेंट देता हूं। अपनी तरफ से वक्तव्य दे रहा हूं। अटल जी ने कहा - कौन छापने वाला है? अटल जी को पता चल गया था कि इमरजेंसी घोषित होते ही प्रेस सेंसर भी साथ-साथ हो गया है तो इसलिए स्टेटमेंट अगले दिन भी कोई छापने वाला नहीं है। थोड़े समय के अंदर पुलिस आ गई और अटल जी, आडवाणी जी, एस एन मिश्रा जी तीनों को पुलिस ने गिरफ्तार करके हाईग्रान पुलिस स्टेशन पर लेकर गए। उनके ऊपर मीसा लग गया। हम लोग वापिस गए और अंडरग्राउंड हो गए। हम लोग मीसा में वांटेड हैं, यह जानकारी मिलने पर भूमिगत हो गए थे। मैं दिसंबर तक भूमिगत रहा।

कुछ लोगों को डीआईआर और कुछ लोग मीसा एक्ट, ऐसे दो कानूनों में गिरफ्तार किया गया। डिफेंस ऑफ इंडिया रूल में कोर्ट में जाने का और वहां आरग्यू कर और शायद छूट भी जाने का प्रावधान था। मीसा में ऐसा कोई प्रावधान नहीं था। आपको चार्ज बताने की जरूरत भी नहीं। क्या गुनाह है और कोर्ट में जाने का तो कोई अधिकार नहीं था। सब प्रकार के फंडामेंटल राइट्स सस्पेंडेड होने के कारण मीसा में रहने वाले व्यक्ति को अंदर उनका क्या हुआ, घर के लोगों को भी पता चलना चाहिए.. ऐसा भी कोई प्रावधान नहीं था।

तब न फोन कर सकते थे, संपर्क भी नहीं कर सकते थे। इसलिए जनता के साथ, कार्यकर्ता के साथ संपर्क रखना, इसके लिए संघ और संघ प्रेरित संगठनों का जाल, हमारी घर-घर में संपर्क की पद्धति बहुत काम में आयी। घरेलू संपर्क की पद्धति दशकों से संघ और संघ प्रेरित संगठनों में है, उसका लाभ, आंदोलन में भी हुआ। मेरे पास बहुत ऐसे उदाहरण हैं। जैसे रवीन्द्र वर्मा जी बंगलूर आए थे तो उनको कहां रखना और पुलिस को पता ना चले, ऐसे उनको रेलवे स्टेशन से लेकर आना और सुरक्षित वापिस भेजना। ये काम अत्यंत गूढ़ता से हम लोग कर सके, उसका कारण है संघ की कार्यपद्धति के अंदर घर का संपर्क ।

दूसरी बात, क्या चल रहा है लोगों को ये पता नहीं चलता था, क्योंकि समाचार पत्र सेंसर के कारण केवल सरकार की अनुमति से छपने वाले समाचार छोड़कर बाकी कोई भी समाचार नहीं छापता था। कौन, कहां अरेस्ट हो गया, किसका क्या हुआ, कोई पता नहीं चलता था। तो इसलिए एक भूमिगत साहित्य छापने को पत्रकारिता का एक जाल, अपना नेटवर्क बनाने की बहुत सफल योजना बनी और उसका क्रियान्वयन हुआ। ये दूसरी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, अपने देश के इमरजेंसी के भूमिगत संघर्ष की।

हो. वे. शेषार्दी जी ने दक्षिण भारत के चार राज्यों में साहित्य प्रकाशन का नेतृत्व किया। उनका केंद्र बंगलूरु था। जगह-जगह पर प्रेस ढूंढकर रात को प्रेस में काम करना और प्रेस में काम करना तो आवाज नहीं आनी चाहिए। बहुत सावधानी रखनी पड़ती थी। दो पन्ने के, चार पन्ने के पत्र पत्रिकाएं छपवाना, उसमें न्यूज आइटम, देश के अन्यान्य भागों में क्या चल रहा है, इसके बारे में जानकारी इकट्ठा करना। ये जानकारी इकट्ठा कैसे करना? भूमिगत काम करने वाले अलग-अलग लोगों से, प्रवास करने वाले लोगों से लिखवाकर लाते थे। कुछ कार्यकर्ता इसके लिए ही प्रवास करते थे। वो एक दृष्टि से पत्रकार जैसे ही अंडरग्राउंड कार्य करते थे। उदाहरण के लिए कर्नाटक के चार जगह पर या महाराष्ट्र में अलग-अलग नाम से अंडरग्राउंड पत्रिकाएं छपती थीं। मराठी में, कन्नड़ में, तेलुगू में, हिंदी में... उस-उस राज्य में नाम भी अलग-अलग थे। दो प्रकार से छपती थी, एक प्रिंटिंग प्रेस, दूसरा साइक्लोस्टाइल करना। रातों-रात काम करते थे। रात भर काम करके एक-एक हजार प्रति निकालना। उसको सुबह साढ़े तीन-चार बजे से पांच बजे के बीच जाना और सड़क पर, घर के गेट के पास डाल देना आदि... आदि।

तीसरा है - जिन लोगों को अरेस्ट किया या पुलिस स्टेशन में, जेल में जिनके ऊपर अमानवीय दमन और हिंसा हुई या जेल में भी रहे। या जेल में रहे हिंसा भले ही नहीं हो, जेल में रहने के कारण कई लोगों के आजीविका पर असर हुआ और उनके घरों में, परिवारों में कमाई करने वाला नहीं है और वो जेल में हैं तो इस कारण जो परिस्थिति बच्चों के लिए, परिवार के लिए थी, उसको संभालने का और उन लोगों के योगक्षेम की व्यवस्था करने के लिए, ये बहुत बड़ा काम था। और चौथा सबसे महत्वपूर्ण संघर्ष करते हुए आपातकाल के विरुद्ध लोगों की आवाज खड़ा करने के लिए, सत्याग्रह करने के लिए जो योजना बनी उसको सफल बनाना। तो यह चार प्रमुख काम उन दिनों में बहुत ही अच्छी योजना से सफलता पूर्वक बना सके।

कई बार लगता है कि उस क्रूरता को भी याद करना क्या? संघ के तृतीय पूजनीय सरसंघचालक बालासाहब देवरस जी ने आपातकाल के पश्चात एक बहुत महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया था। अपने सार्वजनिक भाषण में कहा था - फॉरगिव एंड फॉरगेट। जो हो गया, हो गया। उसको भूल जाओ, उसको क्षमा करो। लेकिन देश के इतिहास में, जिस एक काले अध्याय के दौरान घोर दमन और अत्याचार हुआ वो इतिहास के पन्नों पर है। कई पुस्तकें इस विषय पर आई हैं। व्यक्तिगत तौर पर भी लोगों ने लिखा है और संगठनों ने भी साहित्य प्रकाशित किया है। इसलिए, नहीं भी बताएंगे तो भी वो है ही।

क्रूरता और अमानवीयता बहुत व्यापक प्रमाण में हुई। अपने देश में पुलिस-प्रशासन की व्यवस्था ऐसी बर्बरता दिखा सकती है, इसका एक अनुभव आपातकाल में हुआ। हाथ दोनों बांधकर ऊपर से खींचना और उस समय उनकी पीठ पर उनके पैर पर लाठी से मारना।

उस समय तीन प्रकार की क्रूरता हुई। एक जो अरेस्ट हुए उनके साथ लॉकअप में, पुलिस स्टेशन में क्रूरता हुई, उनको जेल भेजने से पहले। उस समय आंध्रप्रदेश (आज तेलंगाना) के एक कार्यकर्ता को कैंडल से शरीर पर लगभग सौ जगह जलाया गया, जबरन उनके मुंह से कुछ कहलवाने के लिए। किसी को नारियल के अंदर कीड़े रखकर नाभि के ऊपर बांध दिया गया। या पुलिस की भाषा में ऐरोप्लेन कहते हैं, गोली कहते हैं, चपाती कहते हैं, ये सब हिंसा के अलग-अलग प्रकार रहे। सीधा बिठाकर उसके ऊपर रोलिंग करना, इलेक्ट्रिक शॉक दो या पिन अंदर घुसा दो। इस प्रकार के भयानक अत्याचार किए।

लॉकअप में तीन दिन, चार दिन अमानवीय अत्याचार सहन करने वाले, जेल में आए लोगों का जेल में आने के बाद 10 दिन, 15 दिन तक उनकी मालिश करना, ये सब मैंने भी किया है। इन अमानवीय अत्याचारों से कुछ लोग जीवनभर विकलांग हो गए, कुछ लोगों को

जीवनभर किसी न किसी प्रकार की व्याधि हो गई। ऐसा हमारी आंखों के सामने हुआ। जिनके साथ ऐसा हुआ, उनके मुंह से किसी भी प्रकार के कोई अपशब्द नहीं आए, इस आंदोलन से दूर नहीं गए। या उनके घर के लोगों ने संगठन को नहीं छोड़ा। कर्नाटक में पुलिस स्टेशन के अंदर राजू नाम के एक व्यक्ति की हत्या हो गई। ऐसे लॉकअप में कई प्रकार की हिंसा देश भर में बहुत जगह पर हुई।

ओमप्रकाश कोहली जी दिल्ली में थे, जो राज्य सभा सदस्य रहे, विद्यार्थी परिषद के अखिल भारतीय अध्यक्ष भी रहे, सब जानते हैं कि ओमप्रकाश कोहली जी चलने में थोड़ा- सा दिव्यांग थे। दिल्ली की तिहाड़ जेल में उनको पुलिस ने लात मारी थी। लॉकअप में उनके साथ अत्यंत अपमान का व्यवहार किया। वो कॉलेज के प्रोफेसर थे। खड़े होना मुश्किल था। ऐसे व्यक्ति के साथ ऐसा किया। ऐसे देश भर में हुआ है।

बंगलूर में गायित्री करके एक महिला ने आपातकाल के खिलाफ सत्याग्रह किया। सत्याग्रह करने के बाद उनको अरेस्ट किया। जेल में ले गए। वो गर्भवती थी, वो सत्याग्रह करके आई थीं... लॉकअप में लेकर जाने के बाद उन्हें प्रसव वेदना हुई तो हॉस्पिटल लेकर गए। हॉस्पिटल में उनको पलंग पर सुलाया था और उनकी डिलीवरी के समय उनके दोनों पैरों को जंजीर से बांधा हुआ था। उन बातों को आज याद करने से अपने मन में अनावश्यक यातना होती है. गर्भवती महिला कहीं भाग जाएगी, ऐसा तो नहीं है और डिलीवरी हो गई तो उनको बांध कर रखने की क्या जरूरत थी?

उत्तर भारत में व्यापक प्रमाण में नसबंदी हुआ, पकड़-पकड़ कर की। उस समय की सरकार को, प्रशासन को चलाने वाली चौकड़ी थी। उसमें जो भी लोग थे, उन्होंने नसबंदी के कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए, देश के अंदर जनसंख्या नियंत्रण करने के लिए, जिस प्रकार आपातकाल का दुरुपयोग किया... वह घोर अमानवीय और मानवाधिकार के विरुद्ध के इतिहास के पन्नों पर हमेशा एक काला धब्बा है।

जेल में क्रिमिनल कैदी भी रहते हैं, उन लोगों को राजनीतिक कैदियों के खिलाफ उकसा कर झगड़ा करवा दिया, उनसे मारपीट करवाई। जेल के अंदर ऐसा जानबूझकर करवाने का प्रयत्न किया। झगड़े हो गए, बल्लारी जेल में लगभग 25 लोगों की हाथ की, पैर की हड्डी टूट गई। महीनों तक उनको अस्पताल में रखना पड़ा।

सामान्यतः जो टॉर्चर हुआ, अधिकतर टॉर्चर पुलिस लॉकअप में हुआ वो स्वयंसेवकों पर ही हुआ। इसके दो कारण हैं। एक - भूमिगत काम में सक्रिय स्वयंसेवक अधिक थे, इसलिए वही पकड़े गए। दूसरा - उनको लगता था कि इनसे बहुत जल्दी हम बुलवाएंगे। उदाहरण के लिए, अंडरग्राउंड लिटरेचर छपता था, पूछते थे - कहां छपता है। तो स्वयंसेवक बोलता नहीं था। टॉर्चर करने के बाद भी स्वयंसेवक के मुंह से शब्द नहीं निकलते थे। इसलिए उनका अधिक टॉर्चर हुआ।

लोकतंत्र, प्रजातंत्र के अंतर्गत ही अपने को संघर्ष करना चाहिए। संविधानात्मक ढंग से ही करना चाहिए। बंदूक उठा कर क्रान्ति नहीं करनी है। शस्त्र उठाकर, संघर्ष करके आपातकाल का विरोध करना गलत है। ऐसा समिति का स्पष्ट अभिप्राय था। लोगों को हिंसा के मार्ग पर नहीं लाना, यह स्पष्ट निर्देशित था। सत्याग्रह यानि कैसे... तो किसी भी सड़क के चौराहे पर या किसी जगह पर, बसस्टैंड पर, रेलवे स्टेशन पर, जितनी संख्या में हो सके उतनी संख्या में लोग आना। आपातकाल के विरोध में नारे लगाना, अपनी डिमांड के नारे लगाना। पुलिस आएगी पकड़ेगी, लेकर जाएंगे। सत्याग्रह करना, और यथा संभव साहित्य पर्चे लोगों को देना, क्योंकि कोई और रास्ता नहीं था। इसलिए सत्याग्रह के लिए जाते समय जेब में, थैली में पर्चे रखो, सबको दो।

इस आपातकाल को जनता ने स्वीकार नहीं किया है, यह लोकतंत्र के विरुद्ध है। लोकतंत्र का दमन हो गया है। इसलिए इसके विरुद्ध आवाज उठाना, समाज मरा नहीं है, ऐसा दिखाना, सत्याग्रह का यह बहुत बड़ा एक उद्देश्य था। जगह जगह पर लगभग 49 हजार से अधिक सत्याग्रही अरेस्ट हुए।

संघ ने सारे संघर्ष में, जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन में और बाद में आपातकाल के विरुद्ध संघर्ष में काम किया। इसलिए संघ का दमन करना, यह मुख्य बात होने के कारण अन्य 25 संगठन के साथ संघ को भी बैन कर दिया था। इसलिए संघ पर प्रतिबंध लगाना और संघ का दमन करना, यह सरकार के वरिष्ठों के, नेताओं के, प्रधानमंत्री का स्पष्ट उद्देश्य था। संघ का दमन करने के लिए स्वयंसेवकों की पुरानी-पुरानी सूची उनको मिली और कहीं किसी डायरी में मिल गयी या कार्यालय उन्होंने बंद करवाए।

कार्यालय पर छापेमारी की, कार्यालय पर ताला लगाया, कार्यालय के अंदर जो सूची मिली...तो कार्यकर्ताओं की सूची, गुरु दक्षिणा की सूची तो ऐसी सूची पकड़-पकड़ कर उन घरों में गए। घर पर बैठे व्यक्ति को भी ले गए, उनको संघ की व्यवस्था पद्धति का लाभ मिला। संघ के कार्यकर्ता सरकारी या कॉलेज में, बैंक में नौकरी में हैं तो दबाव डालकर उनको वहां सस्पेंड किया, व्यापारियों पर दबाव बनाया।

बहुत सारे स्वयंसेवक नित्य की शाखा में नहीं थे। कई वर्ष पहले वो शाखा के नित्य के काम में थे। किसी न किसी व्यक्तिगत कारण से, घर की कुछ कठिनाई के कारण नित्य शाखा के काम में नहीं होंगे। हमारे लिए गर्व का विषय है कि बहुत बड़ी संख्या में ऐसे स्वयंसेवक आपातकाल में भागे नहीं, दूर नहीं गए, उल्टा सक्रिय हो गए। उन्होंने कहा - देखो, हम स्वयंसेवक हैं। पुलिस को पता नहीं है क्योंकि हमारे नाम अभी सूची में नहीं है, इसलिए हमारे घर का उपयोग करिए। हमारे घर में भूमिगत कार्यकर्ता रुकें, भोजन करें, क्योंकि हमारे घर पुलिस के राडार में नहीं है। ये कहने की हिम्मत स्वयंसेवकों ने की, उन्होंने अपनी तरफ से हर प्रकार का सहयोग किया। दूसरे संगठन, दूसरी पार्टी... के लिए भी स्वयंसेवकों ने किया। सर्वोदय के दो कार्यकर्ताओं के घर में कर्नाटक में जब परिस्थिति अच्छी नहीं थी, संघ के स्वयंसेवकों ने उनकी व्यवस्था की। संघर्ष के लिए जो निधि चाहिए, वो भी स्वयंसेवकों ने समाज से इकट्ठा की।

किसी भी देश में लोकतंत्र जहां है, वहां लोक की आवाज को दमन करने का, कुचलने का कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हो सकता। और कुछ समय के लिए आप दमन कर सकते हैं। जैसे 20 महीने आपातकाल रहा, लेकिन दमन नहीं हो सकता। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोगों की आवाज हमेशा बुलंद रह सकती है, उसको बुलंद रहना चाहिए।

आपातकाल के विरुद्ध के संघर्ष क्यों सफल हुआ? क्योंकि लोगों को जागृत करने और संगठनात्मक नेतृत्व ने उस समय लोगों को योग्य मार्गदर्शन दिया। उस आंदोलन में विशेष कर विद्यार्थियों, युवाओं के आंदोलन से देश भर में एक परिवर्तन के लिए आंदोलन चला। इसलिए देश के नौजवान विद्यार्थी और नौजवान लोग देश समाज के बारे में जागृत रहकर अपनी आवाज उठाना, सही दिशा क्या है इसके बारे में निर्णय करते हुए एक प्रबल जनशक्ति की आवाज बनना, यह हमेशा उनकी ट्रेनिंग रहती है तो समाज के लिए हमेशा एक रक्षाकवच बनता है, आशादीप बनता है।

जेल में सुबह से शाम तक हम कैम्प जैसे चलाते थे। डीआईआर में जिनके केस चलते, वे 15 दिन या एक महीने में कई बार जेल से छूट जाते थे, बेल मिल जाती थी। मीसा में, न कोई चार्जशीट, न ही कोई कोर्ट,ऐसे चलता था। इसलिए मीसा में रहने वाले लोगों की जीवन शैली अलग थी। मीसा में रहने वाले लोग आए तो बाहर जाएंगे, कब जाएंगे कोई पता नहीं। जेल में अंग्रेजों के जमाने के कानून थे। उन दिनों वो कानून ही चलता था। स्वयंसेवकों ने जेल के अंदर उन कानूनों के खिलाफ भी संघर्ष किया, कानून के खिलाफ ज्ञापन देना, उसके खिलाफ सत्याग्रह करना, अंदर अनशन करना, ये सब किया तो इस कारण प्रशासन को कुछ कानून बदलना पड़े।

इसी बीच, सॉलिसिटर जनरल नीरेन डे ने सुप्रीम कोर्ट में आर्गुमेंट किया और उनके आर्गुमेंट को सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार भी कर लिया। उनका आर्गुमेंट था - मीसा के तहत लोगों को देश की सुरक्षा के लिए रखा है, उनके ऊपर कोई चार्जशीट नहीं और कब तक रहना है, इसकी कोई गारंटी नहीं है। They may end their life in jail. दूसरा आर्गुमेंट किया - यदि देश की सुरक्षा के लिए उनको जेल के अंदर ही शूट भी किया तो भी सरकार पर कोई अपराध नहीं है।

लोकसभा के सदस्य कामत ने कमेंट किया - इट इज नॉट अमेंडिंग द कांस्टीट्यूशन, इट इज नॉट मेंडिंग द कॉंस्टीट्यूशन, इट इज एंडिंग द कॉंस्टीट्यूशन।

सरकार ने संविधान के साथ क्या किया, इट वाज ऑलमोस्ट एंडिंग द कॉंस्टीट्यूशन। उन्होंने अमेंडमेंट किया, संविधान की प्रस्तावना में सेक्युलरिज्म और सोशलिज्म, दो शब्दों को जोड़ा। जो पहले नहीं थे। वो आज तक हैं। उस समय संविधान के साथ छेड़-छाड़ करने के भरपूर प्रयत्न किए गए। लोकसभा के पांच वर्ष के कार्यकाल को छह वर्ष किया, एक वर्ष ज्यादा कर दिया था। उन सारी चीजों को जनता सरकार आने के बाद फिर से संशोधन करके ठीक किया गया।

मेरा हमेशा कहना है - लोकतंत्र सुरक्षित है, अपने देश की संसदीय व्यवस्था, संविधान वगैरह के कारण। लेकिन उससे भी बढ़ कर जागृत समाज और उनको जागृत रखने के कार्य करने वाले समाज का गैर राजनीतिक नेतृत्व उनके जीवन की स्वच्छ, निःस्वार्थ और देश भक्ति की उनकी प्रखरता, यह यदि है तो समाज के लोग भी ऐसे लोगों के समर्थन में खड़े होते हैं। इसलिए हमेशा देश के लिए इस प्रकार का नेतृत्व समाज में हर क्षेत्र में रहना चाहिए, वह देश के लिए भरोसा है। ▪

अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर भारत का शानदार प्रदर्शन

यह तो एक पूर्णतः स्वतः स्थापित तथ्य है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत की अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हो रही है और तेजी से आगे बढ़ रही है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक वित्त वर्ष 2022-23 में भारत की जीडीपी ग्रोथ 7.2 प्रतिशत होगी। जितने भी विशेषज्ञों और प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेंसियों ने भारत की जीडीपी के संबंध में अपने अनुमान जारी किये थे, उन सभी अनुमानों से देश की जीडीपी ग्रोथ अधिक रही है। वर्तमान में भारत दुनिया में सबसे तेज गति से विकास करती हुई अर्थव्यवस्था है।

कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में भारत की अर्थव्यवस्था 'फ्रिजाइल फाइव' में थी जबकि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया की 'टॉप फाइव' में है। मॉर्गन स्टेनली की रिपोर्ट में श्री नरेन्द्र मोदी सरकार की जमकर तारीफ की गई है। अपनी रिपोर्ट में मॉर्गन स्टेनली ने कहा है कि 10 साल की छोटी अवधि में भारत ने मैक्रो और मार्केट आउटलुक में पॉजिटिव रिजल्ट के साथ ग्लोबल ऑर्डर में स्थान हासिल किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज का भारत 2013 वाला भारत नहीं है बल्कि उससे अलग है। आज भारत एशिया और ग्लोबल ग्रोथ में एक अहम् भूमिका निभाने को तैयार है।

'इंडिया इक्विटी स्ट्रैटेजी एंड इकोनॉमिक्सः हाउ इंडिया हैज ट्रांसफॉर्मेड इन लेस कम अ डिकेड', नाम से जारी मॉर्गन स्टेनली की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था में यह परिवर्तन एक दो कामों से नहीं हुए हैं बल्कि श्री नरेन्द्र मोदी सरकार द्वारा टैक्स रिफॉर्म, आधारभूत संरचना का विकास, इंटरनेट कनेक्शन, ब्रॉडबैंड, रिन्यूएबल एनर्जी, वन नेशन-वन टैक्स जीएसटी, डिजिटल ट्रांजेक्शन, रियल स्टेट रिफॉर्म, एफडीआई रिफॉर्म आदि उठाये गए कदमों से संभव हुआ है।

मॉर्गन स्टेनली की रिपोर्ट के अनुसार, 2016 में भारत में डिजिटल ट्रांजेक्शन 4.4 प्रतिशत था जो सात सालों में बढ़ कर आज लगभग 76.1 प्रतिशत हो गया है। मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर 5.5 प्रतिशत से बढ़ा है तथा निर्यात दोगुना हुआ है। बिजनेस स्टैंडर्ड के मुताबिक 2030 तक भारत का एक्सपोर्ट 73 बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगा। मॉर्गन स्टेनली की रिपोर्ट में दस पॉइंट्स को लेकर विस्तृत चर्चा की गई है जिसके कारण भारतीय अर्थव्यवस्था में उछाल आया है। अगले कुछ वर्ष में ही भारत दुनिया की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भूमिका अदाकर्ता देश होगा तथा मैन्युफेक्चरिंग से लेकर आयात-निर्यात आदि हरेक क्षेत्र में योगदान करेगा।

वर्ष 2014 में देश में उपयोग होने वाले मोबाइल फोन का 92 प्रतिशत विदेशों से आता था जबकि आज स्थानीय उत्पाद से भारतीय जरूरत पूरा होता है। पिछले साल भारत से लगभग 90 हजार करोड़ रुपए मूल्य के मोबाइल निर्यात हुए हैं। अब तो एप्पल स्टोर्स भी भारत में खुल रहे हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि से हर साल देश के 10 करोड़ से अधिक किसानों को छः-छः हजार रुपये की आर्थिक सहायता दी जा रही है।

पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत देश के लगभग 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज दिया जा रहा है। कई जनकल्याण योजनाओं को जमीन पर उतारा जा रहा है। श्री नरेन्द्र मोदी सरकार आज देश के गरीबों, उपेक्षितों, वंचितों, युवाओं, महिलाओं, किसानों, उद्योगों की चिंता कर रही है। देश में आधारभूत संरचना के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है जो वित्तीय वर्ष 2023-24 के आम बजट में भी दिख रहा है। वित्त वर्ष 2023- 24 के बजट में बुनियादी ढांचा विकास पर पूंजीगत व्यय 33 प्रतिशत बढ़ाकर 10 लाख रुपये कर दिया गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने भारतीय अर्थव्यवस्था का सर्व समावेशी और सर्वस्पर्शी विकास किया है। तथाकथित प्रायोजित विशेषज्ञ भारत के विकास का अनुमान लगाने में पूरी तरह से फेल (fail) हो गए हैं। ▪

बहनें मजबूत होंगी - मुख्यमंत्री

- **अब 21 वर्ष की विवाहित बहनें भी योजना का लाभ प्राप्त करेंगी।**
- **पाँच वर्ष में सभी बहनें होंगी लखपति क्लब में शामिल।**
- **वृद्ध महिलाओं की पेंशन बढ़कर होगी 1000 रूपये।**
- **जो कहता हूँ करके दिखाता हूँ।**

प्रदेश में लाड़ली बहना सेनाएँ भी बनेंगी। बड़े ग्रामों में 21 सदस्य और छोटे ग्रामों में 11 सदस्य वाली सेनाएँ गठित होंगी। लाड़ली बहना सेना अन्याय और शोषण के खिलाफ लड़ेंगी। यह सेनाएँ महिलाओं को उनके कल्याण की योजनाओं का लाभ दिलाने में मदद करेगी।

राज्य सरकार ने अनेक महिला कल्याण योजनाओं से बहनों और बेटियों का सशक्तिकरण किया है। लाड़ली लक्ष्मी योजना, मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना, स्व-सहायता समूहों द्वारा आर्थिक उन्नयन की गतिविधियों से बहनें सशक्त हुई हैं।

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना का लाभ लेकर बहनें मजबूत होंगी, वे अब मजबूर नहीं रहेंगी। योजना में प्रति माह 1000 रूपये की राशि देने के प्रावधान में संशोधन कर बहनों को क्रमशः बढ़ी हुई राशि का भुगतान किया जाएगा। आवश्यक वित्त व्यवस्था के फलस्वरूप योजना में 1000 रूपये के स्थान पर क्रमशः 1250 रुपए, इसके बाद 1500 रूपए, फिर 1750 रूपए, फिर 2 हजार रूपए और इसके बाद 2250 रुपए, 2500 रूपए और 2750 रूपए करते हुए राशि को 3 हजार रूपए तक बढ़ाया जाएगा। इसी तरह योजना के लिए विवाहित पात्र बहन की आयु न्यूनतम 23 वर्ष के स्थान पर 21 वर्ष की जाएगी। इसी तरह बहनों को आने वाले 5 वर्ष में लखपति बनाते हुए लखपति क्लब में शामिल किया जाएगा। वर्तमान में 23 से 60 वर्ष की विवाहित बहनें योजना में पात्र हैं। बहनों की आय कम से कम 10 हजार रूपए मासिक होना चाहिए। स्व-सहायता समूहों और आर्थिक समृद्धि की योजनाओं से लाभान्वित करते हुए बहनों की जिंदगी में सुख और आनंद लाने का कार्य किया जाएगा।

''नारी तू नारायणी, इस जग की पालनहारिणी''

''नारी तू नारायणी, इस जग की पालनहारिणी''। माँ अन्नपूर्णा है तू ही, है तू ही वीणा वादिनी, है शक्ति स्वरूपा जगदंबा, है नारी तू नारायणी, इस जग की पालनहारिणी। हमारी भारतीय संस्कृति में भगवान से पहले माँ का नाम आता है, यथा-सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण।

सिंगल क्लिक के माध्यम से 1.25 करोड़ बहनों के खाते में कुल 1209.64 करोड़ रूपए की राशि अंतरित। बहनों को अब परिवार में आर्थिक रूप से किसी विवशता का सामना नहीं करना पड़ेगा। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में मिलने वाली राशि उनके जीवन में आनंद लाने का कार्य करेगी। परिवार में बच्चों के लिए दूध, फल, दवाई लाने, उनकी पढ़ाई के प्रबंध को बेहतर बनाने में योजना की राशि उपयोगी होगी। परिवार में बहन के साथ बच्चों को भी आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा।

प्रदेश में लाड़ली बहना सेनाएँ भी बनेंगी। बड़े ग्रामों में 21 सदस्य और छोटे ग्रामों में 11 सदस्य वाली सेनाएँ गठित होंगी। लाड़ली बहना सेना अन्याय और शोषण के खिलाफ लड़ेंगी। यह सेनाएँ महिलाओं को उनके कल्याण की योजनाओं का लाभ दिलाने में मदद करेगी।

राज्य सरकार ने अनेक महिला कल्याण योजनाओं से बहनों और बेटियों का सशक्तिकरण किया है। लाड़ली लक्ष्मी योजना, मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना, स्व-सहायता समूहों द्वारा आर्थिक उन्नयन की गतिविधियों से बहनें सशक्त हुई हैं। पूर्व सरकार ने बेटियों को लेपटाप प्रदान करने, बैगा, सहरिया और भारिया जनजाति की बहनों को प्रति माह दी जाने वाली आहार अनुदान राशि का भुगतान बंद कर दिया था जिसे हमारी सरकार ने पुनः प्रारंभ किया। पूर्व सरकार ने और भी कई कल्याणकारी योजनाएँ बंद करने का कार्य किया। विशेष पिछड़ी जनजातियों को पोषण के लिए दी जाने वाली राशि का ही विस्तार करते हुए मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना का निर्माण किया गया। बहनों के सम्मान के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। पंचायत राज संस्थाओं में 50 प्रतिशत और पुलिस में 30 प्रतिशत स्थान बेटियों के लिए सुरक्षित रखे गए हैं। इसी तरह बेटियों और बहनों के नाम पर संपत्ति की रजिस्ट्री की जाने पर मात्र एक प्रतिशत शुल्क लिया जाता है।

आनंद की अनुभूति से बेटियाँ और बहनों के जीवन को बेहतर बनाना प्रमुख उद्देश्य है। बेटियाँ और बहनें आँसू पोछकर घरों से बाहर निकले, अपनी जिंदगी बेहतर बनाये। ▪

नए भारत का निर्माण हो रहा है : शिवराजसिंह चौहान

श्री मोदी जी के नेतृत्व में एक नये भारत का उदय हो रहा है। वैभवशाली, गौरवशाली, संपन्न, समृद्ध और शक्तिशाली भारत का उदय हो रहा है। कांग्रेस के जमाने में छोटे-छोटे देश हमें आंखें दिखाते थे। लेकिन अब अगर चीन भी हमें आंखें दिखाने की कोशिश करता है, तो हमारे सैनिक चीनियों की गर्दन तोड़कर चीन में फेंक देते हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में एक नये भारत का उदय हो रहा है। वैभवशाली, गौरवशाली, संपन्न, समृद्ध और शक्तिशाली भारत का उदय हो रहा है। कांग्रेस के जमाने में छोटे-छोटे देश हमें आंखें दिखाते थे। लेकिन अब अगर चीन भी हमें आंखें दिखाने की कोशिश करता है, तो हमारे सैनिक चीनियों की गर्दन तोड़कर चीन में फेंक देते हैं। अगर प्रधानमंत्री मोदी जी नहीं होते, तो क्या कोविड की वेक्सीन इतने जल्दी बन पाती? बीसियों साल लग जाते। मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने न सिर्फ वेक्सीन बनाई, बल्कि दुनिया के अन्य देशों को भी दी। कांग्रेसियों को छोड़कर अन्य सभी ने योग किया। पता नहीं कांग्रेस को योग से क्या दिक्कत है? मोदी जी के नेतृत्व में देश का जो कायाकल्प हो रहा है, वह विरोधियों को रास नहीं आ रहा। इसलिए वे उनकी आलोचना करते हैं, गालियां देते हैं। लेकिन प्रदेश की जनता मोदी जी और भारतीय जनता पार्टी के साथ खड़ी है।

भाजपा ही कर सकती है हर वर्ग का कल्याण और विकास

प्रदेश में जबसे भाजपा की सरकार आई है, विकास की झड़ी लगी है। किसानों को इतना पानी मिल रहा है कि गर्मी में भी धान की खेती कर रहे हैं। क्या कांग्रेस के समय में संभव था? कांग्रेस किसानों को 18 प्रतिशत ब्याज पर लोन देती थी, हम 0 प्रतिशत पर दे रहे हैं। कांग्रेस के कर्जमाफी के झूठे वादे से किसान डिफाल्टर हो गए। हमारी सरकार ने किसानों के सिर से ब्याज की गठरी उतारने का वचन दिया। प्रधानमंत्री मोदी जी किसानों को 6 हजार रुपये सम्मान निधि देते हैं, हमने भी पहले 4 हजार रुपये दिए और अब हम भी 6 हजार देंगे, यानी हर किसान को साल भर में 12 हजार रुपये मिलेंगे। कांग्रेस ने तो बैगा, भारिया, सहरिया बहनों को मिलने वाली राशि भी बंद कर दी थी। बच्चों के लेपटॉप छीन लिए थे, संबल योजना बंद कर दी थी, कन्यादान योजना की राशि नहीं दी। जनता के लिए हमारी सरकार के खजाने में पैसे की कमी नहीं है। हम लाड़ली बहनों को मिलने वाली राशि भी 3000 रुपये तक बढ़ाएंगे।

मोदी जी ने सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण में नया इतिहास रचा - विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने 9 वर्षों के कार्यकाल में सेवा, सुशासन और राष्ट्रसेवा को समर्पित विकास की नई गाथा लिखी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगतप्रसाद नड्डा जी, केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने देश और प्रदेश में विकास का नया इतिहास रचा है। सुशासन देने का काम भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने किया है। कांग्रेस सरकार में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी कहते थे कि हम केन्द्र से 1 रुपये भेजते हैं तो 85 पैसे भ्रष्टाचार में चले जाते हैं। गरीब हितग्राही के हाथों में सिर्फ 15 पैसे ही पहुँचता है। कांग्रेस सरकार में दलाल और बिचौलिये काम करते थे। प्रधानमंत्री के रूप में जब मोदी जी आए तो उन्होंने देश में 45 करोड़ जन-धन खाते खोलकर बिचौलियों को खत्म कर दिया और आज गरीब के लिए केंद्र सरकार की और से भेजा गया पूरा 1 रुपया गरीबों तक पहुँचता है। डीबीटी के माध्यम से मोदी जी ने पूरी व्यवस्था को पारदर्शी बना दिया। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने लाड़ली बहना योजना के अन्तर्गत 10 जून को एक हजार रुपये बहनों के खाते में भेजे है, तो 999 नहीं पूरे 1 हजार रूपये सिंगल क्लिक में बहनों के खाते में पहुंचे। यही सुशासन एवं सेवा का कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 9 वर्षों

में देश की जनता ने देखा है। इन नौ वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस देश की व्यवस्था को बदलने का कार्य किया है।

अटल जी ने गाँव को सड़कों से जोड़ा, मोदी जी हर घर तक नल से जल पहुंचा रहें

आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी सबसे अधिक सत्ता में रही, लेकिन कांग्रेस ने कभी भी गरीबों की चिंता नहीं की। जब गरीब का बेटा प्रधानमंत्री बना तो उसने झोपड़ी में रहने वाले गरीबों का दुःख दर्द को समझा और उसके लिए प्रधानमंत्री आवास योजना बनाई। बीते 9 वर्षों में प्रधानमंत्री गरीब आवास योजना के अन्तर्गत प्रधानमंत्री मोदी जी ने साढ़े तीन करोड़ गरीब लोगों को पक्का मकान देने का कार्य किया है। वही कोई गरीब इलाज से वंचित न हो इसके लिए आयुष्मान भारत योजना का सुरक्षा कवच मोदी सरकार ने दिया है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल जी ने जैसे प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के माध्यम से गाँव-गाँव को सड़कों से जोड़ा वैसे ही प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने हर घर तक नल से जल पहुँचाने का कार्य किया है।

भाजपा सरकार में गरीबों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया

2003 के पहले बंटाधार मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश को आकंठ भ्रष्टाचार में डुबो दिया था। जनता सड़क, पानी और बिजली जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित थी। 2003 के बाद जब प्रदेश में भाजपा सरकार बनी तो मध्यप्रदेश विकास की और अग्रसर हुआ। प्रदेश में 15 महीने रही काँग्रेस सरकार ने भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गयी संबल योजना, लाड़ली लक्ष्मी योजना, तीर्थ दर्शन और कन्यादान योजना जैसी सभी जनकल्याणकारी योजनाओं को बंद कर गरीबों से उनका हक छीनने का काम किया। जिसके परिणाम स्वरूप प्रदेश की जनता ने कांग्रेस को सत्ता से बेदखल कर दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश की भाजपा सरकार की जनहितैषी नीतियों के जरिये मध्यप्रदेश के गरीबों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। योजनाओं के माध्यम से हर गरीब को सशक्त करने का काम प्रधानमंत्री जी ने किया है। ▪

ब्लू इकोनॉमी और स्पेस इकोनॉमी नई अवधारणाएं हैं

अगर भारत को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करनी है, तो उसे वैश्विक मानकों पर खरा उतरना होगा और देश की भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए वैल्यू एडिशन समुद्र संसाधनों और अंतरिक्ष जैसे अब तक कम खोजे गए क्षेत्रों से आएगा।

ब्लू इकोनॉमी और स्पेस इकोनॉमी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पिछले 9 वर्षों में आरंभ की गई कुछ नई अवधारणाओं में से हैं। अर्थव्यवस्था के प्रति प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण की एक विशेषता यह रही है कि उन्होंने न केवल चोरी या कुप्रथाओं पर रोक लगाकर और गैरजरूरी प्रतिबंधों और विनियमों के भार को कम करके अर्थव्यवस्था के मौजूदा स्तंभों को सुदृढ़ और मजबूत किया है। व्यापार में आसानी के लिए उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में नए आयाम भी पेश किए जिन पर पिछली सरकारों ने महत्वपूर्ण होने के बावजूद शायद ही कोई ध्यान दिया हो।

अगर भारत को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करनी है, तो उसे वैश्विक मानकों पर खरा उतरना होगा और देश की भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए वैल्यू एडिशन समुद्र संसाधनों और अंतरिक्ष जैसे अब तक कम खोजे गए क्षेत्रों से आएगा।

यह भी गर्व की बात है कि भले ही हमारी अंतरिक्ष यात्रा अमेरिका और सोवियत संघ जैसे देशों के कई साल बाद शुरू हुई थी, लेकिन आज ये देश इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) द्वारा प्रदान की गई हमारी तकनीक का उपयोग अपने उपग्रह प्रक्षेपण के लिए कर रहे हैं। अब तक लॉन्च किए गए कुल 385 विदेशी उपग्रहों में से 353 पिछले 9 वर्षों के दौरान लॉन्च किए गए हैं और 174 मिलियन अमेरिकी डॉलर अर्जित किए गए हैं, जबकि यूरोपीय उपग्रहों के लॉन्चिंग से 86 मिलियन यूरो प्राप्त हुए हैं। जबकि भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में है, इसने यूनाइटेड किंगडम (यूके) को पीछे छोड़ दिया है, इसने अपने उपग्रहों को लॉन्च करके राजस्व भी उत्पन्न किया है। जहां तक ब्लू इकोनॉमी का सवाल है, प्रधानमंत्री मोदी ने अपने स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में डीप सी मिशन के बारे में बात की क्योंकि वह लोगों को समुद्र के नीचे छिपी हुई ब्लू वेल्थ के बारे में जागरूक करना चाहते हैं।

सरकार आज न केवल व्यापार करने में सुगमता प्रदान कर रही है बल्कि नए उद्यमी उत्पादों को विकसित करने और उनके विपणन में भी सहायता प्रदान कर रही है। भारत स्टार्टअप ईकोसिस्टम में दुनिया में तीसरे नंबर पर है। लेकिन इसे बनाए रखने के लिए हमें निरंतर कठिन परिश्रम करना होगा। ▪

रोजगार अभियान पारदर्शिता और सुशासन का प्रमाण - प्रधानमंत्री

भारत में प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर, दोनों में ही नौकरियों के निरंतर नए मौके बन रहे हैं। बहुत बड़ी संख्या में हमारे नौजवान स्वरोजगार के लिए भी आगे आ रहे हैं।

बिना गारंटी बैंक से मदद दिलाने वाली मुद्रा योजना ने करोड़ों युवाओं की मदद की है। स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया जैसे अभियानों से युवाओं का सामर्थ्य और ज्यादा बढ़ा है। सरकार से मदद पाने वाले ये नौजवान अब खुद अनेक युवाओं को नौकरी दे रहे हैं।

- विभिन्न सरकारी विभागों और संगठनों में नवनियुक्त युवाओं को लगभग 70,000 नियुक्ति पत्र वितरित किए गये।
- ''आज पूरी दुनिया भारत की विकास यात्रा में उसके साथ सहभागी बनने के लिए उत्सुक है''।
- आज, भारत अपनी राजनीतिक स्थिरता के लिए जाना जाता है, जो आज की दुनिया में बहुत महत्व रखता है, आज भारत सरकार की पहचान एक निर्णायक सरकार के रूप में होती है, आज, सरकार अपने प्रगतिशील आर्थिक और सामाजिक निर्णयों के लिए जानी जाती है''।
- ''नागरिकों के कल्याण के संदर्भ में सरकारी योजनाओं का गुणात्मक प्रभाव होता है''।
- ''नौकरियों के लिए 'रेट कार्ड' के दिन चले गए, वर्तमान सरकार का ध्यान युवाओं के भविष्य को 'सुरक्षित' बनाने पर है''।
- ''लोगों को बांटने के लिए भाषा का दुरुपयोग किया जा रहा था, सरकार अब भाषा को रोजगार का सशक्त माध्यम बना रही है''।
- ''अब सरकार अपनी सेवाएं घर-घर तक पहुंचाकर नागरिकों के पास पहुंच रही है''।

राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले रोजगार मेले, एनडीए और भाजपा सरकार की नई पहचान बन गए हैं। एक बार फिर 70 हजार से ज्यादा युवाओं को नियुक्ति पत्र मिले हैं। बीजेपी के शासन वाली राज्य सरकारें भी, सभी बीजेपी के स्टेट में भी लगातार इस तरह के रोजगार मेले आयोजित कर रही हैं। जो लोग इस समय सरकारी नौकरी में आ रहे हैं, उनके लिए ये बहुत महत्वपूर्ण समय है।

आजादी का अमृतकाल अभी शुरू ही हुआ है। अगले 25 वर्षों में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य है। वर्तमान के साथ ही देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए जी-जान से जुट जाना है। भारत में प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर, दोनों में ही नौकरियों के निरंतर नए मौके बन रहे हैं। बहुत बड़ी संख्या में हमारे नौजवान स्वरोजगार के लिए भी आगे आ रहे हैं। बिना गारंटी बैंक से मदद दिलाने वाली मुद्रा योजना ने करोड़ों युवाओं की मदद की है। स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया जैसे अभियानों से युवाओं का सामर्थ्य और ज्यादा बढ़ा है। सरकार से मदद पाने वाले ये नौजवान अब खुद अनेक युवाओं को नौकरी दे रहे हैं।

बीते वर्षों में जिस तरह बड़े पैमाने पर युवाओं को सरकारी नौकरी दी गई हैं, यह अभियान भी अपने-आप में अभूतपूर्व है। देश में सरकारी नौकरी देने वाले प्रमुख संस्थानों जैसे SSC, UPSC और RRB ने पहले के मुकाबले इन व्यवस्थाओं के माध्यम से ज्यादा युवाओं को

नौकरी दी है। इन संस्थाओं का जोर परीक्षा प्रक्रिया को पारदर्शी, व्यवस्थित और सरल बनाने पर भी रहा है। पहले जिन भर्ती परीक्षाओं को पूरा होने में उसका जो चक्र होता था, वो चक्र पूरा होने में साल-डेढ़ साल का समय यूं ही लग जाता था, और वो अगर कोई कोर्ट-कचहरी में चला गया तो दो-दो, पांच-पांच साल बिगड़ जाते थे। ये सारी चीजों से बाहर निकलकर अब कुछ ही महीनों में सारा चक्र, सारी प्रक्रियाएं पारदर्शी पद्धति से पूर्ण कर दी जाती हैं।

अब पूरी दुनिया हमारी विकास यात्रा में साथ चलने के लिए तत्पर है। भारत को लेकर ऐसा विश्वास और हमारी अर्थव्यवस्था पर इतना भरोसा पहले कभी नहीं रहा। एक तरफ वैश्विक मंदी, कोरोना जैसी भयंकर वैश्विक महामारी, दूसरी तरफ युद्ध की वजह से वैश्विक सप्लाई चेन टूटना, कितनी-कितनी कठिनाइयां पूरी दुनिया में दिखाई दे रही हैं। इन सबके बावजूद, इन सारी दिक्कतों के बावजूद भी भारत अपनी अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई पर ले जा रहा है।

आज विश्व की बड़ी-बड़ी कंपनियां मैन्युफैक्चरिंग के लिए भारत आ रही हैं। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार रिकॉर्ड स्तर पर है। जब इतनी बड़ी मात्रा मे विदेशी निवेश आता है तो उससे production बढ़ता है, उद्योग का विस्तार होता है, नए-नए उद्योग लगते हैं, उत्पादन बढ़ता है, एक्सपोर्ट बढ़ता है और स्वाभाविक है बिना नए नौजवानों के ये काम हो ही नहीं सकता, और इसलिए employment बहुत तेजी से बढ़ता है, रोजगार बहुत तेजी से बढ़ता है।

हमारी सरकार के निर्णयों ने प्राइवेट सेक्टर में कैसे लाखों नए अवसर पैदा किए हैं, जरा एक उदाहरण आपके सामने रखना चाहता हूं। जैसे ऑटोमोबाइल सेक्टर है। देश की GDP में इस सेक्टर का योगदान साढ़े छह परसेंट से ज्यादा है। पिछले कुछ वर्षों में भारत की Automotive industry ने बड़ी छलांग लगाई है।

आज भारत से Passenger Vehicle का दुनिया के कई देशों में एक्सपोर्ट बढ़ रहा है। Commercial Vehicle का Export, इतना ही नहीं हमारे Three-Wheeler-Two-Wheelers उनके एक्सपोर्ट में भी बहुत वृद्धि हो रही है। 10 साल पहले ये इंडस्ट्री 5 लाख करोड़ रुपए के आस-पास थी। आज ये इंडस्ट्री 5 लाख करोड़ से jump लगा करके 12 लाख करोड़ रुपए से भी ज्यादा की हो गई है। Electric Mobility का भी भारत में लगातार विस्तार हो रहा है। ऑटोमोबाइल सेक्टर को भारत सरकार की PLI स्कीम से भी बहुत मदद मिल रही है। तेजी से आगे बढ़ते हुए ऐसे ही सेक्टर्स लाखों युवाओं के लिए रोजगार के नए मौके बना रहे हैं।

आज भारत एक दशक पहले की तुलना में ज्यादा स्थिर, ज्यादा सुरक्षित और ज्यादा मजबूत देश है। राजनीतिक भ्रष्टाचार, योजनाओं में गड़बड़ी, जनता-जनार्दन के धन का दुरुपयोग, पुरानी जितनी सरकारें आप देखेंगे उनकी पहचान यही बन गई थी। आज भारत को उसकी राजनीतिक स्थिरता के लिए जाना जाता है। Political stability, ये दुनिया में बहुत मायने रखती है।

आज भारत सरकार की पहचान उसके निर्णायक फैसलों से होती है। एक decisive government, आज भारत सरकार की पहचान उसके आर्थिक और प्रगतिशील सामाजिक सुधारों से हो रही है। ग्लोबल एजेंसियां लगातार इस बात को घोषित कर रही हैं, अनुमान लगा रही हैं और विश्वास से कह रही हैं कि चाहे हाईवे का निर्माण हो या रेलवे का, Ease of Living की बात हो या फिर Ease of Doing Business की चर्चा, भारत पिछली सरकारों की तुलना में बहुत बेहतर प्रदर्शन कर रहा है।

बीते वर्षों में भारत ने अपने फिजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर पर और अपने सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर पर लाखों करोड़ रुपए का निवेश किया है। लाखों करोड़ रुपए के इस निवेश ने भी रोजगार के करोड़ों अवसर बनाए हैं। अब जैसे सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर का एक उदाहरण- जो हमारे सामाजिक जीवन से जुड़ा हुआ विषय है। और वो है पानी, और उसके लिए हमने चलाया है जल जीवन मिशन। ये जल जीवन मिशन, उसके पीछे अब तक करीब-करीब 4 लाख करोड़ रुपए खर्च हो रहे हैं।

जब ये मिशन शुरू हुआ था, तो ग्रामीण इलाकों में हर 100 में से यानी 100 घर अगर गांव में हैं, तो सिर्फ 15 घर ही थे, जहां पाइप से पानी आता था। ये मैं एवरेज बता रहा हूं, 100 घर में से 15 घर में पाइप से पानी आता था। आज जल जीवन मिशन की वजह से हर 100 में से बासठ (62) घरों में पाइप से पानी आने लगा है और अभी भी तेज गति से काम चल रहा है। आज देश के 130 जिले ऐसे हैं- ये छोटा क्षेत्र नहीं है, 130 जिले ऐसे हैं, जहां के हर गांव में, हर घर में नल से जल आता है।

जिन घरों में अब साफ पानी पहुंच रहा है, वहां लोगों का समय भी बचा है, लेकिन इससे ज्यादा महत्वपूर्ण जो लाभ हो रहा है, और वो गंभीर बीमारियों से भी बचे हैं। पीने का शुद्ध पानी आरोग्य के लिए बहुत बड़ी औषधि बन जाता है। एक स्टडी में सामने आया है कि जब हर घर पाइप से पानी पहुंचने लगा तो डायरिया से होने वाली 4 लाख मौत होने से बच गईं, चार लाख जिंदगियां बच गईं, यानी जल जीवन मिशन, चार लाख लोगों का जीवन बचाएगा।

ये स्टडी ये भी कहती है कि हर घर जल पहुंचने से देश के गरीबों के 8 लाख करोड़ रुपए से अधिक बचने वाले हैं, यानी गरीब के घर का पैसा बचने वाला है, मध्यम वर्ग के परिवार का पैसा बचने वाला है। इन पैसों को उन्हें पानी का इंतजाम करने में, पानी से होने वाली बीमारियों के इलाज में खर्च करना पड़ता था। जल जीवन का एक और बड़ा लाभ ये भी होगा कि इससे महिलाओं का बहुत सारा समय भी बचेगा।

इस रोजगार मेले में नौकरी पाने वाले सभी समझ सकते हैं कि सरकार की एक-एक योजना का कितना बड़ा Multiplier Effect होता है। जल-जीवन मिशन का उदाहरण मैंने रखा है। ऐसे ही आप जब अब सरकारी व्यवस्था में आए हैं तो सरकार की हर योजना को, अपने विभाग के हर लक्ष्य को तेजी से प्राप्त करने के लिए पूरी मेहनत करेंगे, ये मेरा आपसे भरोसा भी है, अपेक्षा भी है। देश में चल रहा ये रोजगार अभियान, पारदर्शिता और सुशासन, गुड गवर्नेंस दोनों का ही प्रमाण है। हम सभी ने देखा है कि कैसे हमारे देश में परिवारवादी पॉलिटिकल पार्टियों ने हर व्यवस्था में भाई-भतीजावाद को बढ़ावा दिया। जब सरकारी नौकरी की बात आती थी, तो उसमें ये परिवारवादी पार्टियां भाई-भतीजावाद, सिफारिश और भ्रष्टाचार को ही बढ़ावा देती थीं। इन परिवारवादी पार्टियों ने देश के करोड़ों युवाओं के साथ विश्वासघात किया है।

2014 में हमारी सरकार बनने के बाद, अब भर्ती परीक्षाओं में पारदर्शिता भी आई है और भाई-भतीजावाद भी खत्म हो रहा है। केंद्र सरकार में ग्रुप सी और ग्रुप डी की भर्ती में इंटरव्यू समाप्त होने का लाभ लाखों युवाओं को हुआ है। एक तरफ सरकार के ये ईमानदार प्रयास हैं तो दूसरी तरफ और ये बात मैं चाहता हूं मेरे नौजवान पूरा समझने का प्रयास करें। हकीकतों के आधार पर कुछ बातें आ रही हैं, दूसरी तरफ भाई-भतीजावाद है।

अभी आपने एक दो दिन पहले मीडिया में आई रिपोर्ट देखी होगी, अखबारों में, टीवी में काफी कुछ देखने को मिला। एक राज्य की उसमें चर्चा है, और चर्चा क्या है, एक राज्य में Cash for Job के घोटाले की जांच में जो बातें बाहर निकल करके आई हैं, वो मेरे देश के नौजवानों के लिए बहुत बड़ा चिंता का विषय ले करके आई हैं। उस राज्य की क्या पद्धति है, क्या बात उभर

करके आई है, नौकरी सरकारी चाहिए तो हर पद के लिए, जैसे होटल में आप खाना खाने जाएं तो रेट कार्ड होता है ना, हर पद के लिए 'रेट कार्ड' है। रेट कार्ड बताया गया और रेट कार्ड भी कैसा है, छोटे-छोटे गरीबों को लूटा जा रहा है। सफाई कर्मी की नौकरी चाहिए, तो उसके लिए ये रेट रहेगा, भ्रष्टाचार में इतना देना पड़ेगा। ड्राइवर की नौकरी चाहिए तो ड्राइवर की नौकरी के लिए ये रेट रहेगा, क्लर्क की नौकरी चाहिए, टीचर की नौकरी चाहिए, नर्स की नौकरी चाहिए तो ये रेट रहेगा। हर पद के लिए उस राज्य में 'रेट कार्ड' चला करता है और कट मनी का कारोबार चलता है। देश का नौजवान कहां जाएगा। ये स्वार्थी राजनीतिक दल, Jobs के लिए 'rate card' बनाते हैं।

कुछ दिन पहले एक मामला सामने आया था। रेलवे के एक मंत्री ने जॉब देने के बदले में गरीब किसानों की जमीनें लिखवा ली थीं। जॉब के बदले में जमीन प्रणाली वो भी केस सीबीआई में चल रहा है, कोर्ट में चल रहा है।

आपके सामने दो चीजें साथ हैं, एक तरफ परिवारवादी वो पार्टियां, भाई-भतीजावाद करने वाली वो पार्टियां, भ्रष्टाचार में रोजगार के नाम पर देश के नौजवानों को लूटने वाली पार्टियां, जॉब रेट कार्ड, हर चीज में रेट कार्ड, हर चीज में कट मनी। उनका रास्ता है रेट कार्ड, जबकि हम युवाओं के उज्ज्वल भविष्य को सेफ गार्ड करने पर काम कर रहे हैं। रेट कार्ड आपकी काबिलियत को, आपके सामर्थ्य को, आपके सपनों को चूर-चूर कर देते हैं। हम आपके सेफ गार्ड में लगे हैं जो आपके सपनों के लिए जीते हैं। आपके संकल्पों को साकार करने के लिए काम करते हैं। आपकी हर इच्छा, आकांक्षा, आपके परिवार की हर इच्छा, आकांक्षा, उसको सेफगार्ड करने में हम लगे हैं। अब देश तय करेगा देश के नौजवानों का भविष्य रेटकार्ड के भरोसे चलेगा कि सेफगार्ड व्यवस्था के अंदर सुरक्षित तरीके से पनपेगा।

ये भाई-भतीजावाद वाली पार्टियां देश के सामान्य मानवी से आगे बढ़ने के अवसर छीन लेती हैं। जबकि हम देश के सामान्य मानवी के लिए नित नए अवसर बना रहे हैं।

हमारे देश में कुछ राजनीतिक दलों ने लोगों को भाषा के नाम पर एक-दूसरे से भिड़ने के लिए, देश को तोड़ने के लिए भाषा को एक हथियार बनाया, लेकिन हम भाषा को, लोगों को रोजगार देने, उन्हें सशक्त करने का माध्यम बना रहे हैं। हमारी सरकार ये सुनिश्चित कर रही है कि किसी को अपना सपना पूरा करना हो तो कोई भी भाषा उसके सामने दीवार ना बने। भारत सरकार आज जिस तरह मातृभाषा में भर्ती परीक्षा पर जोर दे रही है, entrance exam पर जोर दे रही है, उसका भी सर्वाधिक लाभ मेरे देश के बेटे-बेटियों को मिल रहा है, हमारे नौजवानों को हो रहा है। Regional language में परीक्षा होने से युवाओं को आसानी से अपनी योग्यता साबित करने का अवसर मिला है।

तेजी से आगे बढ़ते हुए भारत में, सरकारी व्यवस्थाओं और सरकारी कर्मचारियों के काम करने का तरीका भी तेजी से बदल रहा है। एक समय था, जब देश के सामान्य नागरिक सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाते रहते थे। आज सरकार अपनी सेवाएं लेकर, देश के नागरिकों के घर तक पहुंच रही है। अब जनता की अपेक्षाओं को समझते हुए, क्षेत्र की आवश्यकताओं को समझते हुए हमारी सरकार लगातार काम कर रही है। विभिन्न सरकारी दफ्तर और विभाग, जनता के प्रति संवेदनशील रहते हुए काम करने पर जोर, ये हमारी प्राथमिकता है।

इतने सारे मोबाइल एप्स के माध्यम से, डिजिटल सेवाओं के माध्यम से, सरकार से मिलने वाली सुविधाएं अब बहुत आसान हो गई हैं। पब्लिक ग्रीवांस सिस्टम को भी लगातार मजबूत किया जा रहा है। इन बदलावों के बीच, आपको भी देश के नागरिकों के प्रति पूरी संवेदनशीलता से काम करना है। आपको इन सुधारों को और आगे बढ़ाना है। और इन सबके साथ ही, आप लगातार कुछ न कुछ नया सीखने की प्रवृत्ति को हमेशा बनाए रखिए।

सरकार में प्रवेश ये जिंदगी का आखिरी मुकाम नहीं हो सकता है। आपको इससे भी आगे बढ़ना है और नई ऊंचाइयों को प्राप्त करना है। आपके जीवन के नए सपने, नए संकल्प, नया सामर्थ्य उभर करके आना चाहिए और इसके लिए सरकार ने ऑनलाइन पोर्टल, ये ऑनलाइन पोर्टल जो है, iGoT के माध्यम से नई सुविधा बनाई है। हाल ही में, इसके यूजर्स की संख्या 10 लाख के आंकड़े को पार कर गई है।

इस ऑनलाइन पोर्टल पर उपलब्ध courses का आप पूरा फायदा उठाएं। आपको नौकरी में बहुत काम आएगा। आपको प्रगति करने के लिए नए रास्ते खुल जाएंगे, और मैं दोस्तों आपको यहां से आगे देखना चाहता हूं। आप भी आगे बढ़ें, देश भी आगे बढ़े। ये 25 साल मेरे लिए आपकी प्रगति के भी हैं और हम सबके लिए देश की प्रगति के भी हैं।

अमृतकाल के अगले 25 वर्षों की यात्रा में हम कंधे से कंधा मिलाकर, मिल करके विकसित भारत के संकल्प को साकार करने की दिशा में तेज गति से चल पड़ें, आगे बढ़ें। ▪

कार्यकर्ता संकल्प लेकर मैदान में उतरें, निश्चित ही जीत हमारी होगी: हितानंद

भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता आधारित दल है। यह दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल कार्यकर्ताओं के परिश्रम से ही बना है। मिशन 2023 विधानसभा चुनाव में कार्यकर्ता अपनी संगठन शक्ति के साथ प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाने के लिए एकजुट होकर संकल्प लेकर कार्य करेंगे तो निश्चित ही प्रदेश में भाजपा की सरकार बनेगी। हम सभी को केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं को जनता तक पहुंचाने का कार्य करना है।

कार्यकर्ता, केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं से हर वर्ग के लोगों को लाभ दिलाएं और उन्हें संगठन की विचारधारा और रीति नीति से अवगत कराकर पार्टी से जोड़ें। जब हम निचले स्तर तक इस अभियान को ले जाएंगे तो निश्चित ही हमारी ताकत और अधिक बढ़ेगी। विधानसभा के प्रत्येक बूथ को जिताने की जिम्मेदारी एक-एक कार्यकर्ता की है। सभी कार्यकर्ताओं को वरिष्ठ नेताओं के साथ स्थानीय समिति की बैठक आयोजित कर लोगों को संगठनात्मक कार्यक्रमों से जोड़ने का काम करें। जहां भी हमारे बूथ कमजोर हैं, उसे सुदृढ़ बनाना है और 51 प्रतिशत वोट हासिल करने के लक्ष्य को पूरा करना है। ▪

424 विदेशी उपग्रहों में से 389 पिछले नौ वर्षों में लॉन्च किए गए

स्वदेशी मानव अंतरिक्ष मिशन गगनयान भारतीयों को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए लगभग तैयार है। अगर ये कामयाब रहता है तो भारत अमेरिका, रूस और चीन के बाद अंतरिक्ष में इंसान भेजने वाला चौथा देश हो जाएगा।

विदेशी उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण के साथ भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र दुनिया में बहुत तेजी से एक प्रमुख स्थान हासिल करता जा रहा है भारत द्वारा अब तक लॉन्च किए गए 424 विदेशी उपग्रहों में से 389 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार के पिछले नौ वर्षों में लॉन्च किए गए थे। इसके अलावा, 174 मिलियन अमेरिकी डॉलर में से 157 मिलियन की कमाई पिछले नौ वर्षों में हुई और इसी तरह अब तक अर्जित 256 मिलियन यूरो में से 223 मिलियन मोदी शासन के नौ वर्षों के दौरान आए हैं। भारत का अंतरिक्ष क्षेत्र तेजी से दुनिया में एक प्रमुख स्थान हासिल करता जा रहा है।

जिन देशों ने हमसे बहुत पहले अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू कर लिए थे, वे भी आज अपने उपग्रहों को लॉन्च करने के लिए तेजी से हमारी सेवाएं और हमारी सुविधाएं चाह रहे हैं। रॉकेट लॉन्चिंग के मुख्य काम के अलावा, जून 2020 में मोदीजी द्वारा अंतरिक्ष क्षेत्र को खोले जाने के बाद से भारत की स्पेस एप्लिकेशंस 130 स्टार्ट-अप के माध्यम से कमाई के अवसरों का एक बड़ा स्त्रोत बन गई हैं। इसके अलावा, शैक्षणिक क्षेत्र की बात करें तो त्रिवेंद्रम, जम्मू और अगरतला में तकनीकी संस्थानों में छात्रों के लिए 100 प्रतिशत प्लेसमेंट होता है और उनमें से लगभग 50 प्रतिशत उच्च शिक्षा के लिए नासा जाते हैं। स्वदेशी मानव अंतरिक्ष मिशन गगनयान भारतीयों को अंतरिक्ष में ले जाने के लिए लगभग तैयार है। अगर ये कामयाब रहता है तो भारत अमेरिका, रूस और चीन के बाद अंतरिक्ष में इंसान भेजने वाला चौथा देश हो जाएगा।

2014 से पहले लगभग 350 स्टार्टअप थे। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जब अपने स्वतंत्रता दिवस संबोधन में लाल किले की प्राचीर से आह्वान किया और 2016 में विशेष स्टार्टअप योजना शुरू की, तो उसके बाद से स्टार्ट-अप्स में एक बड़ी छलांग देखने को मिली है। एक लाख से ज्यादा स्टार्ट-अप हो चुके हैं जिनमें से 100 से अधिक यूनिकॉर्न हैं। ▪

प्रधानमंत्री को मिस्र के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया

मिस्र के राष्ट्रपति श्री अब्देल फतह अल-सिसी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को 25 जून 2023 को काहिरा की प्रेसीडेंसी में आयोजित एक विशेष समारोह में मिस्र के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार '**ऑर्डर ऑफ द नाइल**' से सम्मानित किया। प्रधानमंत्री ने इस सम्मान के लिए भारत के लोगों की ओर से राष्ट्रपति सिसी को धन्यवाद दिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी यह पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय हैं। ▪

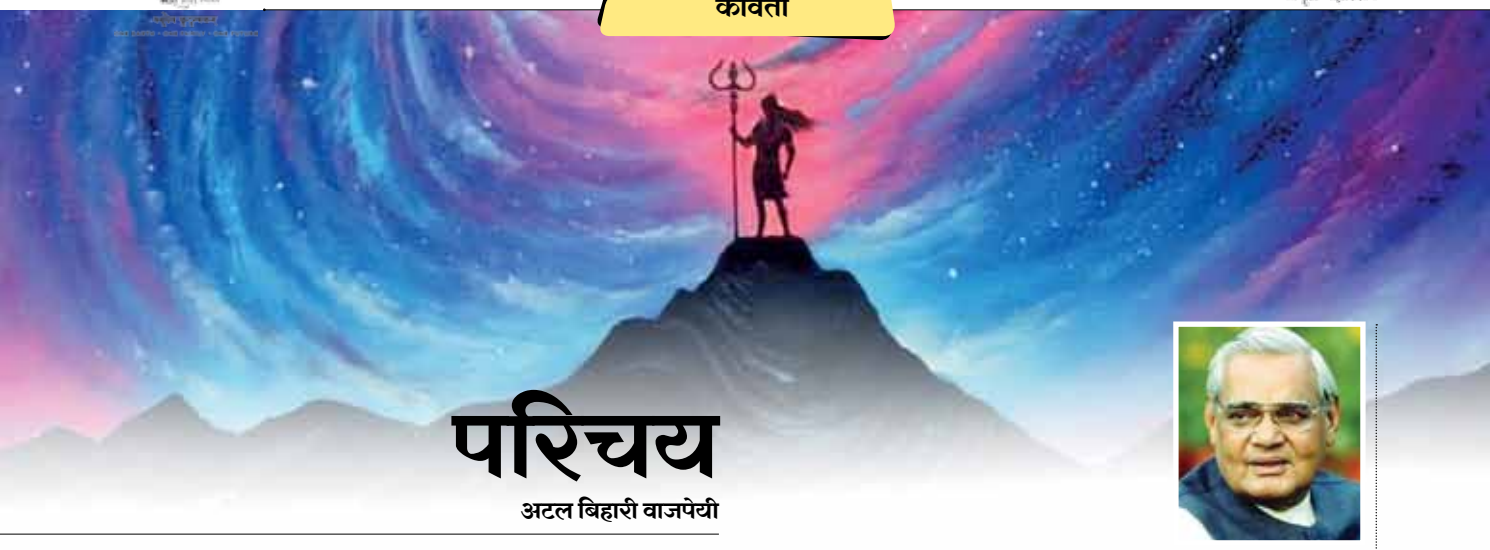

परिचय

अटल बिहारी वाजपेयी

हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय।
मैं शंकर का वह क्रोधानल कर सकता जगती क्षार-क्षार।
डमरू की वह प्रलय-ध्वनि हूँ जिसमें नचता भीषण संहार।
रणचण्डी की अतृप्त प्यास, मैं दुर्गा का उन्मत्त हास।
मैं यम की प्रलयंकर पुकार, जलते मरघट का धुआँधार।
फिर अन्तरतम की ज्वाला से, जगती में आग लगा दूँ मैं।
यदि धधक उठे जल, थल, अम्बर, जड़, चेतन तो कैसा विस्मय?
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं आदि पुरुष, निर्भयता का वरदान लिए आया भू पर।
पय पी कर सब मरते आए, मैं अमर हुआ लो विष पी कर।
अधरों की प्यास बुझाई है, पी कर मैंने वह आग प्रखर।
हो जाती दुनिया भस्मसात्, जिसको पल भर में ही छू कर।
भय से व्याकुल फिर दुनिया ने प्रारंभ किया मेरा पूजन।
मैं नर, नारायण, नीलकंठ बन गया न इस में कुछ संशय।
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं अखिल विश्व का गुरु महान्, देता विद्या का अमरदान।
मैंने दिखलाया मुक्ति-मार्ग, मैंने सिखलाया ब्रह्मज्ञान।
मेरे वेदों का ज्ञान अमर, मेरे वेदों की ज्योति प्रखर।
मानव के मन का अंधकार, क्या कभी सामने सका ठहर?
मेरा स्वर नभ में घहर-घहर, सागर के जल में छहर-छहर।
इस कोने से उस कोने तक, कर सकता जगती सौरभमय।
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं तेजपुंज, तमलीन जगत में फैलाया मैंने प्रकाश।
जगती का रच करके विनाश, कब चाहा है निज का विकास?
शरणागत की रक्षा की है, मैंने अपना जीवन दे कर।
विश्वास नहीं यदि आता तो साक्षी है यह इतिहास अमर।
यदि आज देहली के खण्डहर, सदियों की निद्रा से जगकर।
गुंजार उठे ऊँचे स्वर से 'हिन्दू की जय' तो क्या विस्मय?
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

दुनिया के वीराने पथ पर जब-जब नर ने खाई ठोकर।
दो आँसू शेष बचा पाया जब-जब मानव सब कुछ खोकर।
मैं आया तभी द्रवित हो कर, मैं आया ज्ञानदीप ले कर।
भूला-भटका मानव पथ पर चल निकला सोते से जग कर।
पथ के आवर्तों से थक कर, जो बैठ गया आधे पथ पर।
उस नर को राह दिखाना ही मेरा सदैव का दृढ़ निश्चय।
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैंने छाती का लहू पिला पाले विदेश के क्षुधित लाल।
मुझ को मानव में भेद नहीं, मेरा अन्तस्थल वर विशाल।
जग के ठुकराए लोगों को, लो मेरे घर का खुला द्वार।
अपना सब कुछ हूँ लुटा चुका, फिर भी अक्षय है धनागार।
मेरा हीरा पाकर ज्योतित परकीयों का वह राजमुकुट।
यदि इन चरणों पर झुक जाए कल वह किरीट तो क्या विस्मय?
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं वीर पुत्र, मेरी जननी के जगती में जौहर अपार।
अकबर के पुत्रों से पूछो, क्या याद उन्हें मीनाबजार?
क्या याद उन्हें चित्तौड़ दुर्ग में जलने वाली आग प्रखर?
जब हाय सहस्रों माताएं, तिल-तिल जल कर हो गईं अमर।
वह बुझने वाली आग नहीं, रग-रग में उसे समाए हूँ।
यदि कभी अचानक फूट पड़े विप्लव लेकर तो क्या विस्मय?
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा है कर लूँ जग को गुलाम?
मैंने तो सदा सिखाया है करना अपने मन को गुलाम।
गोपाल-राम के नामों पर कब मैंने अत्याचार किए?
कब दुनिया को हिन्दू करने घर-घर में नरसंहार किए?
कोई बतलाए काबुल में जा कर कितनी मस्जिद तोड़ीं?
भूभाग नहीं, शत-शत मानव के हृदय जीतने का निश्चय।
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

मैं एक बिंदु, परिपूर्ण सिन्धु है यह मेरा हिन्दू समाज।
मेरा-इसका सम्बन्ध अमर, मैं व्यक्ति और यह है समाज।
इससे मैंने पाया तन-मन, इससे मैंने पाया जीवन।
मेरा तो बस कर्तव्य यही, कर दूँ सब कुछ इसके अर्पण।
मैं तो समाज की थाती हूँ, मैं तो समाज का हूँ सेवक।
मैं तो समष्टि के लिए व्यष्टि का कर सकता बलिदान अभय।
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय!

भारत ने आपदा प्रबंधन की ताकत विकसित की

बहुत से लोग कहते हैं कि प्रधानमंत्री के तौर पर मैंने ये अच्छा काम किया, वो बड़ा काम किया। 'मन की बात' के कितने ही श्रोता, अपनी चिट्ठियो में बहुत सारी प्रशंसा करते हैं। कोई कहता है ये किया, कोई कहता है वो किया, ये अच्छा किया, ये ज्यादा अच्छा किया, ये बढ़िया किया, लेकिन, मैं, जब भारत के सामान्य मानवी के प्रयास, उनकी मेहनत, उनकी इच्छा शक्ति को देखता हूँ, तो खुद अपने आप, अभिभूत हो जाता हूँ। बड़े से बड़ा लक्ष्य हो, कठिन-से-कठिन चुनौती हो, भारत के लोगों का सामूहिक बल, सामूहिक शक्ति, हर चुनौती का हल निकाल देता है। देश के पश्चिमी छोर पर कितना बड़ा Cyclone आया। तेज चलने वाली हवाएँ, तेज बारिश। Cyclone Biparjoy (बिपरजॉय) ने कच्छ में कितना कुछ तहस-नहस कर दिया, लेकिन, कच्छ के लोगों ने जिस हिम्मत और तैयारी के साथ इतने खतरनाक Cyclone का मुकाबला किया, वो भी उतना ही अभूतपूर्व है। दो दिन बाद ही कच्छ के लोग, अपना नया वर्ष, यानि आषाढ़ी बीज भी मनाने जा रहे हैं। ये भी संयोग है कि आषाढ़ी बीज, कच्छ में वर्षा की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। मैं, इतने साल कच्छ आता-जाता रहा हूँ, वहाँ के लोगों की सेवा करने का मुझे सौभाग्य भी मिला है और इसके लिए कच्छ के लोगों का हौंसला और उनकी जिजीविषा के बारे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। दो दशक पहले के विनाशकारी भूकंप के बाद जिस कच्छ के बारे में कहा जाता था कि वो कभी उठ नहीं पाएगा, आज, वही जिला, देश के तेजी से विकसित होते जिलों में से एक है। Cyclone बिपरजॉय ने जो तबाही मचाई है, उससे भी कच्छ के लोग बहुत तेजी से उभर जाएंगे।

प्राकृतिक आपदाओं पर किसी का जोर नहीं होता, लेकिन, बीते वर्षों में भारत ने आपदा प्रबंधन की जो ताकत विकसित की है, वो आज एक उदाहरण बन रही है। प्राकृतिक आपदाओं से मुकाबला करने का एक बड़ा तरीका है - प्रकृति का संरक्षण। आजकल, Monsoon के समय में तो, इस दिशा में, हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। इसीलिए ही आज देश, 'Catch the Rain' जैसे अभियानों के जरिए सामूहिक प्रयास कर रहा है। पिछले महीने 'मन की बात' में ही हमने जल संरक्षण से जुड़े Start-Ups की चर्चा की थी। इस बार भी मुझे चिट्ठी लिखकर कई ऐसे लोगों के बारे में बताया गया है जो पानी की एक-एक बूंद बचाने के लिए जी-जान से लगे हैं। ऐसे ही एक साथी हैं - यूपी के बांदा जिले के तुलसीराम यादव जी। तुलसीराम यादव जी लुकतरा ग्राम पंचायत के प्रधान हैं। आप भी जानते हैं कि बांदा और बुंदेलखंड क्षेत्र में पानी को लेकर कितनी कठिनाईयाँ रही हैं। इस चुनौती से पार पाने के लिए तुलसीराम जी ने गाँव के लोगों को साथ लेकर इलाके में 40 से ज्यादा तालाब बनवाए हैं। तुलसीराम जी ने अपनी मुहिम का आधार बनाया है - खेत का पानी खेत में, गाँव का पानी गाँव में। आज उनकी मेहनत का ही नतीजा है कि उनके गाँव में भू-जल स्तर सुधर रहा है। ऐसे ही यू.पी. के हापुड़ जिले में लोगों ने मिलकर के एक विलुप्त नदी को पुनर्जीवित किया है। यहाँ काफी समय पहले नीम नाम की एक नदी हुआ करती थी। समय के साथ

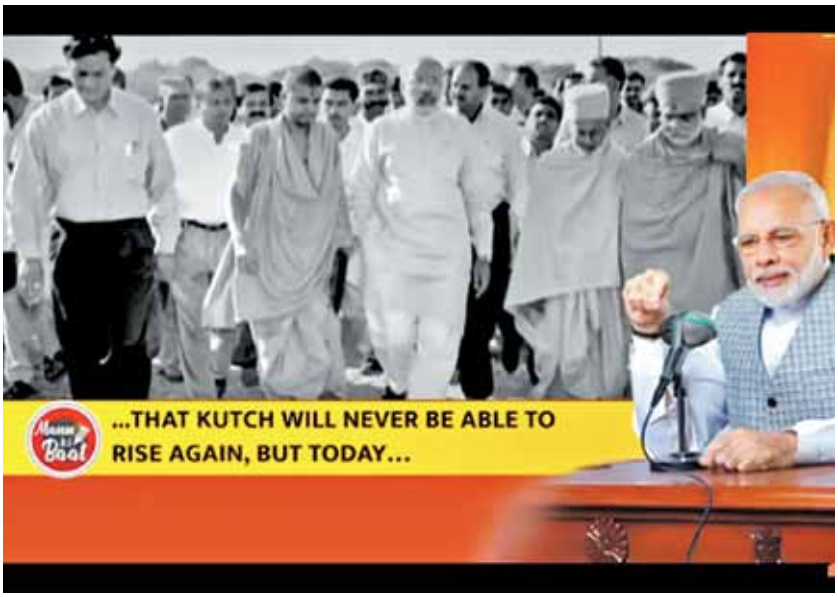

प्रबंधन की बात हो रही है, तो मैं, छत्रपति शिवाजी महाराज को भी याद करूंगा। छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता के साथ ही उनकी Governance और उनके प्रबंध कौशल से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। विशेषकर, जल-प्रबंधन और नौसेना को लेकर छत्रपति शिवाजी महाराज ने जो कार्य किए, वो आज भी भारतीय इतिहास का गौरव बढ़ाते हैं। उनके बनाए जलदुर्ग, इतनी शताब्दियों बाद भी समंदर के बीच में आज भी शान से खड़े हैं।

वो लुप्त हो गई, लेकिन, स्थानीय स्मृतियाँ और जन-कथाओं में उसे हमेशा याद किया जाता रहा। आखिरकार, लोगों ने अपनी इस प्राकृतिक धरोहर को फिर से सजीव करने की ठानी। लोगों के सामूहिक प्रयास से अब 'नीम नदी' फिर से जीवंत होने लगी है। नदी के उद्गम स्थल को अमृत सरोवर के तौर पर भी विकसित किया जा रहा है।

ये नदी, नहर, सरोवर, ये केवल जल-स्त्रोत ही नहीं होते हैं, बल्कि इनसे, जीवन के रंग और भावनाएं भी जुड़ी होती हैं। ऐसा ही एक दृश्य अभी कुछ ही दिन पहले महाराष्ट्र में देखने को मिला। ये इलाका ज्यादातर सूखे की चपेट में रहता है। पांच दशक के इंतजार के बाद यहाँ Nilwande Dam (निलवंडे डैम) की Canal का काम अब पूरा हो रहा है। कुछ दिन पहले Testing के दौरान Canal में पानी छोड़ा गया था। इस दौरान जो तस्वीरें आयी, वो वाकई भावुक करने वाली थी। गांव के लोग ऐसे झूम रहे थे, जैसे होली-दिवाली का त्यौहार हो।

जब प्रबंधन की बात हो रही है, तो मैं, छत्रपति शिवाजी महाराज को भी याद करूंगा। छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता के साथ ही उनकी Governance और उनके प्रबंध कौशल से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। विशेषकर, जल-प्रबंधन और नौसेना को लेकर छत्रपति शिवाजी महाराज ने जो कार्य किए, वो आज भी भारतीय इतिहास का गौरव बढ़ाते हैं। उनके बनाए जलदुर्ग, इतनी शताब्दियों बाद भी समंदर के बीच में आज भी शान से खड़े हैं। इस महीने की शुरुआत में ही छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वर्ष पूरे हुए हैं। इस अवसर को एक बड़े पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। इस दौरान महाराष्ट्र के रायगढ़ किले में इससे जुड़े भव्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कई वर्ष पहले 2014 में, मुझे, रायगढ़ जाने, उस पवित्र भूमि को नमन करने का सौभाग्य मिला था। यह हम सबका कर्तव्य है कि इस अवसर पर हम छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रबंध कौशल को जानें, उनसे सीखें। इससे हमारे भीतर, हमारी विरासत पर गर्व का बोध भी जगेगा, और भविष्य के लिए कर्तव्यों की प्रेरणा भी मिलेगी।

देश के कई सरपंचों ने, ग्राम प्रधानों ने भी, ये बीड़ा उठा लिया है कि वो, अपने गांव में टी.बी. को समाप्त करके ही रहेंगे।

नैनीताल के एक गांव के निक्षय मित्र श्रीमान दीकर सिंह मेवाड़ी जी ने टी.बी. के छह मरीजों को गोद लिया है। ऐसे ही किन्नौर की एक ग्राम पंचायत के प्रधान निक्षय मित्र श्रीमान ज्ञान सिंह जी भी अपने ब्लॉक में टी.बी. मरीजों को हर जरुरी सहायता उपलब्ध कराने में जुटे हैं। भारत को टी.बी. मुक्त बनाने की मुहिम में हमारे बच्चे और युवा साथी भी पीछे नहीं हैं। हिमाचल प्रदेश के ऊना की 7 साल की बेटी नलिनी सिंह का कमाल देखिए। बिटिया नलिनी, अपनी Pocket money से, टी.बी. मरीजों की मदद कर रही है। आप जानते हैं कि बच्चों को गुल्लक से कितना प्यार होता है, लेकिन, मध्य प्रदेश के कटनी जिले की 13 साल की मीनाक्षी और पश्चिम बंगाल के Diamond Harbour के 11 साल के बश्वर मुखर्जी, दोनों ही कुछ अलग ही बच्चे हैं। इन दोनों बच्चों ने अपने गुल्लक के पैसे भी टी.बी. मुक्त भारत के अभियान में लगा दिए हैं। ये सभी उदाहरण भावुकता से भरे होने के साथ ही, बहुत प्रेरक भी हैं। कम उम्र में बड़ी सोच रखने वाले इन सभी बच्चों की, मैं हृदय से प्रशंसा करता हूं।

हम भारतवासियों का स्वभाव होता है कि हम हमेशा नए विचारों के स्वागत के लिए तैयार रहते हैं। हम अपनी चीजों से प्रेम करते हैं और नई चीजों को आत्मसात भी करते हैं। इसी का एक उदाहरण है-जापान की तकनीक मियावाकी, अगर किसी जगह की मिट्टी उपजाऊ नहीं रही हो, तो मियावाकी तकनीक, उस क्षेत्र को, फिर से हरा-भरा करने का बहुत अच्छा तरीका होती है। मियावाकी जंगल तेजी से फैलते हैं और दो-तीन दशक में जैव विविधता का केंद्र बन जाते हैं।

अब इसका प्रसार बहुत तेजी से भारत के भी अलग-अलग हिस्सों में हो रहा है। हमारे यहाँ केरला के एक teacher श्रीमान राफी रामनाथ जी ने इस तकनीक से एक इलाके की तस्वीर ही बदल दी। दरअसल, रामनाथ जी अपने students को, प्रकृति और पर्यावरण के बारे में गहराई से समझाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने एक हर्बल गार्डन ही बना डाला। उनका ये गार्डन अब एक Biodiversity Zone बन चुका है। उनकी इस कामयाबी ने उन्हें और भी प्रेरणा दी। इसके बाद राफी जी ने मियावाकी तकनीक से एक Biodiversity Zone, यानि छोटा जंगल और इसे नाम दिया - 'विद्यावनम्'। अब इतना खूबसूरत नाम तो एक शिक्षक ही रख सकता है - 'विद्यावनम्'। रामनाथ जी के इस 'विद्यावनम्' में छोटी सी जगह में 115 varieties के 450 से अधिक पेड़ लगाए गए। उनके students भी इनके रखरखाव में उनका हाथ बटाते हैं। इस खूबसूरत जगह को देखने के लिए आसपास के स्कूली बच्चे, आम नागरिक - काफी भीड़ उमड़ती है। मियावाकी जंगलों को किसी भी जगह, यहाँ तक कि शहरों में भी आसानी से उगाया जा सकता है। कुछ समय पहले ही मैंने गुजरात में केवड़िया, एकता नगर में, मियावाकी forest का उद्घाटन किया था। कच्छ में भी 2001 के भूकंप में मारे गए लोगों की याद में मियावाकी पद्धति से स्मृति वन बनाया गया है। कच्छ जैसी जगह पर इसका सफल होना ये बताता है कि मुश्किल से मुश्किल प्राकृतिक परिवेश में भी ये तकनीक कितनी प्रभावी है। इसी तरह, अंबाजी और पावागढ़ में भी मियावाकी method से पौधे लगाए गए हैं। मुझे पता चला है कि लखनऊ के अलीगंज में भी एक मियावाकी उद्यान तैयार किया जा रहा है। पिछले चार साल में मुंबई और उसके आस-पास के इलाकों में ऐसे 60 से ज्यादा जंगलों पर काम किया गया है। अब तो ये technique पूरी दुनिया में पसंद की जा रही है। Singapore, Paris, Australia, Malaysia जैसे कितने ही देशों में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग हो रहा है। मैं देशवासियों से, खासकर, शहरों में रहने वाले लोगों से, आग्रह करूंगा कि वे मियावाकी पद्धति के बारे में जरुर जानने का प्रयास करें। इसके जरिए आप अपनी धरती और प्रकृति को हरा-भरा और स्वच्छ बनाने में अमूल्य योगदान दे सकते हैं।

आजकल हमारे देश में जम्मू-कश्मीर की खूब चर्चा होती है। कभी बढ़ते पर्यटन के कारण, तो कभी G-20 के शानदार आयोजनों के कारण। कुछ समय पहले मैंने 'मन की बात' में आपको बताया था कि कैसे कश्मीर के 'नादरू' देश के बाहर भी पसंद किए जा रहे हैं। अब जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले के लोगों ने एक कमाल कर दिखाया है। बारामूला में खेती-बाड़ी तो काफी समय से होती है, लेकिन यहाँ, दूध की कमी रहती थी। बारामूला के लोगों ने इस चुनौती को एक अवसर के रूप में लिया। यहाँ बड़ी संख्या में लोगों ने डेयरी का काम शुरू किया। इस काम में सबसे आगे यहाँ की महिलाएं आईं, जैसे कि एक बहन हैं – इशरत नबी।

इशरत, एक graduate है और इन्होंने 'Mir Sisters Dairy Farm (मीर सिस्टर्स डेयरी फार्म)' शुरू किया है। उनके डेयरी फार्म से हर दिन करीब डेढ़-सौ लीटर दूध की बिक्री हो रही है। ऐसे ही सोपोर के एक साथी हैं - वसीम अनायत। वसीम के पास दो दर्जन से ज्यादा पशु हैं और वो हर दिन दो-सौ लीटर से ज्यादा दूध बेचते हैं। एक और युवा आबिद हुसैन भी डेयरी का काम कर रहें हैं। इनका काम भी खूब आगे बढ़ रहा है। ऐसे लोगों की मेहनत की वजह से ही आज बारामूला में हर रोज साढ़े 5 लाख लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है। पूरा बारामूला, एक नयी श्वेत क्रांति की पहचान बन रहा है। पिछले ढाई-तीन वर्षों में यहाँ 500 से ज्यादा dairy units लगी हैं। बारामूला की dairy industry इस बात की गवाह है कि हमारे देश का हर हिस्सा कितनी संभावनाओं से भरा हुआ है। किसी क्षेत्र के लोगों की सामूहिक इच्छा शक्ति कोई भी लक्ष्य प्राप्त करके दिखा सकती है। इसी महीने खेल जगत से भारत के लिए कई बड़ी खुशखबरी आई हैं। भारत की टीम ने पहली बार Women's Junior Asia Cup जीतकर तिरंगे की शान बढ़ाई है। इसी महीने हमारी Men's Hockey Team ने भी Junior Asia Cup जीता है। इसके साथ ही हम इस tournament के इतिहास में सबसे अधिक जीत दर्ज करने वाले टीम भी बन गए हैं। Junior Shooting World Cup उसमें भी हमारी junior team ने भी कमाल कर दिया। भारतीय टीम ने इस tournament में पहला स्थान हासिल किया है। इस tournament में कुल जितने gold medals थे, उसमें से 20 प्रतिशत अकेले भारत के खाते में आए हैं। इसी जून में Asian Under Twenty Athletics Championship भी हुई। इसमें, भारत, पदक तालिका में, 45 देशों में, top तीन में रहा।

पहले एक समय होता था जब हमें अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों के बारे में पता तो चलता था, लेकिन, उनमें अक्सर भारत का कहीं कोई नाम नहीं होता था। लेकिन, आज, मैं, केवल पिछले कुछ सप्ताह की सफलताओं का जिक्र कर रहा हूँ, तो भी list इतनी लंबी हो जाती है। यही हमारे युवाओं की असली ताकत है। ऐसे कितने ही खेल और प्रतियोगिताएं हैं, जहाँ आज भारत, पहली बार, अपनी मौजूदगी दर्ज करवा रहा है। जैसे कि long jump में श्रीशंकर मुरली ने Paris Diamond League जैसे प्रतिष्ठित आयोजन में देश को bronze दिलाया है। ये इस प्रतियोगिता में भारत का पहला मेडल है। ऐसे

ही एक सफलता हमारी Under Seventeen Women Wrestling ने किर्गिस्तान में भी दर्ज की है। मैं देश के इन सभी athletes, उनके parents और coaches, सबको उनके प्रयासों के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

international आयोजनों में देश की इस सफलता के पीछे राष्ट्रीय स्तर पर हमारे खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत होती है। आज, देश के अलग-अलग राज्यों में एक नए उत्साह के साथ खेलों के आयोजन होते हैं। इनसे खिलाड़ियों को खेलने, जीतने और हार से सीखने का मौका मिलता है। जैसे, अभी उत्तर प्रदेश में Khelo India University Games का आयोजन हुआ। इसमें युवाओं में खूब उत्साह और जोश देखने को मिला। इन खेलों में हमारे युवाओं ने ग्यारह record तोड़े हैं। इन खेलों में Punjab University, अमृतसर की Guru Nanak Dev University और कर्नाटका की Jain University, medal tally में पहले तीन स्थानों पर रही है।

ऐसे tournaments का एक बड़ा पहलू यह भी होता है कि इनसे युवा खिलाड़ियों की कई inspiring stories भी सामने आती हैं। Khelo India University Games में Rowing स्पर्धा में असम की Cotton University के अन्यतम राजकुमार ऐसे पहले दिव्यांग खिलाड़ी बने, जिन्होंने इसमें हिस्सा लिया। Barkatullah University की निधि पवैया घुटने में गंभीर चोट के बावजूद Shot-put में Gold Medal जीतने में कामयाब रही। Savitribai Phule Pune University के शुभम भंडारे को ankle injury के चलते, पिछले साल बेंगलुरु में निराशा हाथ लगी थी, लेकिन इस बार वे Steeplechase के Gold Medallist बने हैं। Burdwan University की सरस्वती कुंडू अपनी कबड्डी टीम की Captain हैं। वे कई मुश्किलों को पार कर यहाँ तक पहुँची हैं। बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले बहुत सारे Athletes को, TOPS Scheme से भी बहुत मदद मिल रही है। हमारे खिलाड़ी जितना खेलेंगे, उतना ही खिलेंगे।

21 जून भी अब आ ही गई है। इस बार भी, विश्व के कोने-कोने में लोग अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उत्सुकता से इंतजार कर रहे हैं। इस वर्ष योग दिवस की theme है- Yoga For Vasudhaiva Kutumbakam यानि 'एक विश्व-एक परिवार' के रूप में सबके कल्याण के लिए योग। यह योग की उस भावना को व्यक्त करता है, जो सबको जोड़ने वाली और साथ लेकर चलने वाली है। हर बार की तरह, इस बार भी देश के कोने-कोने में, योग से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

इस बार मुझे New York के संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, UN में होने वाले योग दिवस कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिलेगा। मैं, देख रहा हूँ, कि Social Media पर भी, योग दिवस को लेकर गजब का उत्साह दिख रहा है।

मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप, योग को अपने जीवन में जरुर अपनाएं, इसे, अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। अगर अब भी आप योग से नहीं जुड़े हैं तो आने वाली 21 जून, इस संकल्प के लिए बहुत बेहतरीन मौका है। योग में तो वैसे भी ज्यादा तामझाम की जरुरत ही नहीं होती है। देखिये, जब आप योग से जुड़ेंगे तो आपके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन आएगा।

20 जून को ऐतिहासिक रथयात्रा का दिन है। रथयात्रा की पूरी दुनिया में एक विशिष्ट पहचान है। देश के अलग-अलग राज्यों में बहुत धूमधाम से भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकाली जाती है। ओडिशा के पुरी में होने वाली रथयात्रा तो अपने आप में अद्भुत होती है। जब मैं गुजरात में

था, तो मुझे, अहमदाबाद में होने वाली विशाल रथयात्रा में शामिल होने का अवसर मिलता था। इन रथयात्राओं में जिस तरह देश भर के, हर समाज, हर वर्ग के लोग उमड़ते हैं वो अपने आपमें बहुत अनुकरणीय है। ये आस्था के साथ ही 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का भी प्रतिबिम्ब होती है। भारतीय परंपरा और संस्कृति से जुड़े उत्सव की चर्चा करते हुए, मैं, देश के राजभवनों में हुए दिलचस्प आयोजनों का भी जरुर उल्लेख करूँगा। अब देश में राजभवनों की पहचान, सामाजिक और विकास कार्यों से होने लगी है। आज, हमारे राजभवन, टी.बी. मुक्त भारत अभियान के, प्राकृतिक खेती से जुड़े अभियान के, ध्वजवाहक बन रहे हैं। बीते समय में गुजरात हो, गोवा हो, तेलंगाना हो, महाराष्ट्र हो, सिक्किम हो, इनके स्थापना दिवस को, अलग-अलग राजभवनों ने जिस उत्साह के साथ celebrate किया, वह अपने आप में एक मिसाल है। यह एक बेहतरीन पहल है, जो 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना को सशक्त बनाती है।

भारत लोकतंत्र की जननी है, Mother of Democracy है। हम, अपने लोकतांत्रिक आदर्शों को सर्वोपरि मानते हैं, अपने संविधान को सर्वोपरि मानते हैं, इसलिए, हम 25 जून को भी कभी भुला नहीं सकते। यह वही दिन है जब हमारे देश पर emergency थोपी गई थी। यह भारत के इतिहास का काला दौर था। लाखों लोगों ने emergency का पूरी ताकत से विरोध किया था। लोकतंत्र के समर्थकों पर उस दौरान इतना अत्याचार किया गया, इतनी यातनाएं दी गईं कि आज भी, मन, सिहर उठता है। इन अत्याचारों पर पुलिस और प्रशासन द्वारा दी गई सजाओं पर बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं। मुझे भी 'संघर्ष में गुजरात' नाम से एक किताब लिखने का उस समय मौका मिला था। कुछ दिनों पहले ही emergency पर लिखी एक और किताब मेरे सामने आई जिसका शीर्षक है - Torture of Political Prisoners in India. Emergency के दौरान छपी इस पुस्तक में वर्णन किया गया है, कि कैसे, उस समय की सरकार, लोकतंत्र के रखवालों से क्रूरतम व्यवहार कर रही थी। इस किताब में ढेर सारी case studies हैं, बहुत सारे चित्र हैं। मैं चाहूँगा कि, आज, जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तो, देश की आजादी को खतरे में डालने वाले ऐसे अपराधों का भी जरुर अवलोकन करें। इससे आज की युवा पीढ़ी को लोकतंत्र के मायने और उसकी अहमियत समझने में और ज्यादा आसानी होगी।

'मन की बात' रंग-बिरंगे मोतियों से सजी एक सुंदर माला है जिसका हर मोती अपने आपमें अनूठा और अनमोल है। इस कार्यक्रम का हर episode बहुत ही जीवंत होता है। हमें, सामूहिकता की भावना के साथ-साथ समाज के प्रति कर्तव्य-भाव और सेवा-भाव से भरता है। यहां उन विषयों पर खुलकर चर्चा होती है, जिनके बारे में, हमें, आमतौर पर कम ही पढ़ने-सुनने को मिलता है। हम अक्सर देखते हैं कि 'मन की बात' में किसी विषय का जिक्र होने के बाद कैसे अनेकों देशवासियों को नई प्रेरणा मिली। हाल ही में मुझे देश की प्रसिद्ध भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना आनंदा शंकर जयंत का एक पत्र मिला।

अपने पत्र में उन्होंने 'मन की बात' के उस episode के बारे में लिखा है, जिसमें हमने story telling के बारे में चर्चा की थी। उस कार्यक्रम में हमने इस field से जुड़े लोगों की प्रतिभा को acknowledge किया था। 'मन की बात' के उस कार्यक्रम से प्रेरित होकर आनंदा शंकर जयंत ने 'कुट्टी कहानी' तैयार की है। यह बच्चों के लिए अलग-अलग भाषाओं की कहानियों का एक बेहतरीन संग्रह है। यह प्रयास इसलिए भी बहुत अच्छा है, क्योंकि इससे हमारे बच्चों का अपनी संस्कृति से लगाव और गहरा होता है। उन्होंने इन कहानियों के कुछ interesting videos अपने YouTube channel पर भी upload किए हैं। मैंने, आनंदा शंकर जयंत के इस प्रयास की विशेषतौर पर इसलिए चर्चा की, क्योंकि ये देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा कि कैसे देशवासियों के अच्छे काम, दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं। इससे सीखकर वे भी अपने हुनर से देश और समाज के लिए कुछ बेहतर करने की कोशिश करते हैं। यही तो हम भारतवासियों का वो collective power है, जो देश की प्रगति में नई शक्ति भर रही है। ▪

अमरनाथ यात्रा सरकार के भरोसे और लोगों के उत्साह को दर्शाती है

इस वर्ष के लिए नियोजित दो महीने की अमरनाथ यात्रा की योजना सरकार के भरोसे और लोगों के उत्साह को दर्शाती है, प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अब तक जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के प्रति शून्य सहिष्णुता (जीरो-टॉलरेंस) का आव्हान करते हुए जो कहा वह करके दिखाया है। जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आतंकवाद और उग्रवाद के खतरे से कुशलतापूर्वक निपटने का एक उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वोट बैंक की राजनीति के अनुरूप, कांग्रेस और उसके सहयोगी राजनीतिक दलों ने अनुच्छेद 370 को जारी रखने की अनुमति देने में निहित स्वार्थ विकसित किया था, हालांकि संविधान में इसे एक ''अस्थायी प्रावधान'' के रूप में अंकित और अभिलिखित किया गया था।

समग्र शांतिपूर्ण वातावरण और सरकार के विश्वास एवं सामान्य जन के उत्साह के कारण, कई वर्षों के बाद पहली बार जम्मू-कश्मीर में इस वर्ष 1 जुलाई से शुरू होने वाली पवित्र अमरनाथ यात्रा 2 महीने की लंबी अवधि की होगी, जिसे पहले कभी-कभी सुरक्षा और अन्य कारणों से 15-20 दिनों तक के लिए भी सीमित कर दिया जाता था। पहली बार, श्री माता वैष्णो देवी मंदिर में लगभग 50,000 लोग प्रति दिन दर्शन कर रहे हैं, पिछले सीजन में राज्य में आने वाले 1 करोड़, 70 लाख पर्यटकों की रिकॉर्ड संख्या के बारे में तो कहना ही क्या? ▪

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक आदर्श नेता

जब वह पहली बार हिन्दू महासभा के अधिवेशन में उपस्थित हुए तो वह हिन्दी में बोल नहीं सके। परन्तु उन्होंने वायदा किया कि वह जल्द इस भाषा को सीख लेंगे और अगले वर्ष उन्होंने हिन्दी में भाषण दिया।

बंगाल के बाहर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अधिकांश भाषण हिन्दी में होते थे। जब वह पहली बार हिन्दू महासभा के अधिवेशन में उपस्थित हुए तो वह हिन्दी में बोल नहीं सके। परन्तु उन्होंने वायदा किया कि वह जल्द इस भाषा को सीख लेंगे और अगले वर्ष उन्होंने हिन्दी में भाषण दिया। निःसन्देह उनसे हिन्दी में सही व्याकरण के उपयोग करने की आशा नहीं की जा सकती थी। परन्तु उन्होंने अपने आप को सही ढंग से अभिव्यक्त किया और अधिकांश अवसरों पर उनकी भाषा अत्यंत शक्तिशाली होती थी।

जब उन्होंने हिन्दी पर आग्रह किया

उन्होंने भारतीय जनसंघ के उद्घाटन सत्र का अध्यक्षीय भाषण अंग्रेजी में लिखा। परन्तु वह प्रतिनिधियों को इसकी प्रतियां हिन्दी में वितरित करना चाहते थे। परन्तु समय बहुत कम था। यह 20 अक्टूबर का दिन था। भाषण अगले दिन प्रातः 10 बजे पढ़ा जाना था। इसके अलावा विषय समिति की बैठक भी 26 तारीख को होनी थी। परन्तु, वह इस विषय पर बहुत उत्सुक थे। फलस्वरूप, न केवल अध्यक्षीय भाषण, बल्कि घोषणापत्र को भी हिन्दी में अनुवादित किया और अर्जुन प्रेस के कर्मचारियों की अपार उत्साह के कारण दोनों को समय पर छाप कर प्रतिनिधियों को पेश किया गया। किन्तु, डा. मुकर्जी जी ने भाषण नहीं पढ़ा। जैसा कि रिवायत थी, उसके अनुसार उनका मुंहजबानी भाषण अनुवादित भाषण से कहीं अधिक प्रभावशाली था।

हिन्दी भाषणों में डॉ. मुकर्जी ने संस्कृत शब्दों का उपयोग किया। अतः उन्हें कभी भी सही शब्द चुनने में कठिनाई नहीं आई। उनकी संस्कृत शैली के कारण उनकी भाषा एक दम शुद्ध थी। किन्तु, उन्होंने 'सर्वनाश' शब्द का उपयोग नहीं किया, बल्कि 'खतरनाश' कहना बेहतर समझा। यह वह शब्द था, जिसे उन्होंने स्वयं गढ़ा था। वह हमेशा सोचा करते थे कि वह गलत शब्द का उपयोग कर रहे हैं। परन्तु, वह गलती बताने में हिचकिचाहट महसूस करते थे। एक दिन, निःसंदेह, जब आम बातचीत चल रही थी तो भाषा बहस का विषय बन गया तो मैंने 'खतरनाश' शब्द को सही शब्द नहीं बताया। सही होता, अगर वह 'सर्वनाश' या 'सत्यानाश' का प्रयोग करते। उन्होंने इस सुझाव के लिए मुझे धन्यवाद दिया, परन्तु कहा कि क्या तुम्हें महसूस नहीं होता है कि 'खतरनाश' और 'सर्वनाश' के बीच दो शब्दों के अंतर की छाया है? हां, अन्तर तो है।

यहीं वह अन्तर था जिससे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी देश के अनेक विरोधी नेताओं से अलग-थलग दिखाई पड़ते थे। डॉ. मुखर्जी सतर्क थे और हमेशा ही सरकार और दिग्गजों का ध्यान गलत नीतियों व कदमों की ओर दिलाया करते थे। परन्तु वह न तो तबाही के पैगंबर थे, न ही 'साईनिक' 'पागल' थे। अतः उन्होंने जानबूझकर 'खतरनाश', 'सर्वनाश' शब्द चुने जिनका मतलब पूर्ण 'तबाही' से था, जो फारसी और संस्कृत के मिले-जुले शब्दों से निकलता था। यदि इस अन्तर को समझ लिया जाए और इस विरोध के अन्तर को मान लिया जाए तो सरकार की बेकार की आलोचना नहीं होगी, बल्कि राष्ट्रीय नीतियों के निर्माण में रचनात्मक योगदान मिल पाएगा।

किसी शब्द का विरोध काम गुमराह करना नहीं होता है, बल्कि नेतृत्व करना बन जाता है। कामकाज नकारात्मक नहीं, बल्कि सकारात्मक होना चाहिए। इससे सरकार को कभी आलसी या लापरवाह नहीं बनने देना चाहिए। परन्तु इससे लोगों में भय भी पैदा नहीं होना चाहिए और न ही मनोबल गिरना चाहिए।

जनसंघ ने कभी अपना सिर झुकने नहीं दिया

प्रथम आम चुनाव में कांग्रेस ने पूरी सीटें अपने पक्ष में कर लीं। अधिकांश विरोधी नेता हार गए। ऐसी पार्टियां जिन्होंने वायदा किया था कि वे सरकार परिवर्तन पर देश की तस्वीर बदल देंगे, हार गईं। ऐसे वातावरण में एक व्यक्ति डा. मुखर्जी के पास पहुंचा और कहा कि भारत में लोकतंत्र का भविष्य अंधकारमय है। डॉ. मुखर्जी ने उससे दो प्रश्न पूछे।

1. क्या तुम्हारा लोकतंत्र में विश्वास है?
2. क्या तुम सक्रिय रूप से राजनीति में कार्य करने का संकल्प करते हो।

उस सज्जन ने 'हां' में जवाब दिया। इस पर डॉ. मुखर्जी ने कहा तो अब बताओं, कैसे लोकतंत्र का भविष्य अंधकारमय हो सकता है और यह भी जोड़ा कि यह तभी अंधकारमय होगा यदि हम काम न करें या आपको विश्वास ही न हो। जहां विश्वास रहता है, वहां अंधकार हो ही नहीं सकता। यह उज्ज्वल ही होगा।

मैंने देखा कि वास्तव में यही वह व्यक्ति है जो नेतृत्व कर सकता है। हम कभी-कभी लोगों से मिलते हैं, जिन्हें 'नेता' कहा जाता है परन्तु, शायद ही वे लोगों में विश्वास पैदा कर सकते हों। इसके विपरीत यदि आप उनके पास पूर्ण विश्वास के साथ पहुंचे तो आप आत्मसंतोष ही लेकर लौटें।

डॉ. मुखर्जी उन लोगों में से ऐसे व्यक्ति नहीं थे। जब हम उनसे मिले तो उन्होंने पराजय का रोना नहीं रोया। उन्होंने कहा कि यदि हम सफल होना चाहते हैं तो हमें कठिन परिश्रम करना होगा। उन्होंने आगे कहा कि जनसंघ ने कम से कम बेहतर कर दिखाया है। शेष सभी अन्य पार्टियों के सिर झुक गए परन्तु आपका अध्यक्ष सफल होकर आया है। हां, किसी की निराशा तस्वीर की उज्ज्वल आयाम होता है और यही हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए प्रेरित करता है। ▪

27 फरवरी, 1931 के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर विचार-विमर्श कर रहे थे कि तभी वहां अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया। चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे, अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होंने खुद ही मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद ही को ही समाप्त कर लिया।

अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के कई क्रांतिकारी वीर-सपूतों की याद आज भी हमारी रुह में जोश और देशप्रेम की एक लहर पैदा कर देती है एक वह समय था जब लोग अपना सब कुछ छोड़कर देश को आजाद कराने के लिए बलिदान देने को तैयार रहते थे। देशभक्ति की जो मिसाल हमारे देश के क्रांतिकारियों ने पैदा की थी उसी का परिणाम है कि आज हम सुख चैन से स्वतंत्र देश के नागरिक के रूप में आजाद हैं। वीरता और पराक्रम की कहानी हमारे देश के वीर क्रांतिकारियों ने रखी थी वह आजादी की लड़ाई की विशेष कड़ी थी, जिसके बिना आजादी मिलना नामुमकिन थी। देशप्रेम, वीरता और साहस की एक ऐसी ही मिसाल थे। शहीद क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, 25 साल की उम्र में भारत माता के लिए शहीद होने वाले योद्धा थे। इस महापुरुष के बारें में जितना कहा जाए उतना कम है। आजाद प्रखर देशभक्त थे।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म मध्यप्रदेश के जिला अलीराजपुर ग्राम भाबरा में 23 जुलाई सन् 1906 को हुआ। आजाद के पिता पंडित सीताराम तिवारी संवत् 1956 में अकाल के समय अपने पैतृक निवास बदरका, वर्तमान उन्नाव जिला, उत्तरप्रदेश को छोड़कर कुछ दिनों मध्य प्रदेश अलीराजपुर रियासत में नौकरी करते रहे, फिर जाकर भाबरा गाँव में बस गये। उनकी माँ का नाम जगरानी देवी था। आजाद का प्रारंभिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गाँव में बीता। अतएव बचपन में आजाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष बाण चलाये। यहीं बालक चन्द्रशेखर का बचपन बीता। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। बालक चन्द्रशेखर आजाद का मन अब देश को आजाद कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया। उस समय बनारस क्रान्तिकारियों का गढ़ था। वह मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के सपर्क में आये और क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गये। क्रान्तिकारियों का वह दल हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघर्ष के नाम से जाना जाता था।

असहयोग आंदोलन से जागे देश में दमनचक्र जारी था, सत्याग्रहियों के बीच निकल पड़े, प्रस्तरखंड उठाया बेंत बरसाने वालों में से एक सिपाही के सिर में दे मारा, पेशी होने पर अपना नाम आजाद, काम आजादी के कारखाने में मजदूरी और निवास जेलखाने में बताया। गुस्साए अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने पंद्रह बेंतों की सख्त सजा सुनाई, हर सांस में वंदेमातरम का निनाद करते हुए उन्होंने यह परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद

अचूक निशानेबाज आजाद ने अपना पावन शरीर मातृभूमि के शत्रुओं को फिर कभी छूने नहीं दिया। क्रांति की जितनी योजनाएं बनीं सभी के सूत्रधार आजाद थे, कानपुर में भगत सिंह से भेंट हुई, साथियों के अनुरोध पर आजाद एक रात घर गए और सुषुप्त मां एवं जागते पिता को प्रणाम कर कर्तव्य पथ पर वापस आ गए। सांडर्स का वधविधान पूरा कर राजगुरु, भगतसिंह और आजाद फरार हो गए, 8 अप्रैल 1929 को श्रमिक विरोधी ट्रेड डिस्प्यूट बिल का परिणाम सभापति द्वारा खोलते ही इसके लिए नियुक्त दर्शक दीर्घा में खड़े दत्त और भगत सिंह को असेंबली में बम के धमाके के साथ इंकलाब जिंदाबाद का नारा बुलंद करते गिरफ्तार कर लिया गया। भगत सिंह को छुड़ाने की योजना चन्द्रशेखर ने बनाई, पर बम जांचते वोहरा सहसा शहीद हो गए, घर में रखा बम दूसरे दिन फट जाने से योजना विफल हो गई, हमारी आजादी की नींव में उन सूरमाओं का इतिहास अमर है जिन्होंने हमें स्वाभिमान पूर्वक अपने इतिहास और संस्कृति की संरक्षा की अविचल प्रेरणा प्रदान की है।

27 फरवरी, 1931 के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर विचार विमर्श कर रहे थे कि तभी वहां अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया। चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे, अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होंने खुद ही मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद को ही समाप्त कर लिया। कहते हैं मौत के बाद अंग्रेजी अफसर और पुलिसवाले चन्द्रशेखर आजाद की लाश के पास जाने से भी डर रहे थे, चंद्रशेखर आजाद को वेश बदलने में बहुत माहिर माना जाता था, वह रूसी क्रांतिकारियों की कहानी से बहुत प्रेरित थे। चन्द्रशेखर आजाद की वीरता की कहानियां कई हैं जो आज भी युवाओं में देशप्रेम की लहर पैदा कर देती हैं, देश को अपने इस सच्चे वीर स्वतंत्रता सेनानी पर हमेशा गर्व रहेगा।

चन्द्रशेखर आज़ाद ने वीरता की नई परिभाषा लिखी। उनके बलिदान के बाद उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन और तेज हो गया, उनसे प्रेरणा लेकर हजारों युवक स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। आजाद की शहादत के सोलह वर्षों बाद 15 अगस्त सन् 1947 को हिन्दुस्तान की आजादी का उनका सपना पूरा तो हुआ। परन्तु चन्द्रशेखर आजाद, आजाद भारत को देख न सके। ▪

तिलकजी ने मराठा अंग्रेजी में और केसरी मराठी में समाचार पत्र प्रकाशित किये। मराठी व अंग्रेजी के दोनों समाचार पत्र राष्ट्रवादी विचारों के उद्घोषक बन गये। हिन्दू समाज की कुरीतियों के बारे में तिलकजी ने लेख लिखे। जन सामान्य में सामाजिक, राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिए उन्होंने केसरी के माध्यम से सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने का परामर्श दिया।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता तिलकजी

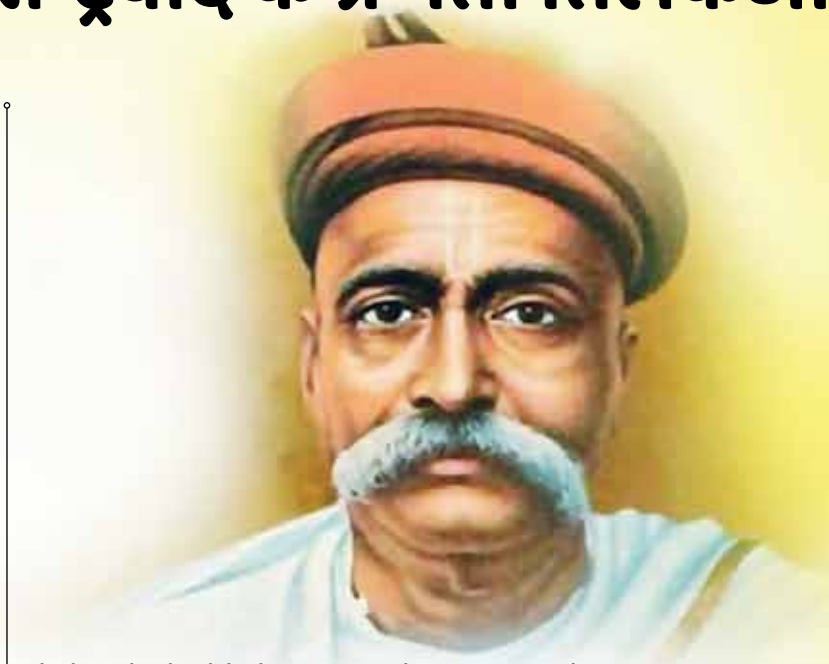

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक के नाते हम लोकमान्य तिलक का स्मरण करते हैं। इस महापुरूष का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरी में हुआ। गंगाधर शास्त्री और पार्वती बाई उनके माता-पिता थे। लोकमान्य गंगाधर तिलक की धार्मिक और संस्कृत की शिक्षा घर पर हुई। बाद में यह परिवार पूना चला आया। इनकी शिक्षा पूना के मराठी और इंग्लिश स्कूल से हुई। उच्च शिक्षा के लिए मुंबई के एलिफिस्टिन कॉलेज के विद्यार्थी बने उन्होंने संस्कृत में कविताएं भी की। ग्रेजुएट होने के बाद एलएलबी के अध्ययन काल में उन्होंने हिन्दू विधि शास्त्र का विशद अध्ययन किया। वे आगरकर के सपर्क में आये और न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की। इसके बाद चिपलुनकर का सहयोग मिला। तिलकजी ने मराठा अंग्रेजी में और केसरी मराठी में समाचार पत्र प्रकाशित किये। मराठी, अंग्रेजी के दोनों समाचार पत्र राष्ट्रवादी विचारों के उद्घोषक बन गये। दोनों समाचार पत्रों की सामग्री समान रहती थी। हिन्दू समाज की कुरीतियों के बारे में तिलकजी ने लेख लिखे। जन सामान्य में सामाजिक, राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिए उन्होंने केसरी के माध्यम से सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने का परामर्श दिया। अभी तक महाराष्ट्र के घरों में गणेश पूजन की परम्परा थी। इस उत्सव के माध्यम से राजनैतिक आंदोलन को ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचाने की पहल प्रारंभ हुई। आज न केवल सार्वजनिक गणेशोत्सव महाराष्ट्र में वरन् पूरे देश में मनाया जाता है। संस्कृति के माध्यम से राष्ट्र चेतना का अभियान तिलकजी ने सफल करके दिखाया।

1896-97 में महाराष्ट्र सहित मप्र, बिहार, पंजाब में भीषण अकाल पड़ा। प्लेग से लोग मरने लगे। लोगों को सहायता पहुंचाने में तिलक जी ने सक्रिय भूमिका निभाई, 1897 में महारानी विक्टोरिया के राज्यरोहण की हीरक जयंती मनाई गई। अधिकारी रैण्ड जिसने पूना में भेदभाव और ज्यादती की। 21 जून को पूना के गर्वमेंट हाउस में समारोह था।

कार्यक्रम की समाप्ति के बाद अंग्रेज अफसर रैण्ड टम-टम से चल पड़ा। इसके बाद लेफ्टिनेन्ट आयस्टन पत्नी के साथ दूसरी टम-टम से चला। रास्ते में उन पर पिस्तौल से गोलियां दागी गई। जनता पर अत्याचार का बदला क्रांतिकारियों ने ले लिया। उस समय केसरी में भवानी की तलवार शीर्षक कविता प्रकाशित हुई, जिसका सारांश यह था कि दुष्टों को मारकर मैंने भूमि का भार कम किया, मैंने स्वराज्य स्थापना और स्वधर्म रक्षा से देश को मुक्त किया।

तिलकजी पर राजद्रोह का मुकदमा चला। उन्हें कारावास की सजा मिली। उनके ऊपर दूसरा राजद्रोह का मुकदमा लादा गया। उन्हें देश निकाला दिया गया रंगून माण्डलें जेल में तिलकजी को रखकर यातनाएं दी गई। जून 1914 से तिलकजी को माण्डले जेल से मुक्ति मिली। इसके बाद से पूरे देश ने तिलकजी को राष्ट्रनायक मान लिया। स्वतंत्रता का उद्घोष जो राष्ट्र चेतना का मंत्र बन गया। उससे यह जाहिर हो गया कि लोकमान्य तिलक प्रखर देशभक्त और राष्ट्रवादी नेता है। एक जनवरी 1917 को तिलकजी कानपुर गये, वहां उनका देवता के समान स्वागत हुआ, स्थान-स्थान पर उनकी आरती उतारी गई।

कानपुर के परेड ग्राउण्ड पर बीस हजार लोगों की सभा में उनका अभिनंदन किया गया। हिन्दी नहीं जानने के कारण उन्होंने अंग्रेजी में भाषण देते हुए दिव्य उद्घोष किया कि स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। कांग्रेस में राष्ट्रवादी विचार का नेतृत्व तिलक जी ने किया। उनके विचारों से क्रांतिकारियों ने भी प्रेरणा ली। संस्कृति से ही राष्ट्र चेतना प्रखर हो सकती है, इसलिए उन्होंने धार्मिक त्यौहारों को राजनैतिक जागृति का माध्यम बनाया। ▪

क्या है सेक्यूलरिज्म...?

पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात भारतवर्ष को एक सेक्यूलर स्टेट घोषित किया गया है तथा तबसे यह शब्द लोगों की जुबान पर इतना चढ़ गया है कि क्या बड़े-बड़े नेता और क्या गाँव-गाँव, गली-गली में बातचीत के स्वर को ऊँचा करके ही भाषण की हवस मिटाने वाले छुटभैये, सभी दिन में चार बार सेक्यूलर स्टेट की दुहाई देकर अपनी बात मनवाने का तथा दूसरों को उसके विरुद्ध बताकर गलत सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।

सुनते-सुनते शब्द तो कानों में रम गया है, किंतु अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि भारत सरकार, बोलनेवाले नेता तथा सुनने वाली जनता सेक्यूलर शब्द का क्या अर्थ समझती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत वर्ष को एक सेक्यूलर स्टेट घोषित किया गया है तथा तबसे यह शब्द लोगों की जुबान पर इतना चढ़ गया है कि क्या बड़े-बड़े नेता और क्या गाँव-गाँव, गली-गली में बातचीत के स्वर को ऊँचा करके ही भाषण की हवस मिटाने वाले छुट भैये, सभी दिन में चार बार सेक्यूलर स्टेट की दुहाई देकर अपनी बात मनवाने का तथा दूसरों को उसके विरुद्ध बताकर गलत सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। सुनते-सुनते शब्द तो कानों में रम गया है, किंतु अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि भारत सरकार बोलने वाले नेता तथा सुनने वाली जनता सेक्यूलर शब्द का क्या अर्थ समझती हैं। विधान परिषद् में सेक्यूलर स्टेट का नाम लेने पर जब एक सदस्य ने पं. जवाहरलाल नेहरू से सेक्यूलर स्टेट का मतलब पूछा तो उन्होंने भी अर्थ बताने के स्थान पर सम्मानीय सदस्य को डाँटकर शब्द कोष देखने के लिए कहा। फलतः समस्या सुलझ नहीं पाई और आज भी लोग सेक्यूलर शब्द से भिन्न-भिन्न अर्थ लगाते हैं। सेक्यूलर के लिए भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त पर्यायों से यह भिन्नता स्पष्ट हो जाती है। लौकिक, धर्महीन, धर्मरहित, धर्मनिरपेक्ष, अधार्मिक, अधर्मी, निधर्मी, असांप्रदायिक आदि अनेक शब्दों का सेक्यूलर के पर्याय इस नाते प्रयोग होता है। निश्चित ही उपर्युक्त सभी शब्द समानार्थक नहीं हैं। उनमें मत भिन्नता ही नहीं है अपितु वे विरोध की सीमा-रेखा को भी स्पर्श कर जाते हैं। अपने राज्य के स्वरूप के संबंध में इतना वैषम्य वास्तव में हितावह नहीं है। अच्छा हो कि हम सेक्यूलर शब्द के ठीक अर्थ समझ लें; कम से कम जिस अर्थ में हम भारत को सेक्यूलर स्टेट बनाना चाहते हैं, उसका तो निर्णय कर ही लेना चाहिए।

रोमन साम्राज्य को प्रतिक्रिया

नेहरूजी के आदेशानुसार यदि डिक्शनरी का सहारा लिया जाए तो समस्या विशेष नहीं सुलझती, क्योंकि कोष में सेक्यूलर के अर्थ हैं अर्थात् अपना सौ वर्षों में एक बार होने वाला लौकिक। इनमें से लौकिक अर्थ सर्व साधारण व्यवहार में आता है तथा स्प्रिचुअल के विरोध में इसका प्रयोग होता है। सेक्यूलर स्टेट को कल्पना के विकास के पीछे भी यही भाव है। क्योंकि सेक्यूलर स्टेट की कल्पना का उदय पवित्र रोमन साम्राज्य के विरोध में से हुआ है। यूरोप के सभी देश किसी समय रोम के पोप के अधीन थे तथा प्रत्येक देश का राजा पोप के नाम पर ही शासन करता था। किंतु धीरे-धीरे रोमन कैथोलिक मत और पोप दोनों या इनमें से किसी एक के प्रति अविश्वास और विरोध की भावना बढ़ने लगी। फलतः प्रोटेस्टेंड मत का जन्म हुआ तथा फ्रांस की क्रांति के कारण और उसके परिणामस्वरूप जनता के घोष समानता और स्वतंत्रता और बंधुत्व हुए। साथ ही राष्ट्रीयता के बढ़ते हुए ईसाई मत में अनेक चर्चों की स्थापना ईसाई मत के

सामान्य जीवन पर घटते हुए प्रभाव ने पवित्र रोमन साम्राज्य को विघटित करके, ऐसे राज्य की कल्पना को जन्म दिया जिसमें सभी मतों के माननेवाले नागरिकता के समान अधिकारों का उपयोग कर सकें तथा राज्य जनता के मत में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप न करें। लोगों की दृष्टि अधिकाधिक भौतिकवादी होने के कारण लोगों की दृष्टि में राज्य का महत्व केवल लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र रह गया है तथा आत्मा संबंधी सभी प्रश्नों की व्यक्तिगत इच्छा-अनिच्छा पर छोड़ देना उचित समझा।

लौकिक और पारलौकिक

यूरोप में सेक्यूलर स्टेट की कल्पना के विकास का संक्षिप्त विवरण ऊपर दिया है। स्प्रिचुअल और टेंपोरल (सेक्यूलर) दो भिन्न-भिन्न क्षेत्र करके राज्य की ओर केवल सेक्यूलर आवश्यकताओं की पूर्ति का भार देकर भी यूरोप का कोई राज्य मत विशेष के पक्षपात की नीति से मुक्त नहीं हो पाया है। इंग्लैंड का राजा अभी भी (धर्मरक्षक) कहा जाता है तथा उसके लिए आवश्यक है कि वह मानने वाला प्रोटेस्टेंट ही हो, राज्य की ओर से गिरजे और पादरियों को वेतन और सहायता भी मिलती है। अमेरिका में भी प्रेसीडेंट के लिए शपथ लेते समय विशिष्ट धार्मिक विधि को पूरा करना आवश्यक है।

भारतवर्ष में वास्तविक रूप से तो राज्य की कल्पना के अंतर्गत लौकिक राज्य की ही कल्पना है। हमारे यहाँ धर्मगुरु को कभी राजा का स्थान नहीं मिला है। राजा स्वयं किसी भी मत का मानने वाला क्यों न हो, सदा सभी मतावलंबियों के प्रति न्याय और समानता का व्यवहार करता था। हाँ आज के सेक्यूलरिज्म की कल्पना के अनुसार पक्षपात रहित रहने का अर्थ किसी की मदद न करना नहीं था अपितु सबकी मदद करना था। अतः राज्य सब मतावलंबियों की समान रूप से सहायता करता था। इस सहायता के पीछे यह भाव निहित था कि प्रथम तो बिना पारलौकिक उन्नति के लौकिक उन्नति व्यर्थ है तथा दूसरे राजा का कर्तव्य है कि प्रजा की सब प्रकार की उन्नति का प्रबंध करे। और पारलौकिक क्षेत्र में यह प्रबंध सब मतों को समान सहायता देते हुए उनके आपसी संबंधों को सद्भावनापूर्ण बनाते हुए ही होता था। अतः किसी मत का राज्य न कायम करते हुए भी ''यतो अयुदयनि श्रेयस प्राप्ति स धर्मः'' की व्याख्या के अनुसार धर्म का विकास करते हुए धर्मराज्य की अवश्य ही स्थापना की जाती थी।

धर्म जीवन है

आज भारतवर्ष के नेतागण यद्यपि पश्चिमी आदर्शों को अपनाकर भावी भारत की रचना करना चाहते हैं और उसके अनुसार पश्चिम के अर्थ में सेक्यूलर स्टेट का अर्थ लौकिक राज्य ही लगाया जा सकता है, किंतु भारतीय जनता धर्मराज्य या रामराज्य की भूखी है और वह केवल लौकिक उन्नति में ही संतोष नहीं कर सकती। भारतीयता की स्थापना भी केवल एकांगी उन्नति से नहीं हो सकती क्योंकि हमने लौकिक और पारलौकिक उन्नति को एक दूसरे का पूरक ही नहीं तो एक दूसरे से अभिन्न माना है। किंतु पारलौकिक उन्नति के क्षेत्र में राज्य की ओर से किसी एक मत की कल्पना अनुचित होगी, अतः ऐसा वातावरण उत्पन्न करना होगा जिसमें सभी मत बढ़ सकें तथा एक सद्विप्राः बहुधा वदन्ति के सिद्धांत का पालन कर सकें। फलतः हमारे राज्य के लिए लौकिक राज्य सेक्यूलर स्टेट को ठीक पर्याय होने पर भी मौजूद नहीं होगा।

धर्म शब्द की उपर्युक्त परिभाषा एवं ''धारणध्दर्ममित्याहुः धर्मोधारयते प्रजा'' आदि परिभाषाओं के अनुसार यह शब्द अंग्रेजों के रिलीजन का पर्यायवाची न होकर उससे भिन्न है तथा व्यापक अर्थवाला है। हमारे यहाँ बिना धर्म के तो किसी के भाव की, उसके अस्तित्व की ही कल्पना कठिन है। फलतः हम समझते हैं कि हमारा राज्य धर्म को तिलांजलि नहीं दे सकता; अतः अधार्मिक, धर्मनिरपेक्ष, धर्मरहित, धर्महीन, धर्म विरत आदि सभी शब्द न तो हमारे राज्य के आदर्श को ही प्रकट करते हैं और न सेक्यूलर स्टेट ठीक पर्याय हो ही सकते हैं।

मत और धर्म के भेद

अंग्रेजों के रिलीजन शब्द का पर्यायवाची शब्द यहाँ मत है तथा एक मत के माननेवाले को संप्रदाय कहा जाता है, जैसे शैव संप्रदाय, वैष्णव संप्रदाय, खिस्ती संप्रदाय आदि। निश्चित ही पहले और आज भी राज्य इनमें से किसी एक संप्रदाय का नहीं हो सकता।

राज्य की दृष्टि से तो सबके लिए ही समान होनी चाहिए। फलतः हम कह सकते हैं कि राज्य को सांप्रदायिक न होकर असांप्रदायिक होना चाहिए। यही राज्य का सही आदर्श है। ऐसा राज्य किसी संप्रदाय विशेष के प्रति पक्षपात या किसी के प्रति घृणा का व्यवहार न करते हुए भी जीवन की लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हुए धर्मराज्य हो सकता है।

असांप्रदायिक कहें

असांप्रदायिक शब्द से राज्य के ठीक-ठीक आदर्श का ही बात नहीं होता अपितु सेक्यूलर के शाब्दिक नहीं तो पाश्चात्य व्यवहारिक अर्थ के भी यह बहुत निकट है। रूस को छोड़कर किसी राज्य ने कभी रिलीजन (मत) को समाप्त नहीं किया और आज तो रूस में भी पूजा स्वातंत्र्य को मान लिया है यद्यपि राज्य की ओर से किसी को कोई सुविधा नहीं मिलेगी। शेष सभी राज्यों में सभी संप्रदायों को अपने मत के द्वारा आत्मिक, शारीरिक स्वतंत्रता है तथा इंग्लैंड के राजा को छोड़कर शेष कहीं किसी संप्रदाय विशेष के प्रति पक्षपात नहीं है। अतः उन राज्यों को भी पवित्र रोमन साम्राज्य के विरोध में चाहे लौकिक समझा जाए, किंतु असांप्रदायिक कहना ही अधिक युक्ति संगत होगा।

असांप्रदायिक शब्द के द्वारा हमारे नेताओं का अर्थ भी अधिक स्पष्ट होता है क्योंकि आज सेक्यूलर शब्द का प्रयोग केवल पाकिस्तान से, जिसने अपने आपको इस्लामी राज्य घोषित किया है भिन्नता दिखाना ही है। भारत इस्लामी राज्य के समान किसी एक संप्रदाय का राज्य नहीं है यही हमारे नेता प्रकट करना चाहते हैं और इसके लिए उन्होंने सेक्यूलर शब्द को चुना है।

आज यद्यपि सांप्रदायिक और राष्ट्रीय शब्दों का ठीक-ठीक ज्ञान न होने के कारण सेक्यूलर शब्द का नाम लेकर रेडियो से गीता और रामायण आदि का पाठ बंद करना आदि अनेक कार्य कर दिए जाते हैं। फिर भी भारतीय राज्य का आदर्श घोषित करते समय हमारे नेताओं के मस्तिष्क में जो प्रधान धारणा रही वह असांप्रदायिक शब्द से ही अधिक व्यक्त होती है। उपर्युक्त सभी कारणों में से असांप्रदायिक शब्द ही सेक्यूलर का निकटतम भाषांतर है और उसी का प्रयोग किया जाना चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने बालाघाट से वीरांगना रानी दुर्गावती गौरव यात्रा का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने जबलपुर में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के राज्य स्तरीय राशि अंतरण समारोह का शुभारंभ किया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी, मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने पद्मश्री सुश्री भूरी बाई से सौजन्य भेंट की।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जबलपुर में योग करने के लिए उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने लोकतंत्र सेनानियों के सम्मेलन का दीप जला कर कर शुभारंभ किया।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने खजुराहो में मतंगेश्वर महादेव जी का पूजन-अर्चन किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने कटनी में श्री हरिहर तीर्थ क्षेत्र भूमि-पूजन समारोह का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया।

श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने त्रिदेव, पंच परमेश्वर सम्मेलन, सयुंक्त मोर्चा सम्मेलन और लाभार्थी सम्मेलन को सम्बोधित किया।

27 जून 202

भारतीय जनता पार्टी के यशस्वी राष्ट्रीय अध्यक्ष
माननीय श्री जगत प्रकाश नड्डा जी का
हार्दिक स्वागत
वंदन!